सामाजिक विज्ञान

गाइड

कक्षा
9

1

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

फ्रांसीसी क्रान्ति

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तृतीय एस्टेट की नेशनल असेम्बली के गठन में मिराब्यो एवं आबे सिए का क्या योगदान रहा?

उत्तर तृतीय एस्टेट के प्रतिनिधि स्वयं को सम्पूर्ण फ्रांसीसी राष्ट्र का प्रवक्ता मानते थे। तृतीय एस्टेट के प्रतिनिधि 20 जून को वर्साय के इनडोर टेनिस कोर्ट में एकत्रित हुए, जहाँ पर इन्होंने स्वयं को नेशनल असेम्बली घोषित किया। इन्होंने यह प्रतिज्ञा ली कि ''जब तक सम्राट की शक्ति को कम करने वाला संविधान तैयार नहीं हो जाएगा, तब तक असेम्बली भंग नहीं होगी।''

मिराब्यो एवं आबे सिए द्वारा तृतीय एस्टेट का प्रतिनिधित्व किया गया। हालाँकि मिराब्यो का जन्म कुलीन परिवार में हुआ था, लेकिन वह सामन्ती विशेषाधिकारों वाले समाज का उन्मूलन चाहता था। आबे सिए मूलरूप से पादरी था, उसने तीसरा एस्टेट क्या है? नामक एक प्रभावशाली प्रचार-पुस्तिका लिखी थी।

2. ''प्रारम्भिक वर्षों में क्रान्तिकारी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सुधार लाने वाले कानून लागू किए।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रारम्भिक वर्षों में क्रान्तिकारी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सुधार लाने वाले कानून लागू किए, जिससे

(i) इन्हें सरकारी स्कूलों में शिक्षा का अधिकार प्राप्त हो गया, जो अनिवार्य शिक्षा के रूप में था।

(ii) महिलाएँ अब अपने अनुसार विवाह कर सकती थीं। इनके पिता द्वारा इन्हें विवाह के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता था।

(iii) शादी का स्वैच्छिक अनुबन्ध के स्तर पर पंजीकरण कराना अनिवार्य हो गया।

(iv) तलाक को कानूनी मान्यता मिल गई तथा इसके लिए पुरुष एवं महिला दोनों आवेदन कर सकते थे।

(v) महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाने लगा, जिससे वे कलाकार बन सकती थीं तथा स्वयं का उद्यम स्थापित कर सकती थीं।

3. फ्रांस की क्रान्ति में स्त्रियों का क्या योगदान था?

उत्तर इस प्रश्न के उत्तर के लिए पृष्ठ सं. 6 शीर्षक 'फ्रांसीसी क्रान्ति में महिलाओं की भूमिका' का अध्ययन करें।

4. नए संविधान के अन्तर्गत कानून बनाने का अधिकार किसे प्राप्त था? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर नए संविधान के अन्तर्गत कानून बनाने का अधिकार नेशनल असेम्बली को प्राप्त था। नेशनल असेम्बली अप्रत्यक्ष रूप से चुनी जाती थी। नागरिकों द्वारा एक निर्वाचक समूह का चुनाव किया जाता था, जो पुन: असेम्बली के सदस्यों को चुनता था। राष्ट्रीय सभा द्वारा कुछ निर्मित कानून निम्न प्रकार थे—

(i) सभी नागरिकों को मत देने का अधिकार नहीं था। 25 वर्ष से अधिक उम्र वाले पुरुष, जो तीन दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे, इन्हें सक्रिय नागरिक अर्थात् मत देने का अधिकार दिया गया। शेष पुरुषों और महिलाओं को निष्क्रिय नागरिक कहा गया।

(ii) निर्वाचक की योग्यता प्राप्त करने तथा असेम्बली का सदस्य होने के लिए लोगों का करदाताओं की उच्चतम श्रेणी में होना आवश्यक था।

5. फ्रांस में नवनिर्मित संविधान के किन्हीं तीन दोषों की चर्चा कीजिए।

उत्तर फ्रांस में नवनिर्मित संविधान के तीन दोष निम्न हैं—

(i) कार्यपालिका एवं परिषदों के बीच सम्बन्ध ठीक नहीं चल रहे थे। प्राय: कार्यपालिका एवं विधायिका के बीच अक्सर झगड़े होने लगते थे, जिससे उन्हें बर्खास्त करना पड़ता था।

(ii) सरकार के इन दो अंगों के बीच के झगड़ों से कार्यपालिका के कार्य में प्राय: राजनीतिक असन्तुलन पैदा हो जाता था। इससे सैनिक तानाशाह का उदय हुआ और नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस का शासक बन गया।

(iii) इसमें सम्पत्तिहीन वर्ग को मताधिकार से वंचित कर दिया गया।

6. 'जैकोबिन' कौन थे? उनसे सम्बन्धित मुख्य बातों को बताइए।

उत्तर 'जैकोबिन' फ्रांसीसी समाज का सबसे मशहूर क्लब था। इसका नाम पेरिस के भूतपूर्व कॉन्वेण्ट ऑफ सेण्ट जेकब के नाम पर पड़ा। जैकोबिन क्लब मूलत: फ्रांस के कमजोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था, जिसमें छोटे दुकानदार और कारीगर; जैसे—जूता बनाने वाले, पेस्ट्री बनाने वाले, घड़ीसाज, छपाई करने वाले तथा नौकर शामिल थे। इनका नेतृत्वकर्ता मैक्स मिलियन रोबेस्प्येर था। जैकोबिनों द्वारा गोदी कारीगरों की तरह लम्बी धारीदार पतलून पहनने का निर्णय लिया गया। ऐसा उन्होंने समाज में स्वयं को कुलीन वर्गों द्वारा घुटनों तक पहने जाने वाले ब्रीचेस से अलग दिखाने के लिए किया था।

7. जैकोबिन सरकार के पतन के बाद फ्रांस में हुए किन्हीं चार परिवर्तनों को बताइए।

उत्तर जैकोबिन सरकार के पतन के बाद फ्रांस में हुए चार परिवर्तन हुए, जो निम्नलिखित हैं—

(i) जैकोबिन सरकार के पतन के पश्चात् वहाँ की सत्ता मध्यवर्ग के सम्पन्न लोगों के पास आ गई।

(ii) नए संविधान के अनुसार, गरीब लोगों को मताधिकार से वंचित कर दिया गया।

(iii) नए संविधान में दो निर्वाचित विधानपरिषदों की व्यवस्था थी, जिसमें पाँच सदस्यों वाली एक कार्यपालिका को नियुक्त किया गया था, जिसे डायरेक्टरी के नाम से जाना जाता था। इस नियम के

अनुसार, जैकोबिन के शासनकाल वाली एक व्यक्ति केन्द्रीय कार्यपालिका को खत्म कर दिया गया, परन्तु डायरेक्टरों का विधानपरिषदों से मतभेद चलता रहा। ऐसे मौकों पर परिषद् उन्हें पद से हटाने की पूर्णरूप से चेष्टा करती थी।

(iv) डायरेक्टरी की राजनीतिक अस्थिरता के कारण ही सैनिक तानाशाह नेपोलियन बोनापार्ट का उदय हो पाया।

8. रोबेस्प्येर कौन था? उसके राज्य को 'आतंक का राज्य' क्यों कहा जाता था?

उत्तर रोबेस्प्येर फ्रांस का एक क्रूर राजा था। उसका शासनकाल 1793 से 1794 ई. के मध्य था। उसके राज्य को 'आतंक का राज्य' निम्न कारणों से कहा जाता था

(i) वह गणतन्त्र को शत्रु के रूप में मानता था। उसके फैसले का पार्टी में जो सदस्य विरोध करता था, उस सदस्य को जेल में डाल दिया जाता था तथा उस पर न्यायालय में मुकदमा भी चलाया जाता था। यदि दोष सिद्ध हो गया, तो उसे गिलोटिन पर चढ़ाकर उसका सिर काट दिया जाता था।

(ii) राजा ने अपनी नीतियों को काफी कठोरतापूर्वक लागू किया था, जिससे आम जनता और उसके समर्थक भी भय से काँप उठें।

इन सभी कारणों से रोबेस्प्येर के राज्य को 'आतंक का राज्य' कहा जाता था।

9. रोबेस्प्येर सरकार ने समता स्थापित करने के लिए कौन-कौन-से नए नियम बनाए?

उत्तर रोबेस्प्येर सरकार के नए नियम निम्नलिखित हैं—

(i) रोबेस्प्येर सरकार ने कानून बनाकर मजदूरी एवं कीमतों की अधिकतम सीमा तय कर दी।

(ii) किसानों को अपना अनाज शहरों में ले जाकर सरकार द्वारा तय कीमत पर बेचने के लिए बाध्य किया गया।

(iii) महँगे सफेद आटे के प्रयोग पर रोक लगा दी गई। सभी नागरिकों के लिए साबुत गेहूँ से बनी और बराबरी का प्रतीक मानी जाने वाली 'समता रोटी' खाना अनिवार्य कर दिया गया।

(iv) चर्चों को बन्द कर दिया गया और उनके भवनों को बैरक या दफ्तर बना दिया गया।

10. क्रान्ति से पूर्व फ्रांस में महिलाओं की क्या स्थिति थी?

उत्तर फ्रांसीसी क्रान्ति में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। इनकी सक्रिय भागीदारी के कारण ही फ्रांसीसी समाज में महत्त्वपूर्ण बदलाव आ सके। अधिकांश महिलाएँ तृतीय एस्टेट से सम्बन्धित थीं। ये सिलाई-बुनाई, कपड़ों की धुलाई, बाजारों में फल-फूल एवं सब्जियाँ बेचती थीं तथा साथ ही सम्पन्न घरों में काम किया करती थीं। इनमें अधिकतर महिलाएँ अशिक्षित थीं। सिर्फ कुलीनों तथा धनी व्यक्तियों की बेटियाँ ही 'कॉन्वेण्ट' में पढ़ाई कर सकती थीं। इनकी मजदूरी भी पुरुषों की तुलना में कम होती थी।

1791 ई. के संविधान ने फ्रांसीसी महिलाओं को निराश किया था, जिसका मुख्य कारण इन्हें मताधिकार से वंचित रखा जाना था। महिलाओं द्वारा मत देने का अधिकार, असेम्बली में इन्हें चुने जाने तथा इनके द्वारा राजनीतिक पदों की माँग की जाने लगी, जिससे ये अपने मत एवं माँग रख सकें।

11. फ्रांस के पुराने शासनकाल में आजीविका संकट के लिए कौन-से कारक उत्तरदायी थे?

उत्तर फ्रांस के पुराने शासनकाल में आजीविका संकट के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी थे—

(i) 1745 से 1789 ई. के बीच फ्रांस की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई, जिससे खाद्यान्नों की माँग में वृद्धि हुई।

(ii) खाद्यान्नों का उत्पादन स्थिर रहना तथा सरकार द्वारा खाद्यान्न उत्पादन के लिए कृषकों को प्रोत्साहित न करना।

(iii) कर का बोझ केवल कृषकों पर होना, जिससे कृषकों तथा मजदूरों की आमदनी में कमी आई।

(iv) कामगारों की मजदूरी निश्चित होने के कारण वे बढ़ी कीमतों पर खाद्यान्न खरीदने में असमर्थ रहे।

अत: उपरोक्त कारणों के फलस्वरूप फ्रांस के पुराने शासनकाल में आजीविका संकट उत्पन्न हुआ।

12. 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में फ्रांसीसी समाज को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1774 ई. में बूर्बो राजवंश के लुई XVI ने 20 वर्ष की उम्र में फ्रांस के राजा के रूप में शासन सँभाला। लुई XVI की शादी ऑस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी एन्तोएनेत से हुई। लम्बे समय तक चले युद्ध के कारण फ्रांस के वित्तीय संसाधन नष्ट हो चुके थे, जिसके परिणामस्वरूप राजकोष खाली हो गया।

लुई XVI के काल में फ्रांस ने अमेरिका को उसके 13 उपनिवेशों को ब्रिटेन से मुक्त कराने में सहयोग दिया। इस युद्ध के कारण फ्रांस पर 10 अरब लिब्रे से भी अधिक का ऋण हो गया, जबकि उस पर पहले से ही 2 अरब लिब्रे का ऋण था। सरकार से ऋण देने वाले 10% ब्याज की माँग करने लगे। फ्रांस की सरकार द्वारा यह दुर्लभ होता जा रहा था कि वह सैन्य खर्च, सरकारी कार्यालय तथा विश्वविद्यालयों का खर्च वहन कर सके, जिसके कारण फ्रांसीसी सरकार करों में वृद्धि के लिए बाध्य हुई। 18वीं सदी में फ्रांसीसी समाज तीन एस्टेट में विभाजित था।

13. फ्रांसीसी समाज को कितने एस्टेट में वर्गीकृत किया गया?

उत्तर 18वीं सदी में फ्रांसीसी समाज तीन एस्टेट में विभाजित था—

(i) प्रथम एस्टेट—यह वर्ग चर्च के विशेष कार्यों को करने वाले व्यक्तियों का समूह था। इस वर्ग के लोगों को जन्म से कुछ अधिकार प्राप्त थे; जैसे—राज्य को देने वाले करों में इन्हें छूट प्राप्त थी। हालाँकि चर्च किसानों से टाइद नामक धार्मिक कर वसूलता था। यह कर कृषि उपज के दसवें हिस्से के बराबर होता था।

(ii) द्वितीय एस्टेट—इस वर्ग में धनी और कुलीन व्यक्ति शामिल थे। राज्य को दिए जाने वाले करों से इन्हें छूट प्राप्त थी। इस वर्ग के सदस्यों को भी कुछ सामन्ती विशेषाधिकार प्राप्त थे; जैसे—सामन्ती कर, जो ये किसानों से वसूल करते थे।

(iii) **तृतीय एस्टेट**—जनसंख्या के शेष बचे सभी लोग तृतीय एस्टेट से सम्बन्धित थे; जैसे—बड़े व्यवसायी, व्यापारी, अदालती कर्मचारी, वकील आदि। इस वर्ग से सम्बन्धित लोगों के विशेषाधिकार सीमित थे तथा इन्हें राज्य को सीधे कर देना पड़ता था। तृतीय एस्टेट के सभी सदस्यों को टाइद नामक धार्मिक कर चुकाना पड़ता था।

14. मध्यम वर्ग के उदय के रूप में किसे जाना जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 18वीं सदी में नए सामाजिक वर्ग का उदय हुआ, जिसे मध्यम वर्ग के रूप में जाना जाता था। इस वर्ग ने समुद्रपारीय व्यापार से रेशमी तथा ऊनी वस्त्रों के उत्पादन के कारण सम्पत्ति अर्जित की थी। तीसरे एस्टेट में इन सौदागरों एवं निर्माताओं के अतिरिक्त प्रशासनिक सेवा व वकील जैसे व्यक्ति भी शामिल थे। यह वर्ग पढ़ा-लिखा होने के कारण जन्म से विशेषाधिकार को न मानकर योग्यता को व्यक्ति के सामाजिक पद का आधार मानता था। जॉन लॉक, ज्याँ जाक रूसो और मॉण्टेस्क्यू जैसे दार्शनिकों ने स्वतन्त्रता, समान नियमों तथा समान अवसरों पर आधारित समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की थी।

15. ''प्रत्येक क्रान्ति कुछ दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित होती है।'' इस कथन की पुष्टि में दो क्रान्तियों और उनसे सम्बन्धित दार्शनिकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर दो प्रसिद्ध क्रान्तियाँ तथा उनसे सम्बन्धित दार्शनिकों का विवरण निम्न प्रकार है—

(i) **अमेरिका की क्रान्ति**—ब्रिटेन के सम्राट 'जॉर्ज द्वितीय' तथा ब्रिटिश सरकार की उपेक्षापूर्ण नीतियों के फलस्वरूप अमेरिकियों ने जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में फ्रांस एवं स्पेन की सहायता से अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया तथा अमेरिका को स्वतन्त्र घोषित कर संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना की।

दार्शनिकों का योगदान—इस काल में अमेरिकी लोगों पर जॉन लॉक, टॉमस पेन, जैफरसन तथा मिल्टन आदि के विचारों का प्रभाव पड़ा। इनके विचारों से इनमें राजनीतिक चेतना का विकास हुआ, जिसने क्रान्ति हेतु विचारों का आधार प्रदान किया। इन दार्शनिकों के प्रभावस्वरूप ही अमेरिका स्वतन्त्र होने के पश्चात् गणराज्य बना। यहाँ संघीय संविधान अपनाया गया तथा नागरिकों को स्वतन्त्रता और समानता जैसे मूल अधिकार दिए गए, जो विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत बने।

(ii) **फ्रांस की क्रान्ति**—1789 ई. में फ्रांस की क्रान्ति हुई और इस क्रान्ति के फलस्वरूप फ्रांस में निरंकुश शासन का अन्त हो गया।

दार्शनिकों का योगदान फ्रांस के लोग रूसो, मॉण्टेस्क्यू तथा वॉल्टेयर जैसे महान् दार्शनिकों और क्वेसेन जैसे लेखकों से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता की माँग करने लगे। इन दार्शनिकों के क्रान्तिकारी विचारों से जनता के मन में निरंकुश शासन को उखाड़ फेंकने की भावना प्रबल हो उठी।

16. फ्रांसीसी क्रान्ति के फ्रांस तथा विश्व पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों को दर्शाइए।

उत्तर इस प्रश्न के उत्तर के लिए पृष्ठ सं. 4-5 शीर्षक 'फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रभाव/परिणाम' का अध्ययन करें।

17. फ्रांस की राज्य क्रान्ति से सम्बन्धित टेनिस की कोर्ट सभा तथा बास्तील जेल तोड़ने की घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर फ्रांस की राज्य क्रान्ति में टेनिस कोर्ट की सभा तथा बास्तील जेल तोड़ने वाली घटना का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

टेनिस कोर्ट की सभा—6 मई, 1789 को फ्रांस में तीनों वर्गों (जनसाधारण, मध्यम वर्ग, कुलीन वर्ग) की सभाओं का आयोजन पृथक्-पृथक् भवनों में किया गया। जनसाधारण की सभा का व्यापक असर हुआ। सामन्तों, कुलीनों व पादरियों के दबाव में आकर फ्रांस के तत्कालीन राजा लुई XVI ने सभा भवन को बन्द करा दिया तथा सभा को स्थगित करने का आदेश जारी कर दिया।

इस आदेश के विरोध में जनसाधारण वर्ग (तृतीय वर्ग) के सभी सदस्य भवन के निकट स्थित टेनिस कोर्ट के मैदान पर चले गए। 20 जून, 1789 को मिराब्यो ने इसकी अध्यक्षता करते हुए यह संकल्प लिया कि ''हम यहाँ से उस समय तक नहीं हटेंगे, जब तक हम देश के लिए संविधान का निर्माण नहीं कर लेंगे, भले ही हमारे विरुद्ध संगीनों से ही क्यों न काम लिया जाए।'' इस घटना को फ्रांस के इतिहास में 'टेनिस कोर्ट की शपथ' के रूप में जाना जाता है।

बास्तील जेल का तोड़ा जाना—बास्तील जेल फ्रांस में स्थित थी। इसका फ्रांस की राज्य क्रान्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान है। फ्रांस के क्रान्तिकारियों ने 14 जुलाई, 1789 को बास्तील जेल पर हमला कर दिया था तथा दुर्गरक्षक देलोने की हत्या करने के बाद बास्तील जेल में बन्द कैदियों को रिहा करा दिया था। यह घटना फ्रांस में निरंकुश शासन के पतन की पहली घटना थी, क्योंकि उस समय बास्तील का दुर्ग राजाओं की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता का प्रतीक माना जाता था।

18. महिलाओं के जीवन में सुधार हेतु डायरेक्टरी शासित फ्रांस में उठाए गए कदमों की चर्चा कीजिए। इन प्रयासों में कौन-सा मानवीय गुण समाहित था?

उत्तर डायरेक्टरी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सुधार हेतु उल्लेखनीय कार्य किए, जिसमें लड़कियों के लिए अनिवार्य स्कूली शिक्षा को जरूरी बना दिया गया। इसके साथ ही शासकीय स्कूलों की स्थापना भी की गई। अब इनकी शादी पिता के द्वारा मजबूर करके नहीं की जा सकती थी। शादी को स्वैच्छिक अनुबन्ध कानून माना गया तथा नागरिक कानूनों के तहत इसका पंजीकरण अनिवार्य माना गया।

तलाक को वैधानिक रूप प्रदान किया तथा स्त्री-पुरुष दोनों को ही इसकी अर्जी देने का अधिकार दिया गया। अब महिलाएँ व्यावसायिक शिक्षा लेकर कलाकार बन सकती थीं। इन प्रयासों से फ्रांस की सरकार नि:सन्देह औरतों के जीवन में सुधार लाना चाहती थी, जिससें महिलाओं को मिले इन अधिकारों द्वारा इनके विकास के मार्ग खोल दिए गए।

19. 1791 ई. के संविधान के अन्तर्गत फ्रांस में किस प्रकार राजनीतिक कार्य किए गए?

उत्तर 1791 ई. के संविधान ने कानून बनाने का अधिकार नेशनल असेम्बली को सौंपा। यह अप्रत्यक्ष रूप से चुनी जाती थी। सर्वप्रथम नागरिक एक

निर्वाचक समूह का चुनाव करते थे, जो पुन: असेम्बली के सदस्यों को चुनता था।

केवल 25 वर्ष से अधिक उम्र वाले व्यक्ति ही मतदान करते थे। ये समाज के सक्रिय नागरिक थे तथा मत देने का अधिकार इन्हें इस आधार पर मिला था कि ये तीन दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे।

इसके अतिरिक्त शेष पुरुष एवं महिला निष्क्रिय नागरिक के तौर पर थे। निर्वाचक समूह का सदस्य तथा असेम्बली का सदस्य वही बन सकता था, जो करदाताओं में उच्चतम श्रेणी का था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर फ्रांस की क्रान्ति आधुनिक यूरोप की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी, जिसकी शुरुआत 1789 ई. में हुई। फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए निम्न परिस्थितियाँ उत्तरदायी थीं—

(i) राजनीतिक परिस्थितियाँ—फ्रांस का राजा स्वार्थी था। वह राजा के दैवीय अधिकारों में पूर्ण विश्वास करता था। सम्राट लुई XVI का कथन था कि ''मैं ही राज्य हूँ।'' दरबारी और सामन्तों को कर से पूर्णत: मुक्त कर दिया गया था। राज्य में सैन्य और अन्य महत्त्वपूर्ण पद पैतृक थे। चारों तरफ भ्रष्टाचार फैला हुआ था। शासन में जनता की आवाज सुनने वाला कोई नहीं था।

(ii) सामाजिक परिस्थितियाँ—सामाजिक रूप से भी काफ़ी विभिन्नता थी। वहाँ के नागरिकों को तीन वर्गों (एस्टेट) में बाँटा गया था—पहला वर्ग 'उच्च', दूसरा वर्ग 'मध्यम' और तीसरा वर्ग 'निम्न' था। उच्च वर्ग में अधिकारी, सामन्त व पादरी आते थे। इन लोगों की स्थिति काफ़ी अच्छी थी। इन पर कोई कर नहीं लगाया गया था। दूसरे वर्ग में कुलीन वर्ग के लोग शामिल थे, जिनकी स्थिति भी करीब-करीब ठीक थी। तीसरे वर्ग में वकील, डॉक्टर और शिक्षक लोग थे। इसी वर्ग में आम जनता को भी रखा गया था। इन्हें राजा को कर देने के साथ-साथ पादरी को भी कर देना पड़ता था। इनकी स्थिति अच्छी नहीं थी।

(iii) आर्थिक परिस्थितियाँ—फ्रांस की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। करों का विभाजन काफ़ी असन्तोषजनक था। उच्च वर्ग के लोग करों से बिल्कुल मुक्त थे। सम्पूर्ण बोझ जनसाधारण पर था। औद्योगिक क्रान्ति होने के कारण श्रमिक बेकार हो गए थे। बेकारी के कारण काफी असन्तोष था। धीरे-धीरे फ्रांस ऋण के बोझ से दबने लगा। पूँजी के अभाव में व्यापार खत्म होने लगा।

(iv) दार्शनिकों का योगदान—फ्रांस की क्रान्ति में दार्शनिकों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने आम जनता को समझाने का अधिक प्रयास किया। जनता के बीच जाकर राजतन्त्र के बारे में बताया कि ''दु:ख का सबसे बड़ा कारण राजतन्त्र ही है।'' रूसो ने तो अपनी किताब में राजा के दैवीय अधिकारों पर कठोर प्रहार किया है, ठीक उसी प्रकार वॉल्टेयर ने अपनी किताब में चर्च पर निशाना साधा है।

अत: उपरोक्त दी गई परिस्थितियाँ फ्रांस की क्रान्ति के लिए उत्तरदायी थीं।

2. फ्रांस की क्रान्ति पर किन-किन दार्शनिकों का प्रभाव था?

उत्तर फ्रांस की क्रान्ति पर निम्नलिखित दार्शनिकों का प्रभाव था—

(i) रूसो—रूसो फ्रांस के एक महान् दार्शनिक थे। इन्होंने फ्रांस में निरंकुशतावाद को समाप्त करने के लिए अपने क्रान्तिकारी विचारों द्वारा लोकतान्त्रिक शासन का मार्ग प्रशस्त किया। 'सोशल कॉण्ट्रैक्ट' इनकी प्रसिद्ध कृति है। इनका विचार था कि राजा को जन-भावनाओं के अनुकूल कार्य करना चाहिए। फ्रांस की क्रान्ति को प्रोत्साहित करने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

(ii) मॉण्टेस्क्यू—ये एक महान् विचारक एवं लेखक थे। ये गणतन्त्रीय लोकतन्त्र के समर्थक थे। ये राजा के दैवीय अधिकार के सिद्धान्तों के घोर आलोचक थे। इंग्लैण्ड की शासन पद्धति पर इनका गहरा प्रभाव था। ये फ्रांस में भी इंग्लैण्ड की तरह ही शासन व्यवस्था की उम्मीद करते थे। इन्होंने अपने सिद्धान्तों की व्याख्या अपनी पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज' में की।

(iii) वॉल्टेयर—ये एक प्रसिद्ध विचारक एवं लेखक थे। इनके विचारों से फ्रांस की क्रान्ति को प्रमुख बल मिला। ये निरंकुश शासन के स्थान पर जनकल्याणकारी शासन की स्थापना करना चाहते थे। इन्होंने चर्च की बुराइयों की तुलना 'बदनाम वस्तु' से की। इस प्रकार फ्रांस के लोग रूसो, मॉण्टेस्क्यू तथा वॉल्टेयर जैसे महान् दार्शनिकों एवं लेखकों के विचारों से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता की माँग करने लगे। इन प्रमुख विचारकों ने फ्रांस के निवासियों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक बुराइयों से अवगत कराया।

3. फ्रांस की क्रान्ति के राजनीतिक कारण क्या थे?

उत्तर फ्रांसीसी क्रान्ति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे—

(i) राजा का निरंकुश होना—फ्रांस का राजा स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश हो गया था। वहाँ के शासक ने राजा के दैवीय अधिकारों को प्रतिपादित किया तथा स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित कर दिया। इस कारण राजा जनता के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भूल गया तथा जनकल्याण के प्रति लापरवाही बरतने लगा।

(ii) राजा द्वारा अपव्यय किया जाना—इस समय राजा द्वारा नागरिकों पर अनेक नए-नए करों का अधिरोपण किया जाता था। जनता द्वारा प्राप्त इन करों को राजा के भोग-विलास पर खर्च किया जाता था।

(iii) प्रान्तों में असमानता—फ्रांस के विभिन्न प्रान्तों में अलग-अलग कानून प्रचलित थे। गरीब एवं अमीर वर्ग के लिए भी अलग-अलग कानून थे, जिसके कारण जनता को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

(iv) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव—राजा के दरबारियों के पास अधिकार पत्र होते थे, जिन पर राजा की मुहर लगी होती थी। वे जिन्हें कैद करना चाहते, उनके नाम अधिकार पत्र पर लिखे होते थे। इस व्यवस्था के कारण अनेक निर्दोष लोगों को जेल जाना पड़ता था।

(v) **सेना में असन्तोष**—साधारण सैनिकों की उन्नति के द्वार बन्द थे, जिसके कारण सेना में असन्तोष उत्पन्न हुआ, जो फ्रांस की राज्य क्रान्ति का एक कारण बना।

इस प्रकार उपरोक्त राजनीतिक परिस्थितियाँ फ्रांस की क्रान्ति का कारण बनीं।

4. दास प्रथा के अन्त पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर जैकोबिन सरकार द्वारा जो महान् सुधार हुए उनमें दासता का अन्त महत्त्वपूर्ण था। फ्रांसीसी उपनिवेशों में कैरीबियन; जैसे—मार्टिनिक, गॉडेलोप और सैन डोमिंगो आदि महत्त्वपूर्ण थे, जो तम्बाकू, नील, चीनी तथा कॉफी के महत्त्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता थे। फ्रांसीसियों को जहाँ श्रमिकों की आवश्यकता थी, वहीं यूरोपीय द्वारा दूर देशों में जाकर काम न करने की इच्छा ने दासों का व्यापार शुरू किया, जो यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका के मध्य शुरू हुआ। 17वीं शताब्दी में इसे ही त्रिकोणीय दास व्यापार के नाम से जाना जाता था।

फ्रांसीसी व्यापारी अपने पोतों को बोर्दे या नान्ते बन्दरगाह से अफ्रीका तट तक ले जाते, जहाँ से ये स्थानीय सरदारों से दास खरीदते थे। इन दासों को हथकड़ी लगाकर तीन महीने लम्बे अटलाटिण्क महासागर के पार कैरीबियाई देशों की समुद्री यात्रा पर भेज दिया जाता था। हालाँकि 18वीं सदी में दासता की कम ही आलोचना हुई है।

लम्बी बहस के बाद नेशनल असेम्बली द्वारा 1794 ई. में दासता को गैर-कानूनी घोषित किया गया तथा सभी दासों को फ्रांस एवं इसके समुद्रपारीय उपनिवेशों से मुक्त कर दिया गया। दस साल के उपरान्त नेपोलियन द्वारा पुन: बागान मालिकों को श्रमिकों की आपूर्ति शुरू की गई। ये दास अफ्रीकी नीग्रो के नाम से जाने जाते थे। अन्तत: 1848 ई. में फ्रांस के उपनिवेशों से दासों का उन्मूलन किया गया।

5. ''फ्रांसीसी समाज में 18वीं सदी में महिलाओं को कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था।'' क्या आप इससे सहमत हैं? वर्णन कीजिए।

उत्तर हाँ, फ्रांसीसी समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय थी तथा इन्हें कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। इसे निम्नांकित तथ्यों द्वारा समझा जा सकता है—

(i) तृतीय एस्टेट की अधिकतर महिलाएँ कमजोर घर से थीं तथा इन्हें जीविकोपार्जन के लिए काम करना पड़ता था।

(ii) ये कपड़े धोने एवं घरेलू नौकरों के रूप में काम करती थीं तथा ये बाजारों में फल-फूल एवं सब्जियाँ भी बेचती थीं।

(iii) इनमें से अधिकतर को प्रशिक्षण तथा शिक्षा एवं नौकरी प्राप्त नहीं थी। एक मजदूर के रूप में इन्हें पुरुषों की अपेक्षा कम मजदूरी मिलती थी।

(iv) इन्हें कम उम्र में माता-पिता द्वारा शादी करने के लिए बाध्य किया जाता था।

6. फ्रांसीसी क्रान्ति (1789) के कारणों और परिणामों की विवेचना कीजिए।

उत्तर फ्रांस की क्रान्ति विश्व के इतिहास में महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है। यह क्रान्ति 18वीं शताब्दी में हुई पूर्णत: खूनी एवं हिंसात्मक थी। इस क्रान्ति के समय फ्रांस में निरंकुश राजतन्त्र का शासन था। राजा स्वयं को दैवीय अधिकारों से युक्त मानता था। इस क्रान्ति के समय वहाँ का शासक लुई XVI था, जो कम आयु का तथा अनुभवहीन था, जिसके परिणामस्वरूप देश में सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। देश में आम नागरिक की स्थिति दयनीय हो गई थी।

धार्मिक अन्धविश्वास भी व्यापक स्तर पर फैला हुआ था। इन समस्त समस्याओं को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से फ्रांस में 1789 ई. की क्रान्ति का उदय हुआ, जिसने अनेक बुराइयों को समाप्त कर दिया था।

फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण

फ्रांस की क्रान्ति विभिन्न कारकों का सम्मिलित परिणाम थी। इन कारकों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, वैचारिक एवं तात्कालिक कारणों में बाँटा जा सकता है

सामाजिक कारण

फ्रांस की सामाजिक दशा अत्यन्त दयनीय थी और वहाँ का समाज प्रमुखत: निम्न प्रकार दु:खी था—

1. **साधारण वर्ग**—इस वर्ग में किसान, मजदूर, सामान्य शिक्षित वर्ग तथा सामान्य जनता आती थी। इस वर्ग के शिक्षित लोगों को भी शासन में भाग लेने का अधिकार नहीं था। यही कारण था कि क्रान्ति प्रारम्भ होते ही इस वर्ग का जोरदार समर्थन प्राप्त हुआ।
2. **सशक्त होता मध्यम वर्ग**—फ्रांसीसी मध्यम वर्ग में न केवल व्यापारी तथा उद्योगपति लोग शामिल थे, बल्कि वकील, डॉक्टर, इंजीनियर आदि जैसे शिक्षित लोग भी थे। आर्थिक रूप से सशक्त होने पर भी इनकी सामाजिक स्थिति अति निम्न थी। ये लोग कुलीनों को राजनीतिक तथा सामाजिक विकास में बाधक मानते थे। फ्रांस की क्रान्ति में इस वर्ग का महत्त्वपूर्ण योगदान था।
3. **किसान एवं कामगारों की दयनीय स्थिति**—फ्रांस की लगभग 80% जनता कृषि कार्यों में लगी थी, जबकि 75% भूमि जमींदारों के पास थी। किसानों को बँधुआ मजदूरों की तरह काम करना पड़ता था। विभिन्न करों के बोझ के नीचे दबे किसान एवं कामगार अपने परिवार का पेट भी नहीं भर पाते थे। इस कारण यह वर्ग नाराज था।

धार्मिक कारण

फ्रांस की क्रान्ति के प्रमुख धार्मिक कारण निम्नलिखित थे—

1. **धार्मिक स्वतन्त्रता की कमी**—फ्रांस की जनता को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान नहीं की गई थी। वहाँ की अधिकांश जनता कैथोलिक थी तथा प्रोटेस्टैण्ट व यहूदी भी पर्याप्त संख्या में थे, परन्तु उन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं थी। इन पर अनेक प्रतिबन्ध लगाए गए थे, जिससे यहूदी और प्रोटेस्टैण्ट दोनों ही पेरशान थे, उन्होंने क्रान्ति को भड़काने में मुख्य भूमिका निभाई।
2. **पादरियों में भ्रष्टाचार**—फ्रांस के उच्च वर्ग के लोगों में भ्रष्टाचार पूर्णरूप से व्याप्त था। इसमें विशप और आर्क विशप आते थे। इनकी संख्या लगभग 6,000 थी तथा वार्षिक आय

लगभग 10 करोड़ डॉलर थी। ये लोग अपनी आमदनी को विलासी जीवन पर व्यय किया करते थे। जनता पादरियों के इस दुराचरण से परेशान थी तथा उनसे छुटकारा पाना चाहती थी।

राजनीतिक कारण

फ्रांसीसी क्रान्ति को आरम्भ करने में निम्नलिखित राजनीतिक कारणों का प्रमुख योगदान रहा—

1. **दोषपूर्ण शासन व्यवस्था**—इस समय फ्रांस 40 प्रान्तों में बँटा हुआ था तथा सभी के अपने-अपने रीति-रिवाज थे। ऐसे प्रशासनिक दोषों के कारण ही देश की शासन व्यवस्था का सही रूप में चलना कठिन था तथा देश में न्याय व्यवस्था भी दोषपूर्ण थी। यहाँ लगभग 360 कानूनी संहिताएँ थीं। इन कारणों से भी फ्रांस की जनता में असन्तोष उत्पन्न हो रहा था।
2. **शासकों की तानाशाही शासन व्यवस्था**—फ्रांस के शासक राजा के दैवीय अधिकारों में विश्वास करते थे और स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते थे, यही कारण था कि वे जनता के प्रति अपना कोई कर्त्तव्य नहीं समझते थे। फ्रांस की क्रान्ति में लुई XVI की पत्नी **मेरी एन्तोएनेत** का बुरा प्रभाव भी सम्मिलित था। वह फ्रांस की राजनीतिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करती रहती थी। वह बुद्धिमान व साहसी स्त्री थी, परन्तु वह विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करती थी। फ्रांस की जनता उसे श्रीमती घाटा कहती थी।
3. **राजाओं द्वारा फिजूलखर्ची**—इस समय राजाओं के द्वारा नागरिकों पर अनेक नए-नए करों का अधिरोपण किया जाता था और प्राप्त करों को राजा अपने भोग-विलास पर खर्च करते थे। सम्राट, उसका परिवार तथा शाही वंश के लोग ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे।
4. **सेना में असन्तोष**—साधारण सैनिकों की उन्नति के द्वार बन्द थे, जिसके कारण सेना में असन्तोष उत्पन्न हुआ, जो फ्रांस की राज्य क्रान्ति का एक कारण बना।
5. **अमेरिका का स्वाधीनता संग्राम**—अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम में फ्रांस की जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस संग्राम में **लफायते** के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने भाग लिया था, जो फ्रांस के क्रान्तिकारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।
6. **व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव**—राजा के दरबारियों के पास अधिकार पत्र होते थे, जिन पर राजा की मोहर लगी होती थी। वे जिसे कैद करना चाहते थे, उनके नाम अधिकार पत्र पर लिखे होते थे। इस व्यवस्था के कारण अनेक निर्दोष लोगों को जेल जाना पड़ता था।
7. **उच्च वर्गों के लिए विशेष अधिकार** फ्रांस में उच्च वर्ग, कुलीन वर्ग तथा चर्च के पादरियों को विशेष अधिकार प्राप्त थे, जिसके कारण ये आम नागरिकों का शोषण करते थे।

वैचारिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

फ्रांस की राज्य क्रान्ति पर जिन दार्शनिकों के विचारों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

1. **मॉण्टेस्क्यू**—ये एक महान् विचारक एवं लेखक थे। ये गणतन्त्रीय लोकतन्त्र के समर्थक थे। ये राजा के दैवीय अधिकार के सिद्धान्तों के घोर आलोचक थे। इंग्लैण्ड की शासन पद्धति का इन पर गहरा प्रभाव था और ये फ्रांस में ऐसी ही शासन व्यवस्था की उम्मीद करते थे। **द स्पिरिट ऑफ द लॉज** नामक अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ में इन्होंने अपने सिद्धान्तों की विस्तृत व्याख्या की है।
2. **रूसो** (1712-78)—ये एक महान् दार्शनिक थे। इन्होंने फ्रांस में निरंकुशवाद को समाप्त करने के लिए अपने क्रान्तिकारी विचारों द्वारा लोकतान्त्रिक शासन का मार्ग प्रशस्त किया।
   इनकी प्रसिद्ध कृति **सोशल कॉण्ट्रेक्ट** है, जिसमें इन्होंने कहा है कि ''मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हुआ है, किन्तु प्रत्येक स्थान पर वह जंजीरों से जकड़ा हुआ है।'' इनका विचार था कि राजा को जन-भावनाओं के अनुरूप कार्य करना चाहिए। सामाजिक बन्धन तथा राजनीतिक दासता की कटु आलोचना करते हुए भी इन्होंने राज्य को नैतिकता के लिए अनिवार्य बताया। इस प्रकार रूसो के विचारों का फ्रांस की जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। अत: फ्रांस की क्रान्ति हेतु जनता को जाग्रत करने में रूसो का महत्त्वपूर्ण योगदान है।
3. **वॉल्टेयर**—ये एक प्रसिद्ध विचारक एवं लेखक थे। इनके विचारों से फ्रांस की क्रान्ति को प्रमुख बल मिला। ये जनकल्याणकारी निरंकुश शासन करना चाहते थे। इन्होंने चर्च की बुराइयों की **बदनाम वस्तु** से तुलना की। इन्होंने **लेटर्स ऑन द इंग्लिश** (Letters on the English) नामक पुस्तक लिखी, जिसे ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्धित कर दिया।
   इस प्रकार फ्रांस के लोग **रूसो, मॉण्टेस्क्यू** तथा **वॉल्टेयर** जैसे महान् दार्शनिकों और लेखकों के विचारों से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता की माँग करने लगे थे। इन प्रमुख विचारकों ने फ्रांस के निवासियों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बुराइयों से अवगत कराया। इस प्रकार फ्रांस में बौद्धिक जागृति का विस्तार हुआ और यहाँ के निवासी न्याय, स्वतन्त्रता और समानता के लिए प्रयत्नशील हो गए।

आर्थिक कारण

फ्रांस की क्रान्ति के प्रमुख आर्थिक कारण निम्नलिखित थे—

1. **अमेरिका को सहायता**—फ्रांस ने इंग्लैण्ड से बदला लेने के लिए अमेरिका को सैनिक तथा वित्तीय सहायता प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप फ्रांस की वित्तीय दशा और दयनीय हो गई।
2. **अन्यायपूर्ण कर प्रणाली**—राजाओं द्वारा अपने खर्चों की पूर्ति के लिए जनता और कृषकों पर मनमाने तरीके से कर लगाए जाते थे। फ्रांस के उच्च वर्ग तथा पादरियों पर कोई कर नहीं लगाया जाता था, लेकिन निम्न वर्ग करों के बोझ से दबा जा रहा था। करों की वसूली बड़ी निर्दयता से की जाती थी।
3. **1788 ई. में पड़ा अकाल**—इस अकाल ने लोगों की स्थिति और दयनीय बना दी। मार्च, 1789 में भूखे किसानों ने कुलीनों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा अनाज मण्डी और बेकरी की

दुकानें लूट लीं। इस विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी गई, किन्तु सैनिकों की सहानुभूति भी किसानों के साथ थी। इस अकाल के कारण सरकार को काफी नुकसान हुआ।

4. **बढ़ती महँगाई**—लोगों की दैनिक उपयोग की वस्तुओं अनाज, घरेलू सामान आदि में आई महँगाई ने पहले से निर्धन जनता को और अधिक कष्ट में डाल दिया। अनाज की बढ़ती कीमतों के विरोध में फ्रांस में अनेक विद्रोह हुए।

तात्कालिक कारण

1788 ई. में फ्रांस के अनेक भागों में भीषण अकाल पड़ा। इस अकाल से अनेक लोग भूखे मरने लगे थे। राजकोष की स्थिति बेहतर करने के लिए लुई XVI ने नए करों का प्रावधान किया, लेकिन **पार्लेमा** (पार्लियामेण्ट) ने मंजूरी नहीं दी। इसने सुझाव दिया कि करों को एताजेनेरो (एस्टेट्स जनरल) की सहमति से लागू किया जाए, लेकिन एताजेनेरो के अधिवेशन में तनाव उत्पन्न हो गया, जिसके कारण लुई XVI ने सेना एकत्र करने का आदेश दे दिया, जिसके परिणामस्वरूप पेरिस की जनता भड़क उठी और बास्तील के किले पर आक्रमण कर दिया।

फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रभाव/परिणाम

फ्रांसीसी क्रान्ति ने न केवल फ्रांस, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया।

फ्रांस पर प्रभाव

इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस में निम्नलिखित परिवर्तन हुए—

1. **बूर्बो वंश के निरंकुश शासन का अन्त**—1789 ई. की फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस में राजतन्त्र की समाप्ति हो गई। लुई XVI तथा मेरी एन्तोएनेत को 1793 ई. में फाँसी दे दी गई। इस प्रकार दो सदियों से चला आ रहा बूर्बो वंश का निरंकुश शासन समाप्त हो गया।
2. **नवीन संविधान का निर्माण**—फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद राष्ट्रीय सभा द्वारा फ्रांस का नया संविधान तैयार किया गया, जो यूरोप महाद्वीप में पहला लिखित संविधान था। इसमें देश के समस्त नागरिकों को मताधिकार प्रदान किया गया तथा राजा की शक्तियों में कमी की गई। यह संविधान स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व की भावना पर आधारित था।
3. **जनतन्त्र की स्थापना**—संविधान में फ्रांसीसी जनता के मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य निश्चित कर दिए गए। 27 जुलाई, 1789 को नागरिकों के 10 मौलिक अधिकारों की घोषणा की गई।
4. **स्वतन्त्र न्यायपालिका की स्थापना**—1789 ई. में क्रान्ति के पश्चात् फ्रांस की न्याय व्यवस्था का पुनर्गठन किया गया। अब न्यायपालिका को विधानपालिका तथा कार्यपालिका से स्वतन्त्र कर दिया गया।
5. **नवीन शासन पद्धति की स्थापना**—क्रान्ति के पश्चात् फ्रांस में नई शासन पद्धति की स्थापना हुई। सम्पूर्ण फ्रांस में समान कानून व्यवस्था लागू की गई। फ्रांस को 83 प्रान्तों में विभाजित किया गया। प्रत्येक प्रान्त को जिलों, कैण्टनों तथा कम्यूनों में बाँटा गया।
6. **लोक कल्याणकारी कार्यों को बढ़ावा**—क्रान्ति के पश्चात् लोकहित के कार्यों को बढ़ावा दिया गया। सड़क, पुल, बाँध तथा कृषि पर जोर दिया गया। नेपोलियन के उदय से देश में राष्ट्रीयता का विकास हुआ। फ्रांस समृद्ध तथा शक्तिशाली देश बन गया।
7. **कुलीन एवं सामन्ती वर्ग के विशेषाधिकारों में कमी**—फ्रांस की क्रान्ति के परिणामस्वरूप कुलीन एवं जमींदार वर्ग के विशेषाधिकारों में कमी कर दी गई तथा सामान्य लोगों को अनेक प्रकार के अधिकार दिए गए।

❑❑❑

2

यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रूस में गठित अन्तरिम सरकार की असफलता के क्या कारण थे? किन्हीं चार कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर रूस में गठित अन्तरिम सरकार की असफलता के कारण निम्न थे—

(i) लेनिन—अप्रैल, 1917 में लेनिन अपने निर्वासन से रूस वापस आ गए। इन्होंने अपने विचार अप्रैल थीसिस के नाम से रखे। बोल्शेविक समर्थक सेना, फैक्ट्री मजदूर तथा किसान वर्ग सभी ने इनके नेतृत्व को समर्थन दिया।

(ii) व्यापारिक संघ तथा अन्य संस्थाएँ—फरवरी क्रान्ति के पश्चात् श्रमिक, संस्थाएँ तथा संघ बनाने के लिए स्वतन्त्र थे, इसलिए व्यापारिक संघों की संख्या बढ़ गई।

(iii) सरकार एवं बोल्शेविकों के बीच संघर्ष—बोल्शेविकों एवं सरकार के बीच संघर्ष से सरकार कमजोर हो गई।

(iv) माँग की पूर्ति न होना—अन्तरिम सरकार श्रमिकों तथा आम लोगों की माँगों को पूर्ण करने में असफल रही।

2. स्तालिनवाद एवं सामूहिकीकरण पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर नियोजित अर्थव्यवस्था का शुरुआती समय कृषि के सामूहिकीकरण से पैदा हुई बर्बादी से जुड़ा हुआ था। जनवरी, 1924 में लेनिन की मृत्यु के पश्चात् जोसेफ स्तालिन सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का नेता बना। वर्ष 1927-28 में रूस के शहरों में अनाज का संकट उत्पन्न हो गया। सरकार द्वारा अनाजों के दाम निश्चित कर दिए गए, परन्तु कृषकों ने अपने अनाजों को इस दाम में बेचने से इनकार कर दिया। स्तालिन का यह मानना था कि बड़े किसान और व्यापारी कीमत बढ़ने की आशा से अनाज नहीं बेच रहे हैं। इसके कारण स्तालिन ने खेती के सामूहिकीकरण की शुरुआत की। इससे रूस में बहुमत में सामूहिक खेती का प्रचलन आरम्भ हुआ।

3. स्तालिन की नीतियों की विशेषताओं को बताइए।

उत्तर स्तालिन की नीतियों की विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) बहुत-से कृषकों द्वारा सामूहिक खेती की शुरुआत वर्ष 1929 से की गई तथा इस सामूहिक भूमि को कोलखोज कहा जाता था।

(ii) कृषकों द्वारा भूमि पर सामूहिक तौर पर कार्य किया जाता था। कोलखोज से हुए लाभ को सभी में बाँट दिया जाता था। जो कृषक इसका विरोध करते थे उन्हें निर्वासन या देश से निकाल दिया जाता था।

(iii) वर्ष 1930-33 में सोवियत इतिहास में पहली बार सबसे बड़ा अकाल पड़ा, जिसके कारण 40 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई। जो लोग स्तालिन की नीतियों की उपेक्षा करते थे, उन पर समाजवाद के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने का आरोप लगाया जाता था।

(iv) वर्ष 1939 तक 20 लाख से अधिक लोग या तो श्रम शिविरों या जेल भेज दिए गए।

4. स्तालिन ने रूस के औद्योगिक क्षेत्र में क्या परिवर्तन किए?

उत्तर स्तालिन ने रूस के औद्योगिक क्षेत्र में निम्न परिवर्तन किए—

(i) पंचवर्षीय योजना—स्तालिन ने वर्ष 1924 में सत्ता सँभाली तथा इसने नियोजित आर्थिक विकास की प्रणाली के अन्तर्गत 'पंचवर्षीय योजना' को लागू किया।

(ii) राष्ट्रीयकरण—स्तालिन के समय में कई बैंकों तथा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया। हालाँकि यह लेनिन द्वारा लाई गई नीति थी, परन्तु स्तालिन ने इसे जारी रखा।

(iii) मूल्य निर्धारण—सरकार द्वारा सभी औद्योगिक उत्पादों का मूल्य निर्धारित किया गया, जिससे औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिले।

(iv) लोहा तथा इस्पात उद्योग—उद्योग की आधारभूत इकाई होने के कारण इन दोनों के विकास के लिए विशेष प्रयास किए गए।

5. वर्ष 1905 में रूस में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ क्यों हुईं? क्या क्रान्तिकारियों की माँगें उचित थीं? अपना विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर रूस में आवश्यक वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने के कारण यहाँ की स्थिति दयनीय हो गई थी। इसके साथ ही इनके वेतन में 20% तक की स्वाभाविक गिरावट दर्ज की गई। इसके विरोध में महिलाएँ, बच्चे एवं पुरुष ज़ार को ज्ञापन देने जा रहे थे। पादरी गैपॉन इनके नेता थे, परन्तु विण्टर पैलेस पहुँचने से पूर्व ही पुलिस द्वारा इनके ऊपर गोलियाँ बरसाई गईं। इसमें 100 से अधिक मजदूर मारे गए तथा 300 से अधिक घायल हो गए। ज़ार द्वारा किया गया यह अमानवीय व्यवहार इतिहास में कभी भी नहीं भूले जाने वाले अंग के रूप में रहेगा।

इनकी माँगे निम्नलिखित थीं

- केवल 8 घण्टे काम कराया जाए।
- वेतन में बढ़ोतरी की जाए।
- कार्यस्थितियों में सुधार किया जाए।

6. गृह युद्ध के बाद रूस में फैक्ट्री मज़दूरों तथा किसानों की दशा सुधारने के लिए उठाए गए तीन कदमों की चर्चा कीजिए।

उत्तर फैक्ट्री मजदूरों तथा किसानों की दशा सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए

(i) व्यापक स्कूली शिक्षा की व्यवस्था की गई।

(ii) फैक्ट्रियों में कार्यरत महिलाओं की सुविधा हेतु शिशुसदन खोले गए।

(iii) सस्ती जन-सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।

(iv) मज़दूरों के लिए आदर्श आवासीय घर स्थापित किए गए।

(v) फैक्ट्री मजदूरों तथा किसानों के विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए प्रबन्ध किए गए।

इन सबका प्रभाव बहुत नाममात्र था, क्योंकि सरकारी संसाधन सीमित थे।

7. समाजवादी सिद्धान्त में कौन-से नैतिक मूल्य परिलक्षित होते हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर समाजवादी सिद्धान्त में निम्न प्रकार के नैतिक मूल्य परिलक्षित होते हैं—

(i) समाजवादी निजी सम्पत्ति के घोर विरोधी रहे थे। इससे अमीर व गरीब के बीच अन्तर को मिटाया जा सकता है।

(ii) समाजवादी सिद्धान्त में उत्पादन के साधनों पर सरकारी नियन्त्रण होता है। अत: सरकार बेहतर तरीके से आर्थिक नियोजन कर सकती है।

(iii) समाजवाद से कृषि के आधुनिकीकरण में सहायता मिलती है। यह सदैव सहकारिता को प्रोत्साहित करता है।

8. निम्नलिखित संगठनों में से उन सामाजिक नैतिक मूल्यों की चर्चा कीजिए, जिन्हें व्यवहारतः पसन्द या नापसन्द किया जा सकता है।

(i) रूढ़िवादी (ii) उदारवादी

उत्तर (i) रूढ़िवादी

- इनका विश्वास था कि अतीत को महत्त्व मिलना चाहिए।
- सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी हो।

(ii) उदारवादी

- उदारवादी ऐसा राष्ट्र चाहते थे, जो सभी देशों के प्रति सहिष्णु हो।
- वे सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार में विश्वास नहीं रखते थे।

9. राष्ट्रवादी, उदारवादी तथा रैडिकल्स के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर अधिकांश उदारवादियों व रैडिकलों के पास स्वयं की सम्पत्ति थी तथा इनके अपने कर्मचारी भी थे। इन्होंने यह सम्पत्ति व्यापार या औद्योगिक व्यवसायों के माध्यम से इकट्ठा की थी। इनका विश्वास था कि यदि मजदूर स्वस्थ हों तथा नागरिक पढ़े-लिखे हों, तो इस व्यवस्था का लाभ उठाया जा सकता है। इन्हें व्यक्ति के व्यक्तिगत प्रयास, श्रम और उद्यमशीलता में विश्वास था। कुछ राष्ट्रवादी, उदारवादी और रैडिकल्स चाहते थे कि क्रान्ति को समाप्ति की ओर ले जाया जाए तथा 1815 ई. की यूरोपियन सरकार को समाप्त किया जाए।

फ्रांस, इटली, जर्मनी और रूस के राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी बन गए और राजा को हटाने का प्रयास करने लगे। राष्ट्रवादी कार्यकर्ता, क्रान्ति के द्वारा ऐसे राष्ट्र की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हो। इटली के राष्ट्रवादी गिसेप्पे मेजिनी ने 1815 ई. के बाद राष्ट्रवादियों के साथ मिलकर ऐसे इटली के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ की, जहाँ सभी को समान अधिकार प्राप्त हो।

10. समाजवाद की मुख्य चार विशेषताओं को बताइए।

उत्तर समाजवाद की मुख्य चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) समाजवाद के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों पर सरकार का नियन्त्रण होता है।

(ii) समाजवादी निजी सम्पत्ति के विरुद्ध थे।

(iii) समाजवादी मानते थे कि निजी संपत्ति सभी सामाजिक बुराइयों का एक मूल कारण है।

(iv) समाजवादी सामूहिक उद्यमों का समर्थन करते हैं।

11. यूरोप के किसानों की तुलना में रूसी किसान किस प्रकार भिन्न थे?

उत्तर यूरोप के किसानों की तुलना में रूसी किसान निम्न प्रकार से भिन्न थे—

(i) 20वीं सदी के प्रारम्भ में रूस की 85% जनता आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर थी। फ्रांस के 40% और जर्मनी के 50% लोग कृषि कार्यों में संलग्न थे।

(ii) रूस में किसान सामन्तों का सम्मान नहीं करते थे तथा ये चाहते थे कि सामन्त इन्हें भूमि वापस कर दें।

(iii) रूसी कृषक समय-समय पर अपनी भूमि संयुक्त लाभ के लिए इकट्ठा कर लेते थे तथा उनका समुदाय निजी परिवारों की आवश्यकता के अनुसार इसे विभाजित करता था। उल्लेखनीय है कि ऐसा प्रचलन यूरोप के किसी भाग में नहीं हुआ।

12. वर्ष 1914 के रूसी साम्राज्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वर्ष 1914 में जार निकोलस द्वितीय का रूस एवं उसके पूरे साम्राज्य पर शासन था। मॉस्को के आस-पास के क्षेत्र के अतिरिक्त रूसी साम्राज्य में फिनलैण्ड, लातविया, लिथुआनिया, एस्तोनिया, पोलैण्ड, यूक्रेन व बेलारूस के कुछ क्षेत्र भी समाहित थे। यह साम्राज्य मध्य एशिया तथा प्रशान्त महासागर तक फैला था। मध्य एशियायी राज्यों में जॉर्जिया, आर्मेनिया व अजरबैजान भी रूसी साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे।

रूस में सबसे अधिक ऑर्थोडॉक्स क्रिश्चियैनिटी धर्म को मानने वाले लोग थे। इस धर्म का उद्भव रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च से हुआ था। रूसी साम्राज्य के अन्तर्गत रहने वालों में कैथोलिक, प्रोटेस्टेण्ट मुस्लिम और बौद्ध भी शामिल थे।

13. रूसी क्रान्ति से पूर्व श्रमिकों की आर्थिक दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर रूसी क्रान्ति से पूर्व श्रमिकों की आर्थिक दशा का वर्णन निम्न प्रकार है—

(i) अधिकांश कारखाने उद्योगपतियों की निजी सम्पत्ति थी। हालाँकि सरकारी विभाग द्वारा इन फैक्ट्रियों पर नजर रखी जाती थी कि मजदूरों को न्यूनतम वेतन मिले तथा कार्य करने का समय निश्चित रहे।

(ii) मजदूर कारखानों में सामान्यत: 10-12 घण्टे तक काम करते थे, वहीं कारीगरों की इकाइयों और वर्कशॉपों में काम प्राय: 15 घण्टे तक होता था।

(iii) वर्ष 1914 में लगभग 31% महिलाएँ फैक्ट्री में मजदूर के रूप में करती थीं, परन्तु इन्हें मजदूरी पुरुषों की अपेक्षा कम मिलती थी।

14. रूस के किन्हीं दो समाजवादी दलों के नाम तथा इनकी विशेषता बताइए।

उत्तर रूस के दो समाजवादी दलों के नाम तथा इनकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) रूसी सामाजिक लोकतान्त्रिक श्रमिक पार्टी—मार्क्स के विचारों को मानने वाले समाजवादियों ने 1898 ई. में रशियन सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी (रूसी सामाजिक लोकतान्त्रिक श्रमिक पार्टी) का गठन किया था। इस पार्टी को सरकारी आतंक के कारण गैर-कानूनी संगठन के रूप में कार्य करना पड़ता था। इस पार्टी ने अपना अखबार निकाला तथा मजदूरों को संगठित कर हड़ताल आदि कार्यक्रम आयोजित किए।

(ii) सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी—इसका गठन वर्ष 1900 में किया गया। इस पार्टी ने कृषकों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया तथा माँग की कि सामन्तों द्वारा अधिकृत भूमि कृषकों को वापस कर दी जाए।

15. रूसी मजदूरों के प्रतिकूल समय होने के कोई तीन कारण बताइए।

उत्तर रूसी मजदूरों के प्रतिकूल समय होने के तीन कारण निम्नलिखित हैं—

(i) वर्ष 1904 में रूसी मजदूरों की स्थिति दयनीय हो गई, क्योंकि इस समय आवश्यक वस्तुओं के दामों में बढ़ोतरी हो गई थी। इससे इनके वास्तविक वेतन में 20% की गिरावट आ गई। मजदूर संगठनों की सदस्यता में भी तेजी से वृद्धि हुई।

(ii) असेम्बली ऑफ रशियन वर्कर्स (रूसी श्रमिक विभाग) के चार सदस्यों को प्युतिलोव आयरन वर्क्स से हटा दिए जाने के कारण मजदूरों द्वारा आन्दोलन करने की घोषणा कर दी गई।

(iii) इसके कुछ ही दिनों बाद सेण्ट पीटर्सबर्ग के लाखों मजदूर वेतन में वृद्धि, कार्यस्थितियों में सुधार और काम के घण्टे को घटाकर आठ घण्टे किए जाने की माँग को लेकर हड़ताल पर चले गए।

16. रूसी उद्योग पर प्रथम विश्वयुद्ध का क्या प्रभाव पड़ा था? इससे सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखिए।

उत्तर रूसी उद्योग पर प्रथम विश्वयुद्ध का निम्न प्रभाव पड़ा—

(i) देश में उद्योगों से मिलने वाली बाहरी आपूर्ति भी बन्द हो गई, जिसे जर्मनी द्वारा रोक लिया गया था।

(ii) वर्ष 1916 में रेलवे लाइनों को तोड़ दिया गया।

(iii) स्वस्थ पुरुषों को युद्ध में भेजा दिया गया, जिसके कारण मजदूरों की कमी हो गई तथा छोटे-छोटे कारखाने बन्द होने लगे। युद्ध में सेना को अनाज की अत्यधिक आवश्यकता से शहरों में अनाज की कमी हो गई।

17. खूनी रविवार क्या है? इस घटना के उपरान्त कौन-सी घटनाएँ घटीं?

उत्तर वर्ष 1905 को रविवार के दिन पादरी गैपॉन के नेतृत्व में मजदूरों का जुलूस जार के महल (विण्टर पैलेस) के समक्ष पहुँचा, तब कोसैक्स एवं पुलिस द्वारा मजदूरों पर आक्रमण कर दिया गया।

इस घटना में बहुत-से मजदूर मारे गए तथा कुछ घायल हो गए। इतिहास में इसी घटना को खूनी रविवार की घटना के नाम से जाना गया। इसके उपरान्त इस प्रकार की कई घटनाएँ घटने लगीं, जिन्हें वर्ष 1905 की क्रान्ति की संज्ञा दी गई है। *कुछ घटनाएँ इस प्रकार हैं*

(i) देश में जगह-जगह पर हड़तालें हुईं। नागरिक स्वतन्त्रता के अभाव में विद्यार्थियों द्वारा कक्षाओं का बहिष्कार किया गया तथा विश्वविद्यालय बन्द कर दिए गए।

(ii) इंजीनियर, डॉक्टर, वकील तथा मध्यम वर्गों द्वारा 'यूनियन ऑफ यूनियंस' नामक संविधान सभा का गठन किया गया।

18. पेत्रोग्राद में फरवरी क्रान्ति की स्थिति कैसी थी? कोई तीन बिन्दु बताइए।

उत्तर वर्ष 1917 की सर्दियों में राजधानी पेत्रोग्राद की स्थिति बहुत चिन्ताजनक थी। इसका वर्णन इस प्रकार है—

(i) नेवा नदी के दाएँ तट पर मज़दूरों के कारखाने एवं क्वार्टर तथा विण्टर पैलेस एवं सरकारी इमारतें बाएँ तट पर थीं।

(ii) वर्ष 1917 में अत्यधिक ठण्ड पड़ने के कारण रूस में खाद्य पदार्थों की भारी कमी हो गई। संसदीय प्रतिनिधि यह नहीं चाहते थे कि जार द्वारा ड्यूमा को भंग किया जाए।

(iii) 22 फरवरी को नदी के दाएँ तट पर स्थित एक फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी गई। इसके अगले दिन इस समर्थन में कई फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा हड़ताल करने की घोषणा कर दी गई । बहुत-से कारखानों में औरतों द्वारा हड़ताल का नेतृत्व किया गया। उल्लेखनीय है कि इसी दिन को बाद में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का नाम दिया गया।

19. ड्यूमा की बर्खास्तगी से सम्बन्धित घटनाओं को बताइए।

उत्तर ड्यूमा की बर्खास्तगी से सम्बन्धित घटनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) राजनेता ड्यूमा के निलम्बन के विरुद्ध बोलने लगे।

(ii) 26 फरवरी को नेवा नदी के बाएँ किनारे की सड़कों पर प्रदर्शनकारियों ने पुन: वापसी की।

(iii) 27 फरवरी को इनके द्वारा पुलिस मुख्यालय पर आक्रमण करके इसे नष्ट कर दिया गया।

(iv) रोटी, वेतन, काम के घण्टों में कमी और लोकतान्त्रिक अधिकारों के पक्ष में नारे लगाते असंख्य लोग सड़कों पर एकत्र हो गए।

(v) सरकार द्वारा स्थिति नियन्त्रण के लिए सैनिक टुकड़ी बुलाई गई, जिसे प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने के आदेश दिए गए, परन्तु सैनिकों ने इन पर गोली चलाने से मना कर दिया।

20. ड्यूमा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर रूसी संसद को ड्यूमा कहा जाता था, इसे राष्ट्रीय सभा भी कहते थे। रूस के जार निकोलस द्वितीय ने इसे मात्र एक सलाहकार समिति में बदल दिया था। इसमें केवल अनुदारवादी राजनीतिकों को ही स्थान दिया गया।

पहली ड्यूमा को मात्र 75 दिन के अन्तर्गत तथा दूसरी ड्यूमा को 3 महीने के अन्तर्गत जार द्वारा बर्खास्त कर दिया गया। वस्तुत: जार अपनी सत्ता पर किसी तरह का अंकुश नहीं चाहता था। इसके परिणामस्वरूप मतदान कानूनों में परिवर्तन किया गया और तीसरी

ड्यूमा में रूढ़िवादी राजनेताओं को शामिल किया गया। उदारवादियों एवं क्रान्तिकारियों को इस ड्यूमा से बाहर रखा गया था।

21. रूस में मजदूर आन्दोलन के प्रभाव बताएँ।

उत्तर रूस में मजदूर आन्दोलन के निम्न प्रभाव हैं—

(i) गर्मियों में मजदूर आन्दोलन और अधिक फैल गया। औद्योगिक क्षेत्रों में फैक्ट्री कमेटी का गठन होने लगा। ट्रेड यूनियनों की भी संख्या बढ़ गई, वहीं सेना में सिपाही समिति बनने लगी। जून में लगभग 500 सोवियतों ने अपने प्रतिनिधि अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस में भेजे।

(ii) बोल्शेविक नेता लेनिन चाहते थे कि रैडिकल उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए पार्टी का नाम कम्युनिस्ट पार्टी रखा जाए।

(iii) अन्तरिम सरकार की ताकत कमजोर होने लगी तथा बोल्शेविकों का प्रभाव बढ़ने लगा, सरकार ने इस असन्तोष को दबाने के लिए कठोर प्रयास किए।

22. 'अक्टूबर क्रान्ति' के पश्चात् रूस में हुए मुख्य परिवर्तन क्या थे?

उत्तर अक्टूबर क्रान्ति के पश्चात् रूस में हुए परिवर्तन निम्नलिखित हैं—

(i) नवम्बर, 1917 में बोल्शेविकों द्वारा बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। चर्च एवं जार की सम्पत्ति को जब्त कर लिया गया। भूमि को सामाजिक सम्पत्ति घोषित किया गया तथा किसानों को सामन्तों की खेती जब्त करने के लिए कहा गया।

(ii) शहरों में बोल्शेविकों ने मकान मालिकों के लिए पर्याप्त हिस्सा छोड़कर उनके बड़े मकानों के छोटे-छोटे हिस्से कर दिए, जिससे जरूरतमन्द लोगों को भी रहने के लिए जगह दी जा सके। उन्होंने अभिजात्य वर्ग द्वारा पुरानी पदवियों के उपयोग पर रोक लगा दी।

(iii) सैनिकों एवं सरकारी अफसरों की वर्दियाँ बदल दी गईं। बोल्शेविक पार्टी का नाम पुन: कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) रखा गया। इनके द्वारा सोवियत टोपी, जिसे बुदियोनोव्का कहा जाता था, का चुनाव किया गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रूस में 24 अक्टूबर, 1917 की घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर 24 अक्टूबर, 1917 की घटना का वर्णन निम्नलिखित है—

(i) बोल्शेविक पार्टी और पेत्रोग्राद सोवियत को लेनिन ने 16 अक्टूबर, 1917 सत्ता पर अपना अधिकार जमाने के लिए सहमत कर लिया था।

(ii) सोवियत द्वारा सैनिक क्रान्तिकारी समिति का गठन लियॉन ट्रॉट्स्की के नेतृत्व में किया गया।

(iii) विद्रोह की शुरुआत 24 अक्टूबर से हो गई थी। प्रधानमन्त्री करेंस्की सैन्य टुकड़ियों को इकट्ठा करने के लिए शहर से बाहर चले गए। उसी शाम सरकार के सैनिकों ने दो बोल्शेविक अखबारों के दफ्तरों को घेर लिया। टेलीफोन और टेलीग्राम दफ्तरों पर नियन्त्रण प्राप्त करने और विण्टर पैलेस की रक्षा करने के लिए सरकार ने सैनिकों को भेज दिया तथा क्रान्तिकारी समितियों ने भी अपने समर्थकों को आदेश दिया कि सरकारी दफ्तरों पर कब्जा कर लें एवं मन्त्रियों को गिरफ्तार कर लें।

(iv) इसी बीच ऑरोरा नामक युद्धपोत द्वारा विण्टर पैलेस पर बमबारी शुरू कर दी गई एवं अन्य युद्धपोतों ने नेवा के रास्ते से आगे बढ़ते हुए विभिन्न सैनिक स्थलों को अपने नियन्त्रण में ले लिया। शाम होते-होते पूरा शहर क्रान्तिकारी समिति के नियन्त्रण में आ चुका था और मन्त्रियों ने आत्मसमर्पण कर दिया था।

2. रूसी क्रान्ति से आप क्या समझते हैं? इसकी अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

उत्तर वर्ष 1917 की अक्टूबर क्रान्ति के माध्यम से समाजवादियों ने रूस में सरकार का अधिग्रहण किया। फरवरी, 1917 में राजतन्त्र का अन्त हुआ और अक्टूबर में रूस में घटी इन घटनाओं को ही रूसी क्रान्ति के नाम से जाना गया।

अर्थव्यवस्था एवं समाज

(i) 20वीं सदी के प्रारम्भ में रूस की 85% जनता आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर थी। फ्रांस के 40% और जर्मनी के 50% लोग कृषि कार्यों में संलग्न थे। रूसी साम्राज्य के किसान अपनी आवश्यकताओं के साथ-साथ बाजार के लिए भी पैदावार करते थे। रूस अनाज का एक बड़ा निर्यातक था।

(ii) रूस के महत्त्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र अधिकांशत: सेण्ट पीटर्सबर्ग और मॉस्को में स्थित थे। हालाँकि अधिकांश उत्पादन कारीगरों द्वारा ही किया जाता था, लेकिन कारीगरों की वर्कशॉपों के साथ-साथ बड़े-बड़े कल-कारखाने भी मौजूद थे।

(iii) 1890 ई. में रेलवे के विस्तार के कारण कई फैक्ट्रियों की शुरुआत हुई तथा इसके साथ ही विदेशी निवेशक भी बड़ी मात्रा में यहाँ पहुँचे। इसके परिणामस्वरूप कोयले का उत्पादन दोगुना तथा स्टील का उत्पादन चार गुना बढ़ गया। वर्ष 1900 तक कुछ क्षेत्रों में फैक्ट्री मजदूर और कारीगरों की संख्या लगभग एकसमान हो गई थी।

3. वर्ष 1917 की रूसी क्रान्ति के समय कौन-कौन-सी घटनाएँ घटित हुईं?

उत्तर वर्ष 1917 की रूसी क्रान्ति की प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) क्रान्ति का आरम्भ—इस क्रान्ति के आरम्भ में **7 मार्च, 1917** को मजदूरों ने हजारों की संख्या में इकट्ठा होकर पेत्रोग्राद नामक स्थान पर जार प्रशासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया। भूख से परेशान लोग **रोटी दो** का नारा लगा रहे थे। इकट्ठा हुए लोगों ने पेत्रोग्राद में भारी लूटमार की। स्त्रियों तथा पुरुषों ने भी मजदूरों का साथ दिया। प्रशासन के आदेश के बावजूद भी सैनिकों ने मजदूरों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया तथा वे भी क्रान्तिकारियों का साथ देने लगे। क्रान्तिकारियों ने **रोटी दो**, **युद्ध बन्द करो**, **अत्याचारी शासन का अन्त करो** आदि नारे लगाए।

(ii) अस्थायी सरकार का गठन—मजदूरों ने सभी कल-कारखानों में 10 मार्च, 1917 को हड़ताल कर दी तथा सैनिकों के हथियार छीन लिए। जार ने ड्यूमा को भंग कर दिया। इससे ड्यूमा के सदस्य भी

क्रान्तिकारियों से जा मिले। फिर सैनिकों तथा मजदूरों ने 'क्रान्तिकारी सोवियत' नामक एक नई संस्था की स्थापना की। 14 मार्च, 1917 को क्रान्तिकारियों तथा संसद सदस्यों ने सम्मिलित रूप से अस्थायी सरकार का गठन किया तथा क्रान्तिकारियों ने निकोलस के परिवार को बन्दी बनाकर साइबेरिया भेज दिया, जहाँ उसकी हत्या उसकी पत्नी के साथ कर दी गई। इस प्रकार रूस में जारशाही राजतन्त्र का समापन हो गया।

(iii) फरवरी क्रान्ति—प्रिन्सल्वाव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार की स्थापना हुई, जो असफल साबित हुई। इसके पश्चात् मेंशेविक दल के नेता करेंस्की ने समाजवादी सरकार की स्थापना की। इस सरकार ने प्रथम विश्वयुद्ध को जारी रखने का फैसला लिया, लेकिन इस युद्ध में रूस जर्मनी से बुरी तरह पराजित हुआ तथा करेंस्की को भी अपने पद से त्याग-पत्र देना पड़ा। यह क्रान्ति 7 मार्च को हुई थी, लेकिन इसे **फरवरी क्रान्ति** के नाम से भी जाना जाता है। इसका कारण यह है कि प्राचीन रूसी कैलेण्डर विश्व के कैलेण्डर से 8 दिन पीछे चलता था।

(iv) बोल्शेविक या अक्टूबर क्रान्ति—यह रूस की दूसरी क्रान्ति थी, जो अक्टूबर महीने में शुरू हुई थी, इसलिए इसे 'अक्टूबर क्रान्ति' के नाम से भी जाना जाता है। लेनिन इस क्रान्ति के प्रमुख नेता थे। बोल्शेविकों ने 25,000 सैनिकों की लाल सेना एकत्रित कर ली थी। इस सेना ने 7 नवम्बर, 1917 को सरकारी कार्यालयों एवं भवनों पर आक्रमण कर दिया तथा 8 नवम्बर, 1917 को बोल्शेविक सरकार का मन्त्रिमण्डल गठित किया। यह एक साम्यवादी सरकार थी।

इस सरकार में **लेनिन** को प्रधानमन्त्री तथा **ट्रॉट्स्की** को विदेश मन्त्री बनाया गया। इस सरकार ने 3 मार्च, 1918 को जर्मनी के साथ **ब्रेस्ट लिटोव्स्क** की सन्धि की। यह सन्धि अत्यन्त कठोर एवं रूस के लिए अपमानजनक रही, फिर भी लेनिन ने रूस की आन्तरिक दशा को सुधारने के लिए इसे स्वीकार किया। अब रूस जर्मनी का मित्र हो गया और लेनिन को आन्तरिक सुधार करने का मौका मिल गया।

(v) गृह युद्ध का निपटारा (1918-20)—लेनिन के जर्मनी के साथ सन्धि कर लेने से मित्र राष्ट्र रूसी सरकार के प्रति विद्वेष रखने लगे। वे चाहते थे कि रूस से बोल्शेविक शासन समाप्त हो जाए और वहाँ ऐसी सरकार स्थापित हो, जो युद्ध जारी रख सके। दूसरी तरफ आन्तरिक परिस्थितियों में भी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई, क्योंकि साम्यवादी क्रान्ति से रूसी पूँजीवादी और बुर्जुआ वर्ग असन्तुष्ट थे। देश की दो विचारधाराओं के लोग परस्पर संघर्षरत हो गए। **लाल आतंक** और **श्वेत आतंक** दोनों पक्ष एक-दूसरे से टकराकर भयंकर स्थिति पैदा कर रहे थे।

4. रूस की क्रान्ति का रूसी समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर वर्ष 1917 की रूसी क्रान्ति के प्रभाव निम्नलिखित थे—

(i) निरंकुश जारशाही शासन का अन्त—रूसी क्रान्ति के फलस्वरूप वर्षों से चले आ रहे जारशाही शासन का अन्त हुआ। निकोलस द्वितीय तथा उसके वंश के लोगों की हत्या कर दी गई। इस प्रकार 300 वर्षों से चले आ रहे रूस की निरंकुश व अत्याचारी जारशाही शासन का अन्त हो गया।

(ii) प्रथम समाजवादी राज्य का उद्भव—रूस की क्रान्ति के परिणामस्वरूप जार साम्राज्य को एक नए राज्य सोवियत समाजवादी गणराज्यों के संघ के रूप में विकसित किया गया। इस क्रान्ति के बाद आई नई सरकार ने **कार्ल मार्क्स** के सिद्धान्तों को अपनाया। इस नए राज्य की नीतियों का उद्देश्य था—"प्रत्येक व्यक्ति से उसकी क्षमता के अनुसार काम लिया जाए और प्रत्येक को उसके काम के अनुसार मजदूरी दी जाए।" इस उद्देश्य से उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व को समाप्त कर दिया गया।

(iii) साम्यवादी सरकार की स्थापना, सामाजिक असमानता की समाप्ति—इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप एक नए प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का विकास हुआ। निजी स्वामित्व एवं व्यक्तिगत लाभ को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार समाज में व्याप्त असमानता को समाप्त करके प्रत्येक व्यक्ति को काम देना समाज और राज्य का कर्त्तव्य बन गया। श्रमिकों तथा कृषकों की दशा में सुधार हुआ।

(iv) आर्थिक नियोजन—इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप नई सरकार का प्रमुख कार्य तकनीकी दृष्टिकोण से उच्च अर्थव्यवस्था का निर्माण करना था। इस कार्य के लिए आर्थिक नियोजन के सिद्धान्त को अपनाया गया।

(v) शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में विकास—सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं के उन्मूलन के साथ-साथ शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी विकास किया गया। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से आर्थिक विकास, अन्धविश्वासों के निवारण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में सहायता मिली, जिसके कारण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति मिली।

(vi) औद्योगिक विकास—इस क्रान्ति के पश्चात् रूस में उद्योगों का तेजी से विकास हुआ। कारखानों का प्रबन्धन श्रमिकों के हाथ में आ गया। उद्योगों के विकास से रूस ने कुछ ही वर्षों में आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली।

(vii) शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरना—इस क्रान्ति के बाद रूस में बहुत-से विकास कार्य हुए। देश सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पुनर्गठित हुआ। कुछ ही वर्षों में रूस विश्व का एक शक्तिशाली देश बनकर उभरा।

5. कम्युनिस्ट समाज के विचार को संक्षिप्त रूप से समझाइए।

उत्तर इंग्लैण्ड के उद्योगपति **रॉबर्ट ओवेन** (1771-1858) द्वारा नया समन्वय नाम से एक नए समुदाय की रचना का प्रयास इण्डियाना नामक यू एस ए के प्रान्त में किया गया था।

➲ **फ्रांसीसी समाजवादी लुई ब्लांक** (1813-82) चाहते थे कि सरकार द्वारा सामूहिक उद्यमों सामूहिक उद्यमों दिया जाए तथा पूँजीवादी उद्यमों को हटाया जाए। सामूहिकों उद्यगों में ऐसे लोग सम्मिलित थे, जो मिलकर वस्तुएँ बनाते थे तथा उनसे होने वाले लाभ को आपस में बाँट लेते थे।

➲ **कार्ल मार्क्स** (1818-82) का विचार था कि औद्योगिक समाज पूँजीवादी समाज है और फैक्ट्रियों में लगी पूँजी पर पूँजीपतियों का स्वामित्व है। पूँजीपतियों को जो लाभ प्राप्त होता है, वह मजदूरों की मेहनत से होता है।

➲ मजदूरों की स्थिति में तब तक सुधार नहीं होगा जब तक पूँजीपति वर्ग फैक्ट्रियों से स्वयं ही लाभ कमाते रहेंगे। मार्क्स का मानना था कि स्वयं को पूँजीवादी शोषण से मुक्त कराने के लिए एक अलग समाज की स्थापना करनी होगी, जिसमें सम्पूर्ण सम्पत्ति पर सम्पूर्ण समाज का नियन्त्रण होगा। मार्क्स ने इस समाज को 'साम्यवादी समाज' का नाम दिया। उन्हें विश्वास था कि पूँजीपतियों के साथ होने वाले इस संघर्ष में मजदूर वर्ग ही विजयी होगा।

➲ **फ्रेडरिक एंगेल्स** (1820-95) भी मार्क्स के विचारों के समर्थक थे। इन्होंने कहा कि मजदूरों को पूँजीवाद और निजी सम्पत्ति के शासन को समाप्त करना होगा।

6. ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों की स्थिति को संक्षेप रूप से समझाइए।

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश जमीन पर कृषकों द्वारा कृषि की जाती थी, किंतु विशाल सम्पत्तियों पर कुलीन वर्ग, राजशाही तथा ऑर्थोडॉक्स चर्चों ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर रखा था। किसान भी कई वर्गों में बँटे थे तथा ये धार्मिक प्रवृत्ति के थे। इनके मध्य सामन्तों एवं नवाबों के लिए सम्मान नहीं था। कुलीनों को शक्ति जार को उनके द्वारा दी जाने वाली सेवा एवं निष्ठा से मिली थी, न कि उनकी लोकप्रियता से।

फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान ब्रिटेन के कृषक कुलीनों का सम्मान करते थे तथा इनके लिए इन्होंने लड़ाइयाँ भी लड़ीं, लेकिन रूस के किसान शेष यूरोपीय कृषकों की अपेक्षा भिन्न थे। रूसी कृषक चाहते थे कि कुलीनों से जमीनें लेकर इनको दे दी जाएँ। ये कभी लगान नहीं चुकाते थे और इनके द्वारा कई जगहों पर जमींदारों की हत्याएँ भी की जाने लगीं। वर्ष 1902 में दक्षिणी रूस तथा वर्ष 1905 में सम्पूर्ण रूस में ऐसी घटनाएँ घटने लगीं। रूसी कृषक समय-समय पर अपनी सारी जमीन कम्यून *(मीर)* को दे देते थे और कम्यून प्रत्येक कृषक परिवार की आवश्यकता के अनुसार भूमि वितरित करता था।

7. बोल्शेविकों के क्या उद्देश्य थे? वर्णन कीजिए।

उत्तर बोल्शेविकों का उद्देश्य मुख्य तौर पर समाज के श्रमिक वर्ग तथा कामगार वर्गों की स्थिति में सुधार लाना था। ये राष्ट्रवादी थे तथा अपने देश को शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। बोल्शेविकों के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं—

(i) समाजवाद की स्थापना—इनके द्वारा समाज में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की गई।

(ii) जार के कुलीनतन्त्र का अन्त करना—बोल्शेविकों को इस बात का पूरा आभास था कि ज़ार के रहते हुए रूस के लोगों की दशा सुधारी नहीं जा सकती। अन्ततः जार के शासन का अन्त करके रूस में गणतन्त्र की स्थापना करना चाहते थे।

(iii) गैर-रूसी जातियों के दमन की समाप्ति—बोल्शेविक रूसी साम्राज्य की गैर-रूसी जातियों के दमन को समाप्त करके उन्हें आत्मनिर्णय का अधिकार देना चाहते थे।

(iv) किसानों के दमन का अन्त—ये भू-स्वामित्व की असमानता का उन्मूलन और सामन्तों द्वारा किसानों के दमन का अन्त करना चाहते थे।

8. पेत्रोग्राद में फरवरी की क्रान्ति के लिए उत्तरदायी प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर पेत्रोग्राद में फरवरी की क्रान्ति के लिए उत्तरदायी प्रमुख घटनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) पीटर्सबर्ग में चिंताजनक स्थिति—वर्ष 1917 की सर्दियों में राजधानी पीटर्सबर्ग की स्थिति अत्यन्त चिंताजनक थी।

(ii) महिलाओं द्वारा हड़ताल का नेतृत्व—22 फरवरी को फैक्ट्रियों में तालाबन्दी हो गई। अगले ही दिन 50 फैक्ट्रियों में कामगारों के समर्थन में हड़ताल हो गई। बहुत-सी फैक्ट्रियों में महिलाओं द्वारा हड़ताल का नेतृत्व किया गया।

(iii) हिंसक घटनाएँ—अगले कुछ दिनों में कर्मियों ने अपनी माँगें मनवाने के लिए सरकार पर दबाव डाला, परन्तु सरकार ने अश्वरोही सेना बुला ली। गलियों में लोगों के समूह रोटी, मज़दूरी, काम के घण्टे और लोकतन्त्र की स्थापना के पक्ष में नारे लगा रहे थे।

(iv) सोवियत की संरचना—उसी शाम सैनिक तथा हड़ताली मजदूर सोवियत या काउंसिल की स्थापना के लिए एकत्र हो गए।

(v) **अन्तरिम** (अस्थायी) **सरकार का गठन** अगले ही दिन सोवियत नेता और संसद नेताओं ने देश चलाने के लिए अन्तरिम सरकार का गठन कर लिया।

❑❑❑

3

नात्सीवाद और हिटलर का उदय

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वाइमर गणराज्य के उदय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर 20वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में जर्मनी एक शक्तिशाली राष्ट्र था। जर्मनी ने ऑस्ट्रियाई राष्ट्र के साथ मिलकर मित्र राष्ट्रों (इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस) के विरुद्ध प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था। इस युद्ध में जर्मनी आरम्भ में विजयी हुआ, जिसके अन्तर्गत उसे फ्रांस और बेल्जियम पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई।

अमेरिका वर्ष 1917 में मित्र राष्ट्रों के साथ शामिल हो गया, जिसके परिणामस्वरूप मित्र राष्ट्रों की शक्ति तीव्र हो गई और अन्तत: इन्होंने वर्ष 1918 में केन्द्रीय शक्तियों और जर्मनी को पराजित कर दिया। साम्राज्यवादी जर्मनी की हार तथा सम्राट के पदत्याग ने वहाँ की राजनीतिक पार्टियों को जर्मनी में एक उचित राजनीतिक व्यवस्था तैयार करने का अवसर दिया। इस सम्बन्ध में वाइमर में राष्ट्रीय सभा की बैठक बुलाई गई तथा संघीय आधार पर एक लोकतान्त्रिक संविधान पारित किया गया।

2. प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय के क्या कारण थे?

उत्तर जब युद्ध प्रारम्भ हुआ था, तब जर्मनी की स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ थी। जर्मनी के पास विशाल सुसंगठित शक्तिशाली सेना, अस्त्र-शस्त्र, खाद्य सामग्री आदि पर्याप्त मात्रा में थे। उसके सैनिक अनुशासित एवं प्रशिक्षित थे। *फिर भी जर्मनी को प्रथम विश्वयुद्ध में हार का मुँह देखना पड़ा, इसके निम्नलिखित कारण थे*

(i) युद्ध की अधिक समयावधि—यह युद्ध 4 वर्ष, 3 माह और 11 दिन तक चला। युद्ध के परिप्रेक्ष्य में यह काफी लम्बा समय था। जर्मनी को इस बात का जरा भी अनुमान नहीं था कि युद्ध इतना लम्बा चलेगा। जर्मनी का अनुमान था कि वह एक-दो माह में ही मित्र राष्ट्रों को पराजित कर देगा। इस प्रकार अधिक समय तक युद्ध का चलना जर्मनी की हार का एक प्रमुख कारण बना।

(ii) मित्र राष्ट्रों की सर्वश्रेष्ठता—मित्र राष्ट्रों के पास जर्मनी की अपेक्षा अधिक जन-धन था, उन्होंने इसका प्रयोग कर अपनी श्रेष्ठता साबित की। इंग्लैण्ड मित्र राष्ट्रों का एक अहम देश था। इसकी नौसेना शक्ति का लोहा पूरा विश्व मानता था। इंग्लैण्ड के जंगी जहाजों के सामने जर्मनी के जंगी जहाज टिक नहीं पाए तथा जर्मनी की पराजय हो गई।

(iii) जर्मन सेनापतियों में दूरदर्शिता की कमी—जर्मन सेनापति युद्ध के सम्बन्ध में सटीक अनुमान लगाने में विफल साबित हुए। दूरदर्शिता की कमी के कारण वे मित्र राष्ट्रों की शक्ति का सही आकलन नहीं कर पाए।

(iv) युद्ध में अमेरिका का प्रवेश—आरम्भ में अमेरिका ने इस युद्ध से दूरी बना रखी थी, लेकिन 6 अप्रैल, 1917 को वह भी युद्ध में शामिल हो गया। इसके कारण मित्र राष्ट्रों की शक्ति और बढ़ गई, जिसके फलस्वरूप जर्मनी की पराजय निश्चित हो गई।

(v) साम्यवादी प्रभाव—रूस में लेनिन के नेतृत्व में साम्यवादी सरकार की स्थापना वर्ष 1917 में हुई थी। इस साम्यवादी क्रान्ति ने भी जर्मनी के पतन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

3. वर्साय की शान्ति सन्धि पर हस्ताक्षर करके जर्मनी ने क्या खोया? इसके कोई तीन महत्त्वपूर्ण बिन्दु बताइए।

उत्तर मित्र राष्ट्रों के साथ वर्साय में हुई शान्ति सन्धि जर्मनी के लोगों के लिए कठोर एवं अपमानजनक थी। वर्साय की शान्ति सन्धि पर हस्ताक्षर करके जर्मनी ने जो खोया, उसका विवरण निम्न है—

(i) इस सन्धि के कारण जर्मनी को अपने सारे उपनिवेश, लगभग 10% आबादी 13% भू-भाग खोना पड़ा।

(ii) 75% लौह भण्डार और 26% कोयला भण्डार को फ्रांस, पोलैण्ड, डेनमार्क और लिथुआनिया को सौंपना पड़ा।

(iii) अपराधबोध अनुच्छेद के कारण सभी क्षतिपूर्ति के लिए जर्मनी को ही दोषी माना गया। इसके बदले हर्जाने के रूप में जर्मनी पर छ: अरब पौण्ड का जुर्माना आरोपित किया गया। खनिज संसाधन युक्त जर्मनी के राइनलैण्ड पर भी बीस के दशक में मित्र राष्ट्रों का आधिपत्य रहा।

(iv) जर्मनी की बची हुई शक्ति को समाप्त करने के लिए मित्र राष्ट्रों ने उसकी सेना को भंग कर दिया था। अधिकतर जर्मनों ने वर्साय में हुए अपमान तथा युद्ध में हुई हार के लिए वाइमर गणराज्य को दोषी ठहराया।

4. प्रथम विश्वयुद्ध का पराजित देशों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी, टर्की, ऑस्ट्रिया, हंगरी जैसी शक्तियाँ पराजित हुईं, इस पराजय का इन देशों पर निम्न प्रभाव पड़ा—

(i) वर्साय की सन्धि एवं जर्मनी पर प्रभाव—प्रथम विश्वयुद्ध के लिए जर्मनी को दोषी माना गया तथा जर्मनी को एक सन्धि पर हस्ताक्षर करने पड़े, जिसे वर्साय की सन्धि कहा गया। इसके अनुसार जर्मनी के अनेक क्षेत्र छीनकर, बेल्जियम, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों को दे दिए गए। **आल्सेस एवं लॉरैन प्रान्त** तथा **सार** की कोयले की खान जर्मनी द्वारा फ्रांस को देनी पड़ी।

(ii) अन्य सन्धियाँ—ऑस्ट्रिया तथा हंगरी ने सेण्ट जर्मनी सन्धि पर हस्ताक्षर किए, जिसके द्वारा ऑस्ट्रिया तथा हंगरी को दो अलग-अलग राज्यों में बाँट दिया गया, उनकी सैन्य शक्ति को

नष्ट कर दिया गया तथा उन पर भविष्य में जर्मनी से आर्थिक सम्बन्ध रखने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

5. जर्मनी में उत्पन्न हुए आर्थिक संकट के कोई तीन कारण बताइए।

उत्तर जर्मनी में उत्पन्न हुए आर्थिक संकट के तीन कारण निम्नलिखित हैं—

(i) वर्ष 1923 के आर्थिक संकट से राजनीतिक रैडिकलवादी विचारों को बल मिला। प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी ने ऋण लेकर इस युद्ध को लड़ा, जिसके परिणामस्वरूप इन्हें हर्जाने के रूप में स्वर्ण मुद्रा में भुगतान भी करना पड़ा।

(ii) इस प्रकार जर्मनी पर दोहरे बोझ से स्थिति दयनीय होती चली गई तथा जर्मनी के स्वर्ण भण्डार समाप्ति की कगार पर आ गए।

(iii) आखिरकार वर्ष 1923 में जर्मनी ने ऋण और हर्जाना देने से इनकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप फ्रांसीसियों ने जर्मनी के सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्र रूर पर कब्जा कर लिया।

6. जर्मनी की मुद्रा मार्क का मूल्य तेजी से क्यों गिरने लगा?

उत्तर जर्मनी की मुद्रा मार्क का मूल्य तेजी गिरने के निम्नलिखित कारण थे—

(i) जर्मनी ने फ्रांस के विरुद्ध निष्क्रिय प्रतिरोध के रूप में बड़े पैमाने पर कागजी मुद्रा शुरू कर दी। इसके परिणामस्वरूप जर्मनी की मुद्रा मार्क का मूल्य तेजी से गिरने लगा। इस संकट को जर्मनी में अति मुद्रास्फीति के नाम से जाना जाता है।

(ii) वस्तुओं की कीमतें गिरने लगीं एवं कृषि उत्पादन पूर्णत: गिर गया, जहाँ पर मुद्रा का कोई औचित्य नहीं था।

(iii) अन्तत: जर्मनी को इस स्थिति से बाहर लाने के लिए अमेरिकी सरकार ने डॉव्स योजना बनाई। इस योजना में जर्मनी को आर्थिक संकट से दूर करने के लिए हर्जाने की शर्तों को पुन: तय किया गया।

7. वाइमर संविधान से सम्बन्धित दोषों को संक्षेप में बताइए।

उत्तर वाइमर संविधान से सम्बन्धित दोष। समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(i) वाइमर संविधान में कुछ ऐसी कमियाँ थीं, जिनके कारण गणराज्य में अस्थिरता और तानाशाही की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इनमें से एक कमी आनुपातिक प्रतिनिधित्व से सम्बन्धित थी। इसके अन्तर्गत किसी एक पार्टी को बहुमत मिलना लगभग असम्भव था। इसके कारण सदैव गठबन्धन की सरकार ही सत्ता में आती थी।

(ii) दूसरी कमी अनुच्छेद-48 थी, जिसमें राष्ट्रपति का आपातकाल लागू करने, नागरिक अधिकार रद्द करने एवं अध्यादेशों के जरिए शासन संचालन का अधिकार दिया गया था।

(iii) उल्लेखनीय है कि वाइमर गणराज्य का शासन 20 मन्त्रिमण्डलों के हाथों में रहा और इनकी औसत अवधि 239 दिन से अधिक नहीं रही। इस समय अनुच्छेद-48 का भी दुरुपयोग हुआ। अन्तत: लोकतान्त्रिक संसदीय व्यवस्था में लोगों का विश्वास कम होने लगा एवं हिटलर के प्रति लोगों की आस्थाएँ बढ़ने लगी थीं। यही कारण था कि नात्सी को चुनावों में 37% वोट प्राप्त हुए थे।

8. विशेषाधिकार अधिनियम में क्या प्रावधान थे तथा इसे कब पारित किया गया?

उत्तर 3 मार्च, 1933 को प्रसिद्ध विशेषाधिकार अधिनियम पारित किया गया। इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान निम्नलिखित थे—

(i) इस कानून ने हिटलर को संसद की उपेक्षा कर केवल अध्यादेशों के माध्यम से निरंकुश शासन चलाने का अधिकार दिया।

(ii) नात्सी पार्टी ने ट्रेड यूनियनों एवं सभी राजनीतिक पार्टियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। मीडिया, अर्थव्यवस्था, सेना एवं न्यायपालिका पर पूर्णरूप से सरकार ने नियन्त्रण स्थापित कर लिया था।

(iii) नात्सियों के अनुसार, समाज को नियन्त्रित करने के लिए विशेष निगरानी और सुरक्षा दस्तों का गठन किया गया। हरी वर्दीधारी पुलिस, जो पहले से थी और स्टॉर्म ट्रूपर्स के अतिरिक्त गेस्तापो (गुप्तचर राज्य पुलिस), अपराध नियन्त्रण पुलिस और सुरक्षा सेवा का भी गठन किया गया।

9. नस्लवादी विचार के पीछे हिटलर की अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर नस्लवादी विचार के पीछे हिटलर की निम्नलिखित अवधारणाएँ निहित हैं—

(i) हिटलर की नस्लवादी विचारधारा के पीछे—चार्ल्स डार्विन और हर्बर्ट स्पेंसर के सिद्धान्तों का आधार था। डार्विन ने विकास और प्राकृतिक चयन की अवधारणा के द्वारा पौधों और पशुओं की उत्पत्ति की व्याख्या का प्रयास किया था। हर्बर्ट स्पेंसर ने, अति जीविता का सिद्धान्त/सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट अर्थात् जो सबसे उत्तम है, वही बचेगा का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

(ii) इस विचारधारा के अनुसार, जो प्रजातियाँ बदलती हुई वातावरणीय परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल सकती हैं, वही पृथ्वी पर जिन्दा रह सकती हैं।

(iii) इन विचारों का प्रयोग नस्लवादी विचारकों और राजनेताओं द्वारा लोगों पर विजय प्राप्त करने के लिए किया जाता था। इनके तर्क सरल थे, जो नस्लीय आधार पर शक्तिशाली होगा, वही जीवित रहेगा, जो नस्लीय आधार पर कमजोर होगा, वह समाप्त हो जाएगा। उनकी ऐसी मान्यता थी कि आर्य नस्ल सर्वश्रेष्ठ है। उसे अपनी शुद्धता, ताकत और दुनिया पर अपना वर्चस्व बनाए रखना है।

10. अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर महामन्दी का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर महामन्दी का प्रभाव निम्नलिखित था—

(i) जर्मन निवेश एवं औद्योगिक वसूली पूरी तरह अल्पावधि ऋण पर निर्भर थी, जो अधिकतर अमेरिका से लेता था, परन्तु वर्ष 1929 में अमेरिका के सबसे बड़े शेयर बाजार के अचानक गिरने के कारण स्थिति तनावपूर्ण हो गई।

(ii) कीमत गिरने के कारण लोग अपने शेयर जल्दी-जल्दी बेचने लगे। यहाँ 24 अक्टूबर को ही 130 लाख शेयर बेच दिए गए। यह आर्थिक महामन्दी की शुरुआत थी।

(iii) अगले तीन वर्षों (1929-32) के बीच अमेरिका की राष्ट्रीय आमदनी गिरकर एक-तिहाई रह गई।

(iv) फैक्ट्रियाँ बन्द हो गई थीं, निर्यात गिरता जा रहा था, किसानों की हालत खराब थी और सट्टेबाज बाजारों से पैसा वापस ले रहे थे।

11. जर्मनी में राजनीतिक रैडिकलवादियों की भूमिका पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर जर्मनी में राजनीतिक रैडिकलवादियों की भूमिका निम्नलिखित है—

(i) जिस समय वाइमर गणराज्य स्थापित हुआ, उस समय जर्मनी में बोल्शेविक क्रान्ति के आधार पर स्पार्टकिस्ट लीग अपने क्रान्तिकारी विद्रोह की योजनाओं को अन्तिम रूप देने लगी। अनेक शहरों में मजदूरों और नाविकों की सोवियतें बनाई गईं।

(ii) जर्मनी में भी सोवियत की तरह शासन व्यवस्था की माँग होने लगी, इसलिए डेमोक्रेटिक, समाजवादियों और कैथोलिक गुटों ने वाइमर में एकत्रित होकर लोकतान्त्रिक गणराज्य की स्थापना का निर्णय लिया, परन्तु वाइमर गणराज्य ने पुराने सैनिकों के फ्री कोर नामक संगठन की सहायता से इस विद्रोह को समाप्त कर दिया।

(iii) इस घटना के बाद स्पार्टकिस्टों ने जर्मनी में कम्युनिस्ट पार्टी की नींव रखी। इसके पश्चात् समाजवादी और साम्यवादी ने एक-दूसरे के साथ कार्य नहीं किया, जिसके परिणामस्वरूप वे हिटलर के उदय को नियन्त्रित नहीं कर सके।

12. हिटलर कौन था? उसकी नीतियों ने किस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध को प्रभावित किया?

उत्तर हिटलर जर्मनी का सेनानायक था। वर्साय की सन्धि से क्षुब्ध होकर वह जर्मनी का चांसलर बना एवं जर्मनी में तानाशाही सरकार की स्थापना की। हिटलर की नीतियों ने कई प्रकार से द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभावित किया; जैसे—

(i) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी की वाइमर सरकार जर्मन जनता की भावनाओं को सन्तुष्ट करने में असफल रही, फलस्वरूप झुकाव हिटलर की ओर हुआ।

(ii) युद्ध समाप्त होने के बाद बेकारी, भुखमरी, महँगाई इत्यादि ने जर्मन की जनता को शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक रूप से दयनीय स्थिति में पहुँचा दिया था। युद्ध के समय में हुई क्षति की क्षतिपूर्ति करने के लिए वाइमर सरकार को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। इन गम्भीर परिस्थितियों में जर्मनी में हिटलर ने **नाजी पार्टी** की स्थापना की।

(iii) हिटलर वर्ष 1933 में जर्मनी का चांसलर बना और वर्ष 1934 में तानाशाह बनकर **वर्साय की सन्धि** का उल्लंघन करना प्रारम्भ कर दिया। हिटलर की इस कार्यवाही से पूरा यूरोप भयभीत हो गया, जिसके परिणामस्वरूप द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए मित्र राष्ट्रों को तैयार होना पड़ा।

13. वर्ष 1929-32 की आर्थिक महामन्दी की शुरुआत अमेरिका में हुई, परन्तु उससे जर्मन अर्थव्यवस्था कैसे प्रभावित हुई?

उत्तर वर्ष 1929-32 की आर्थिक मन्दी अमेरिका से शुरू हुई, परन्तु इससे जर्मनी की अर्थव्यवस्था धराशायी हो गई। इसे निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है—

(i) वर्ष 1929 में अमेरिका के वॉल स्ट्रीट एक्सचेंज (शेयर बाजार) के अचानक गिरने से कीमतों में गिरावट की आशंका से सभी लोग अपने शेयर बेचने लगे।

(ii) यू एस ए में अगले तीन सालों में राष्ट्रीय आय केवल आधी रह गई।

(iii) फैक्ट्रियों के बन्द होने के कारण निर्यात गिरता जा रहा था। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में आई इस मन्दी का प्रभाव विश्वभर में महसूस किया जा रहा था।

(iv) वर्ष 1929 में आए आर्थिक संकट के कारण अमेरिका से जर्मनी को दिए जाने वाले अल्पकालिक ऋण भी बन्द कर दिए गए। इससे जर्मन अर्थव्यवस्था पूर्णत: प्रभावित हो गई।

(v) अपने कर्ज को कम करने हेतु जर्मनी ने बड़े पैमाने पर कागजी मुद्रा छापनी शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप जर्मनी की मुद्रा मार्क का मूल्य तेजी से गिरने लगा। इससे जर्मनी में मुद्रास्फीति की स्थिति आ गई थी।

(vi) जर्मनी का औद्योगिक उत्पादन वर्ष 1929 की अपेक्षा केवल 40% रह गया था। मजदूर बेरोजगार होते गए, जिनकी संख्या 60 लाख तक जा पहुँची। मुद्रा का दिन-प्रतिदिन अवमूल्यन होता जा रहा था।

14. "नात्सी विचारधारा हिटलर के विश्व दृष्टिकोण की पर्यायवाची थी।" तीन सूत्र देते हुए कथन का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर (i) नात्सियों के सिद्धान्त समानता के न होकर जातीय पदानुसार व्यवस्था पर आधारित थे। इनमें श्वेत, नीली आँखों वाले एवं नॉर्डिक, जर्मन आर्यों का स्थान सर्वोच्च था, जबकि सबसे निचले पायदान पर यहूदी थे।

(ii) हिटलर ने अपने विचार मुख्यत: चार्ल्स डार्विन तथा हर्बर्ट स्पेंसर से लिए थे। इसमें जहाँ चार्ल्स डार्विन ने प्राकृतिक नियमों को परिभाषित किया था, वहीं हर्बर्ट स्पेंसर ने 'सरवाइवल ऑफ दि फिटेस्ट' अर्थात् जो शक्ति से सम्पन्न व योग्य होगा वही जिन्दा बचेगा तथा जो निम्न होगा वह बाहर हो जाएगा, नियम प्रतिपादित किया।

(iii) यही अति जीविता का सिद्धान्त था तथा अति जीविता की अवधारणा को नात्सियों ने प्रयोग किया।

15. अमेरिका द्वारा दिए जा रहे ऋण की समाप्ति से जर्मनी पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर जर्मनी पर पड़ने वाले प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(i) वर्ष 1929 में आई आर्थिक महामन्दी के कारण अमेरिका की स्थिति दयनीय हो गई तथा इसके द्वारा जर्मनी को दिया जाने वाला ऋण बन्द कर दिया गया।

(ii) अमेरिकी आर्थिक समर्थन वापस लेने से वर्ष 1932 में जर्मनी का औद्योगिक उत्पादन वर्ष 1929 की अपेक्षा 40% रह गया था।

(iii) यहाँ मजदूर या तो बेरोजगार होते जा रहे थे या उनके वेतन में बहुत कमी आ चुकी थी। बेरोजगारों की संख्या 60 लाख तक जा पहुँची थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वर्साय की सन्धि की मुख्य धाराएँ क्या थीं?

उत्तर वर्साय की सन्धि की मुख्य धाराएँ निम्नलिखित हैं—

(i) युद्ध के आरोप—प्रथम विश्वयुद्ध का दोषी पाए जाने के कारण जर्मनी और उसके मित्र देशों पर युद्ध का आरोप और उसको जिम्मेदार ठहराया गया।

(ii) फ्रांस के प्रान्तों की वापसी—वर्ष 1870 ई. में जर्मनी ने फ्रांस के आल्सेस और लॉरेन नामक प्रान्त छीन लिए गए थे। इस सन्धि के बाद फ्रांस के प्रान्त उसे पुन: वापस मिल गए थे।

(iii) सार की कोयला खानें—जर्मनी स्थित 'सार' नामक कोयला खानें 15 वर्षों के लिए फ्रांस को दे दी गईं। इसके कारण जर्मनी के उद्योगों को भारी क्षति हुई।

(iv) जर्मनी पर सैनिक अंकुश—जर्मनी को मात्र एक लाख सैनिक रखने की छूट दी गई।

(v) जर्मनी के उपनिवेशों का बँटवारा—जर्मनी द्वारा स्थापित सभी उपनिवेशों को छीन लिया गया एवं जीते हुए देशों में उन्हें आपस में बाँट दिया गया।

2. जर्मनी में आर्थिक संकट एवं जर्मनी महामन्दी पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **जर्मनी में आर्थिक संकट**—वर्ष 1923 के आर्थिक संकट से राजनीतिक रैडिकलवादी विचारों को बल मिला। जर्मनी ने प्रथम विश्वयुद्ध ऋण लेकर लड़ा था। इस ऋण की क्षतिपूर्ति जर्मनी को स्वर्ण मुद्रा देकर करनी पड़ी। इन सबके परिणामस्वरूप जर्मनी के स्वर्ण भण्डार समाप्त होने की स्थिति में पहुँच गए। जब वर्ष 1923 में जर्मनी ने ऋण और हर्जाना देने से इनकार कर दिया, तब फ्रांसीसियों ने जर्मनी के सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्र रूर पर कब्जा कर लिया।

जर्मनी में महामन्दी—जर्मनी ने बड़े पैमाने पर कागजी मुद्रा छापना शुरू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप जर्मनी की मुद्रा मार्क का मूल्य तेजी से गिरने लगा। इस संकट को जर्मनी में अति मुद्रास्फीति के नाम से जाना गया है। वर्ष 1929 में सभी बैंक दिवालिया हो चुके थे, मजदूर बेरोजगार हो रहे थे और मध्यवर्ग को लाचारी एवं भुखमरी का डर सता रहा था।

अन्तत: जर्मनी को इस स्थिति से बाहर लाने के लिए अमेरिकी सरकार ने डॉव्स योजना बनाई। इस योजना में जर्मनी को आर्थिक संकट से दूर करने के लिए हर्जाने की शर्तों को पुन: निर्धारित किया गया।

3. हिटलर के उदय होने के प्रमुख कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर हिटलर के उदय होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) हिटलर के उदय के कारणों में वहाँ की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक त्रासदी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(ii) वर्साय की सन्धि के पश्चात् हिटलर वर्ष 1919 में जर्मन कामगार दल में शामिल हो गया, जिसे बाद में राष्ट्रवादी समाजवादी जर्मन कार्यकर्ता पार्टी के रूप में जाना गया। कुछ समय पश्चात् यही पार्टी नात्सी पार्टी के रूप में प्रचलित हुई।

(iii) वर्ष 1923 में हिटलर ने बर्लिन की ओर कूच करने, बवेरिया पर कब्जा करने तथा सत्ता पर नियन्त्रण स्थापित करने की योजना बनाई, जिसके परिणामस्वरूप हिटलर को गिरफ्तार करके उस पर देशद्रोह का मुकदमा चला, परन्तु जल्दी ही उसे रिहा कर दिया गया।

(iv) वर्ष 1929 के बाद आर्थिक मन्दी के कारण बैंक दिवालिया हो गए। सभी व्यवसाय बन्द होने के साथ-साथ मजदूर बेरोजगार होने लगे। इस समय नात्सीवाद एक जन-आन्दोलन के रूप में उभरकर सामने आया।

(v) नात्सी 'प्रोपेगैण्डा' में लोगों को एक बेहतर भविष्य की झलक दिखाई देती थी। वर्ष 1929 में नात्सी पार्टी को जर्मन संसद राइखस्टाग के लिए चुनावों में केवल 2.6% वोट मिले थे, परन्तु वर्ष 1932 तक आते-आते यह सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जिसे आगामी चुनाव में 37% वोट मिले।

4. नात्सी जर्मनी में युवाओं कि स्थिति कैसी थी? संक्षेप में बताइए।

उत्तर नात्सी जर्मनी में युवाओं की स्थिति निम्नलिखित तथ्यों से अवगत होती है—

(i) हिटलर का यह मानना था कि शक्तिशाली नात्सी समाज की स्थापना के लिए बच्चों को इसके विषय में ज्ञान देना अति आवश्यक है। अवांछित बच्चे और शिक्षकों को अर्थात् यहूदियों, जिप्सियों और विकलांग बच्चों को स्कूल से निकाल दिया गया। स्कूली पाठ्य-पुस्तकों को पुन: लिखा गया।

(ii) जर्मन और यहूदी बच्चे न तो एक साथ बैठ सकते थे और न ही एक साथ खेल सकते थे। नात्सी विचारों को सही ठहराने के लिए 'नस्ल विज्ञान' के नाम से एक नया विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया तथा गणित की कक्षाओं में भी यहूदियों की एक विशेष छवि बनाने की कोशिश की जाती थी।

(iii) बच्चों को सिखाया गया कि वे वफादार व आज्ञाकारी बनें और यहूदियों से नफरत व हिटलर की पूजा करें। युवाओं को दिए जाने वाले खेलकूद प्रशिक्षण में हिंसा एवं आक्रामकता की भावना पर बल दिया जाने लगा। हिटलर का विचार था कि बच्चों को विशेषत: मुक्केबाजी का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे बच्चे ताकतवर बन सकें।

5. जर्मनी में नात्सियों ने यहूदियों के विरुद्ध अपने विचारों के प्रचार के लिए मीडिया का किस प्रकार प्रयोग किया?

उत्तर जर्मनी में नात्सियों ने यहूदियों के विरुद्ध अपने विचारों के प्रचार के लिए मीडिया का प्रयोग निम्न प्रकार से किया—

(i) नात्सियों ने शासन के लिए, समर्थन प्राप्त करने के लिए तथा नात्सी विश्व दृष्टिकोण को फैलाने के लिए मीडिया का बहुत ही सोच-समझ कर प्रयोग किया। अपने विचारों को फैलाने के लिए इन्होंने रेडियो, पोस्टरों, फिल्मों, तस्वीरों, नारों एवं इश्तहारों को माध्यम बनाया। पोस्टरों में इनके दुश्मनों को उपहास के पात्र के रूप में दिखाया जाता था।

(ii) समाजवादियों और उदारवादियों को कमजोर और पथभ्रष्ट तत्त्वों के रूप में प्रस्तुत किया गया। समाजवादियों को विदेशी एजेण्ट कहकर बदनाम किया जाता था।

(iii) यह प्रचार फिल्मों के माध्यम से यहूदियों के प्रति घृणा को दिखाता था। मीडिया में 'द एटर्नल ज्यू' (अक्षय यहूदी) इससे सम्बन्धित

सर्वाधिक कुख्यात फिल्म थी। यहूदियों एवं जर्मनों के बीच कोई विशेष अन्तर नहीं था। लगभग दोनों एक जैसे ही दिखते थे, परन्तु परम्परा प्रिय यहूदियों को लम्बी दाढ़ी एवं काफ्तान (चोगा) पहने दिखाया जाता था।

(iv) मीडिया में यहूदियों को केंचुआ, चूहा और कीड़ा जैसे शब्दों से सम्बोधित किया जाता था। नात्सियों ने लोगों के सामने स्वयं को सबकी समस्याओं का निदान करने वाले के रूप में पेश किया।

6. हिटलर की महिलाओं के प्रति नीति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर हिटलर की महिलाओं के प्रति नीति निम्नलिखित है—

(i) पुरुषों का वर्चस्व—नात्सी जर्मनी में बच्चों को प्राय: सिखाया जाता था कि महिलाएँ, पुरुषों से सदैव भिन्न होती हैं। यहाँ लड़कों को शिक्षा दी जाती थी कि वे आक्रामक तथा शक्तिशाली बनें। वहीं महिलाओं को बताया जाता था कि वे अच्छी माताएँ बनें तथा शुद्ध नस्ल के बच्चों को जन्म दें।

(ii) लड़कियों की स्थिति—लड़कियों को प्राय: शिक्षा दी जाती थी कि वे अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा दें। इन्हें आर्य संस्कृति तथा नस्ल की ध्वजवाहक बनने पर जोर दिया गया।

(iii) पुरस्कार एवं दण्ड—जो महिलाएँ नस्लीय रूप से अवांछित बच्चे पैदा करती थीं, उन्हें दण्डित किया जाता था और जो नस्लीय रूप से वांछित बच्चे पैदा करती थीं, उन्हें पुरस्कृत किया जाता था। उनका अस्पतालों में उत्तम ढंग से इलाज किया जाता था और उन्हें दुकानों तथा थियेटर के टिकटों एवं रेल किराए में छूट दी जाती थीं।

(iv) महिलाओं के लिए आचार संहिता—सभी आर्य महिलाओं के लिए एक आचार संहिता थी। जो आर्य महिलाएँ निर्दिष्ट आचार संहिता से भटकती थीं, उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था। जो महिलाएँ यहूदियों, रूस तथा पोलैण्ड के निवासियों से सम्बन्ध बनाती थीं, उनका सर मुँडवा दिया जाता था तथा उनके गले में तख्ती लटका दी जाती थी और जिस पर लिखा होता था "मैंने राष्ट्र के सम्मान को मलिन किया है।"

7. हिटलर की 'लेबेन्स्राउम' की भू-राजनीतिक अवधारणा की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं? कोई पाँच विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर हिटलर की 'लेबेन्स्राउम' की भू-राजनीतिक अवधारणा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) हिटलर की विचारधारा का दूसरा पहलू लेबेन्स्राउम या जीवन परिधि की राजनीतिक अवधारणा से सम्बन्धित था।

(ii) हिटलर का विश्वास था कि मातृभूमि पर अधिक-से-अधिक कब्जा करने पर इसका क्षेत्रफल बढ़ेगा तथा नई जगह पर एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने में कोई मुश्किल भी नहीं आएगी।

(iii) इस तरीके से शक्ति में वृद्धि एवं राष्ट्र के लिए संसाधन को बढ़ाया जा सकता है।

(iv) हिटलर पूर्व की ओर जर्मन सीमाओं को फैलाना चाहता था, जिससे सभी जर्मनों को भौगोलिक दृष्टि से एक ही जगह एकत्रित किए जा सके।

(v) पोलैण्ड इस अवधारणा की पहली प्रयोगशाला बना।

❑❑❑

4

वन्य समाज और उपनिवेशवाद

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 19वीं सदी में डचों ने वन कानून लागू कर ग्रामीणों के जंगल तक पहुँचकर इन पर कई तरह के नियन्त्रण स्थापित कर दिए। इनके कानूनों के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 19वीं सदी में डचों ने वन कानून लागू कर ग्रामीणों के जंगल तक पहुँचकर इन पर कई तरह के नियन्त्रण स्थापित कर दिए; जैसे-

(i) इन कानूनों का उद्देश्य था कि केवल विशेष कार्य; जैसे-नाव या घर बनाने आदि के लिए सिर्फ चुने हुए जंगलों से कड़ी निगरानी में लकड़ी काटी जा सकती थी।

(ii) ग्रामीणों को पशुओं को चराने, बिना परमिट लकड़ी ढोने, जंगल से गुजरने वाली सड़क पर घोड़ागाड़ी चलाने अथवा जानवरों पर चढ़कर आने-जाने के लिए दण्डित किया जाने लगा।

(iii) 1882 ई. में अकेले जावा से ही 28,000 स्लीपरों का निर्यात किया गया। इसके लिए श्रम की उपलब्धता की भी आवश्यकता थी, जिसमें पेड़ काटने, लट्ठे को ढोने और स्लीपर तैयार करने जैसे कार्य निहित थे।

2. औपनिवेशिक सरकार कृषि योग्य भूमि को चरागाह भूमि में क्यों परिवर्तित करना चाहती थी? इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर औपनिवेशिक सरकार कृषि योग्य भूमि को चरागाह भूमि में निम्न कारणों से परिविर्तित करना चाहती थी—

(i) औपनिवेशिक अधिकारियों को बिना खेती की जमीन 'बेकार' लगती थी, क्योंकि इससे उनको न तो लगान मिलता था और न उपज।

(ii) परिवर्तित कृषि योग्य भूमि पर वे गेहूँ, कपास, जूट एवं अन्य कृषि उत्पादों का उत्पादन बढ़ाना चाहते थे, क्योंकि ब्रिटेन में इनकी आवश्यकता थी। वे इसे कृषि योग्य भूमि बनाकर अधिकाधिक राजस्व प्राप्त करना चाहते थे।

3. अधिकतर पर्यावरण विज्ञानी इस विचार के हैं कि वनों के निकटवर्ती स्थानों पर रहने वाले लोगों को वन संरक्षण में संलिप्त होना चाहिए। क्या आप इस मत से सहमत हैं? वर्णन कीजिए।

उत्तर हाँ, हम इस मत से सहमत हैं कि वनों के निकटवर्ती स्थानों पर रहने वाले लोगों को वन संरक्षण में संलिप्त होना चाहिए। इसके कारण निम्न प्रकार हैं—

(i) वैज्ञानिक वानिकी तथा नीतियों ने लोगों को वनों से दूर कर दिया।

(ii) वनों से लकड़ी प्राप्त करना गाँव वालों के लिए दुर्लभ होता जा रहा था।

(iii) ध्यातव्य हो कि मिजोरम से लेकर केरल तक के वन सिर्फ इस कारण बच पाए, क्योंकि ग्रामीणों ने सरना, देवराकुडु, कान, राई इत्यादि नामों से इनको पवित्र बगीचा समझकर इनकी रक्षा की।

(iv) ध्यातव्य हो कि कुछ गाँवों के लोग वन रक्षकों पर निर्भर होने की अपेक्षा स्वयं पहरेदारी करने लगे, जिसमें परिवार के सभी लोग बारी-बारी से अपना योगदान देते हैं।

(v) यह उल्लेखनीय है कि अब स्थानीय वन समुदाय और पर्यावरणविद् वन प्रबन्धन के वैकल्पिक उपायों के विषय में सोचने लगे हैं। अत: वनों के निकटवर्ती रहने वाले लोगों को इसके संरक्षण में अवश्य संलिप्त होना चाहिए।

4. वन उन्मूलन किसे कहते हैं? वन उन्मूलन होने के कोई दो कारण बताइए।

उत्तर वनों के समाप्त होने की प्रक्रिया को वन उन्मूलन या वन विनाश कहते हैं। भारत में वन विनाश की प्रक्रिया वर्षों पहले प्रारम्भ हुई थी। औपनिवेशिक शासन के अधीन यह प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित एवं व्यापक हो गई। वन उन्मूलन होने के कारण निम्नलिखित हैं—

(i) कृषि के लिए भूमि—समय के साथ जिस प्रकार जनसंख्या बढ़ती गई, उसी प्रकार भोजन की माँगें भी बढ़ने लगीं, जिसके परिणामस्वरूप कृषक अधिक उत्पादन के लिए जंगलों को साफ करके खेती करने लगे।

(ii) शाही नौसेना के लिए लकड़ी आपूर्ति—19वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड की शाही नौसेनाओं के लिए मजबूत और टिकाऊ लकड़ी की आपूर्ति की आवश्यकता थी। शाही नौसेना के लिए लकड़ी की आपूर्ति को बनाए रखने के लिए खोजकर्ताओं को भारत के वन संसाधनों का पता लगाने के लिए भेजा गया था।

5. व्यावसायिक वानिकी के उदय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर व्यावसायिक वानिकी से तात्पर्य , व्यवस्थित ढंग से एवं संरक्षण के साथ वनों का व्यावसायिक प्रयोग करना है। ऐसी ही अवधारणा को भारत में अंग्रेजों द्वारा प्रयोग में लाया गया था। जब जंगलों को तेजी से नष्ट किया जा रहा था, तब ब्रिटिश सरकार ने **डायट्रिच ब्रैण्डिस** नामक एक जर्मन विशेषज्ञ को देश का पहला वन महानिदेशक नियुक्त किया। ब्रैण्डिस को आभास हुआ कि व्यवस्थित ढंग से जंगलों के प्रबन्धन एवं संरक्षण के लिए यहाँ के लोगों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है तथा वनों की कटाई एवं पशुओं को चराने जैसी गतिविधियों पर पाबन्दी लगाकर ही जंगलों को लकड़ी उत्पादन के लिए आरक्षित किया जा सकेगा। इन प्रयासों से ब्रैण्डिस ने **भारतीय वन अधिनियम, 1865** को सूत्रबद्ध किया।

6. भारत में 1878 ई. के वन अधिनियम के किन्हीं तीन सुधार प्रावधानों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारत में 1878 ई.के वन अधिनियम के तीन प्रमुख सुधार प्रावधान निम्नलिखित हैं—

(i) भारतीय वनों को तीन भागों में विभक्त किया गया
(a) आरक्षित (b) सुरक्षित (c) ग्रामीण वन

(ii) सर्वश्रेष्ठ एवं घने जंगलों को आरक्षित वन की श्रेणी में रखा गया है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोग इन जंगलों से अपने उपयोग के लिए कोई भी सामान नहीं ले सकते थे।

(iii) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले व्यक्ति घर बनाने के लिए सामुदायिक या ग्रामीण वनों से ही लकड़ियाँ प्राप्त कर सकते थे।

7. औपनिवेशिक शासन के समय कई कारणों से खेती का विस्तार हुआ, जिससे वनों का विनाश भी हुआ। चर्चा कीजिए।

उत्तर औपनिवेशिक शासन के समय खेती का विस्तार हुआ, जिसके परिणामस्वरूप वनों का पर्याप्त विनाश भी हुआ। इसके निम्न कारण थे—

(i) यूरोप में कारखानों की संख्या में वृद्धि हो रही थी। औद्योगिक उत्पादन के लिए कच्चे माल की जरूरत थी। खाद्यान्न फसलों की भी माँग बड़े स्तर पर थी।

(ii) उनकी माँगों को पूरा करने के लिए अंग्रेजों ने खाद्यान्न फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन दिया; जैसे—चाय, कॉफी व रबड़।

(iii) उत्पादन को बढ़ाने के लिए खेती योग्य जमीन की आवश्यकता थी।

8. वर्ष 1905 में औपनिवेशिक सरकार ने दो-तिहाई वनों को आरक्षित करने और घुमन्तू खेती, शिकार एवं वनों के उत्पादों के संग्रह पर रोक लगाने का प्रस्ताव रखा। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वर्ष 1905 में औपनिवेशक सरकार ने दो-तिहाई वनों को आरक्षित करने और घुमन्तू खेती, शिकार एवं वन्य उत्पादों के संग्रह पर रोक लगाने का प्रस्ताव रखा, क्योंकि गाँव के कुछ लोगों को आरक्षित वनों में रहने की अनुमति इस शर्त पर दी गई कि वे वन विभाग के लिए कटाई, ढुलाई एवं वनों की आग से रक्षा का काम नि:शुल्क करेंगे। कालान्तर में इन्हें वन ग्राम नाम से जाना जाने लगा। औपनिवेशिक अधिकारियों के कुछ फैसलों से लोगों का बड़े स्तर पर विस्थापन हुआ और उन्हें कुछ कष्ट भी सहने पड़े। इसके पश्चात् दो भयानक अकाल पड़े- पहला वर्ष 1899-1900 एवं दूसरा वर्ष 1907-08 में पड़ा था। काँगेर वन के धुरवा समुदाय के लोग मुद्दों पर चर्चाएँ करने में अग्रणी थे, फिर भी यहाँ कोई इनका नेतृत्वकर्ता नहीं था।

9. "मिजोरम से लेकर केरल तक के वन केवल इस कारण बच पाए, क्योंकि यहाँ के ग्रामीणों ने सरना, देवराकुडु, कान, राई इत्यादि नामों से पवित्र बगीचा समझकर इनकी रक्षा की है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1980 के दशक में एशिया एवं अफ्रीका की सरकारों को यह लगने लगा था कि वैज्ञानिक वानिकी और वन समुदायों को जंगल से बाहर रखने की नीतियों के कारण बार-बार टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके परिणामस्वरूप वनों का संरक्षण अधिक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हो गया था। इसके लिए सरकार ने यह माना कि इस लक्ष्य को हासिल करने में इन प्रदेशों में रहने वाले लोगों की सहायता लेनी पड़ेगी। मिजोरम से लेकर केरल तक के वन केवल इस कारण बच पाए, क्योंकि यहाँ के ग्रामीणों ने सरना, देवराकुडु, कान, राई इत्यादि नामों से पवित्र बगीचा समझकर इनकी रक्षा की एवं इनको सहयोग दिया गया। कुछ गाँवों के लोग वन रक्षकों पर निर्भर होने की अपेक्षा इनकी स्वयं पहरेदारी करते हैं, जिसका शुल्क वह स्वयं वहन किया करते थे।

10. युद्धों से जंगल कैसे प्रभावित होते हैं?

उत्तर युद्धों से जंगल निम्नलिखित रूपों से प्रभावित होते हैं—

(i) युद्ध के समय लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जिसकी पूर्ति के लिए वनों को काटा जाता है। उदाहरण स्वरूप; 19वीं सदी में इंग्लैण्ड की रॉयल नेवी (शाही नौसेना) के लिए जलयान, ओक के वृक्षों से बनाए जाते थे।

(ii) युद्ध के समय विस्फोटों इत्यादि की आग से वनों को काफी नुकसान होता है।

(iii) सरकार युद्ध के समय लकड़ी के भण्डारों को जला देती है, ताकि ये संसाधन दुश्मन के हाथ न लगें। इण्डोनेशिया के डच शासकों ने इसी नीति का सहारा लिया था।

11. वन अधिनियम के पश्चात् शिकार पर पड़े प्रभावों को बताइए।

उत्तर वन अधिनियम के पश्चात् शिकार पर पड़े प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(i) वन अधिनियम से पूर्व जंगलों में या उसके आस-पास खेती करने वाले लोग छोटे जानवरों का शिकार कर अपना जीवन-यापन करते थे। यह पारम्परिक प्रथा नए अधिनियम के अनुसार गैर-कानूनी हो गई थी।

(ii) वन कानूनों ने लोगों को शिकार के परम्परागत अधिकार से वंचित किया, जिसके परिणामस्वरूप शिकार करते हुए पकड़े जाने वालों को अवैध शिकार के लिए दण्डित किया जाने लगा। शिकार करने के इस अवैध माध्यम को उपनिवेशवादियों द्वारा पोचिंग कहा गया।

(iii) अंग्रेजों के अनुसार, बड़े जंगली जानवर बर्बर एवं आदिम समाज के प्रतीक चिह्न थे। औपनिवेशिक शासन के दौरान शिकार का चलन बड़े पैमाने पर हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कई प्रजातियाँ लगभग सम्पूर्ण रूप से समाप्त हो गईं। इनका यह मानना था कि ये खतरनाक जानवरों को मारकर भारत को सभ्य बना रहे हैं।

12. अपराधी कबीले किसे कहा जाता है? संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर अपराधी कबीले शब्द का प्रयोग सामान्यत: घुमन्तू समुदायों के लिए हुआ है। भारत में वन उत्पादों का व्यापार वृहत स्तर पर मध्य काल से हो रहा था, जिसके कारण अंग्रेजों के आगमन से वन उत्पादों का व्यापार नियमित रूप से क्रियान्वित हुआ। इस प्रक्रिया के कारण मद्रास प्रेसीडेंसी के कोरावा, कराचा व येरूकुला जैसे अनेक चरवाहे और घुमन्तू समुदायों को अपनी जीविका को खोना पड़ा। इनमें से कुछ जातियों को 'अपराधी कबीले' कहा जाने लगा तथा इन्हें फैक्ट्रियों, खदानों व बागानों में सरकार की निगरानी में कार्य करने के लिए मजबूर किया जाने लगा, जिसके परिणामस्वरूप स्थिति दयनीय हो गई।

13. वन अधिनियम का लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर वन अधिनियम का आम जन-जीवन पर प्रभाव निम्नलिखित है—

(i) वन अधिनियम के लागू होने के पश्चात् वन में रहने वाले लोगों और गाँव वालों ने अनेक कठिनाइयों का अनुभव किया। इस

अधिनियम के प्रावधानों ने वनों पर स्थानीय लोगों के पारम्परिक अधिकारों को प्रतिबन्धित किया।

वन में रहने वाले समुदायों की अधिकांश पारम्परिक गतिविधियों को इस अधिनियम द्वारा अवैध घोषित कर दिया गया।

(ii) जंगल में रहने वाले गार्डों रक्षकों ने उन स्थानीय लोगों से रिश्वत लेना प्रारम्भ कर दिया, जो जंगल से लकड़ी की चोरी करते हुए पकड़े जाते थे।

14. वैज्ञानिक वानिकी के किन्हीं तीन दोषों को बताइए।

उत्तर वैज्ञानिक वानिकी के दोष निम्नलिखित थे—

(i) इस पद्धति में विविध प्रजाति के प्राकृतिक वनों का नुकसान हुआ, क्योंकि वनों की व्यापक पैमाने पर कटाई हुई।

(ii) इस पद्धति में ऐसे पेड़ों को जंगलों में लगाया गया, जिनसे सिर्फ इमारती लकड़ियाँ प्राप्त हों। इससे अनेक समुदायों की जीविका खत्म हो गई।

(iii) विविध प्रजाति वाले प्राकृतिक वनों के स्थान पर एक ही किस्म के पेड़ लगाने से पारिस्थितिकी सन्तुलन पर भी दुष्प्रभाव पड़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उपनिवेशी भारत में वन उन्मूलन प्रक्रिया को समझाइए एवं वन उन्मूलन के प्रमुख कारणों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

उत्तर वन उन्मूलन भारत में वर्षों से चली आ रही एक विस्तृत प्रक्रिया है। भारत में औपनिवेशिक परिस्थितियों के कारण वनों का बड़े स्तर पर ह्रास हुआ है। इसके पीछे अनेक कारण विद्यमान थे; जैसे—

वन उन्मूलन के कारण—वनों के समाप्त होने की प्रक्रिया को वन उन्मूलन या वन विनाश (Deforestation) कहते हैं। भारत में वन विनाश की प्रक्रिया वर्षों पहले प्रारम्भ हुई थी। औपनिवेशिक शासन के अधीन यह प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित एवं व्यापक हो गई। वन उन्मूलन होने के कारण निम्नलिखित हैं—

1. **कृषि के लिए भूमि** (Land for Cultivation)—समय के साथ जिस प्रकार जनसंख्या बढ़ती गई, उसी प्रकार भोजन की माँगें भी बढ़ने लगीं जिसके परिणामस्वरूप कृषक अधिक उत्पादन के लिए जंगलों को साफ करके खेती करने लगे। औपनिवेशिक काल के दौरान कृषि के व्यवसायीकरण (Commercialisation of Agriculture) की प्रक्रिया में किसानों को व्यावसायिक फसलों (Commercial Crops); जैसे—पटसन, गन्ना, गेहूँ व कपास को बड़े स्तर पर विकसित करने और खेती क्षेत्र का विस्तार करने के लिए मजबूर किया गया, जिसके परिणामस्वरूप जंगल कम हो गए और कृषि क्षेत्र वर्ष 1880 से 1920 के बीच 6.7 मिलियन हेक्टेयर तक बढ़ गया। अत: कृषि विस्तार हेतु सर्वप्रथम जंगलों की सफाई की गई एवं जमीन की जुताई की गई।
2. **शाही नौसेना के लिए लकड़ी आपूर्ति** (Timber Supply for Royal Navy)—19वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड की शाही नौसेनाओं के लिए मजबूत और टिकाऊ लकड़ी की आपूर्ति की आवश्यकता थी। 1820 के दशक में शाही नौसेना के लिए लकड़ी की आपूर्ति को बनाए रखने हेतु खोजकर्ताओं को भारत के वन संसाधनों का पता लगाने के लिए भेजा गया था। भारत में एक दशक के अन्दर बड़ी मात्रा में बलूत ओक के जंगल काटे गए, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक मात्रा में वनों का निर्यात इंग्लैण्ड में किया गया।
3. **रेलवे लाइनों का प्रसार** (Expansion of Railway Network)—1850 के दशक में रेलवे लाइनों का प्रसार आरम्भ हुआ। रेलवे इंजनों को चलाने के लिए ईंधन के रूप में एवं रेल की पटरियों को जोड़े रखने के लिए 'स्लीपरों' के रूप में लकड़ी की आवश्यकता थी। एक मील लम्बी रेल पटरी के लिए 1,760-2,000 स्लीपरों की आवश्यकता पड़ती थी। रेलवे की इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारी मात्रा में पेड़ काटे गए। अकेले मद्रास प्रेसीडेंसी में 1850 के दशक में प्रतिवर्ष 35,000 पेड़ स्लीपरों के लिए काटे गए। सरकार ने आवश्यक मात्रा की आपूर्ति के लिए निजी ठेके भी दिए।
4. **बागानों के लिए भूमि की बाड़ाबन्दी** (Enclosure of Areas for Plantation)—यूरोप में चाय, कॉफी और रबड़ की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए इन वस्तुओं के बागान बने और इनके लिए प्राकृतिक वनों को भी साफ किया गया। औपनिवेशिक सरकार ने वनों को अपने नियन्त्रण में लेकर इन्हें बहुत ही कम मूल्य पर यूरोपीय बागान मालिकों को सौंप दिया। इन क्षेत्रों में बाड़ाबन्दी (Enclosure) करके जंगलों को साफ कर दिया गया एवं चाय-कॉफी की खेती की जाने लगी।

2. भारतीय वन सेवा की स्थापना किसने और किस वर्ष की? प्रबन्धन के विषय में उसके क्या विचार थे? इसके लिए उसने क्या किया?

उत्तर डायट्रिच ब्रैण्डिस ने भारतीय वन सेवा की स्थापना 1864 ई. में की थी। वन प्रबन्धन के सम्बन्ध में उसके प्रमुख विचार इस प्रकार थे—

(i) वनों के प्रबन्धन के लिए उचित प्रणाली अपनानी होगी और लोगों को वन संरक्षण विज्ञान में प्रशिक्षित करना होगा।

(ii) इस प्रणाली के अन्तर्गत कानूनी प्रतिबन्ध लगाने होंगे।

(iii) वन संसाधनों के सम्बन्ध में कुछ सुनिश्चित नियम बनाने होंगे, ताकि वन संसाधनों को अत्यधिक दोहन से बचाया जा सके।

(iv) वनों को इमारती लकड़ी के उत्पादन के लिए संरक्षित करना होगा। इस उद्देश्य से वनों में वृक्ष काटने तथा पशुचारण को सीमित करना होगा।

(v) जो व्यक्ति नई प्रणाली के नियमों की परवाह न करते हुए वृक्ष काटता है, उसे दण्डित करना होगा।

(vi) वनों के प्रबन्धन हेतु ब्रैण्डिस ने 1865 ई. में भारतीय वन अधिनियम बनाने में सहयोग किया।

(vii) 'इम्पीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट' की स्थापना वर्ष 1906 में देहरादून में की गई ।

(viii) वैज्ञानिक वानिकी की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

(ix) वनों के प्रबन्धन के सम्बन्ध में जंगलों का सर्वेक्षण किया, विभिन्न किस्म के पेड़ों वाले क्षेत्र की खोज की और वन प्रबन्धन के लिए योजनाएँ बनाई गईं।

3. वन विनाश और औपनिवेशिक वन कानूनों के जन-जीवन पर पड़े प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वनों के विनाश और सरकार द्वारा बनाए गए वन कानूनों ने वनों में रहने वाली जनजातियों एवं वनों के सीमान्त क्षेत्रों में बसे ग्रामीणों के जीवन को निम्न प्रकार से प्रभावित किया—

(i) वनों का आरक्षण—नए वन कानूनों ने ग्रामवासियों की समस्याओं को बढ़ा दिया, क्योंकि ग्रामवासी अपनी अधिकांश दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों पर आश्रित थे, जबकि नए कानून के अनुसार आरक्षित वनों में लकड़ी काटना, कन्द-मूल, फल इकट्ठा करना तथा पशुचरण आदि गैर-कानूनी घोषित किया गया।

(ii) स्थानान्तरी कृषि पर प्रतिबन्ध—स्थानान्तरी कृषि (घुमन्तू कृषि), कृषि की सर्वाधिक प्राचीनतम प्रणालियों में से एक है। इस कृषि प्रणाली में जंगल के कुछ भागों को बारी-बारी से काटा और जलाया जाता है।

(iii) शिकार पर प्रतिबन्ध—ब्रिटिश सरकार ने वनों और सीमान्त क्षेत्रों में शिकार पर पूर्ण पाबन्दी लगा दी थी और विभिन्न वन कानूनों के द्वारा इसे गैर-कानूनी घोषित किया गया। प्राचीनकाल से ही वनवासी अपने भोजन के लिए छोटे-छोटे वन्यजीवों पर आश्रित थे, परन्तु वन कानूनों ने उनकी पारम्परिक प्रथा को गैर-कानूनी बना दिया। शिकार करने का अधिकार केवल राजाओं और अंग्रेजों तक ही सीमित रहा।

(iv) व्यवसाय परिवर्तन—भारत में प्राचीनकाल से वन उत्पादों का व्यापार बड़े पैमाने पर होता रहा है। घुमन्तू समुदायों द्वारा वन उत्पादों; जैसे- बाँस, मसाले, गोंद, राल, खाल, सींग, हाथीदाँत और रेशम आदि की बिक्री एक सामान्य प्रक्रिया थी, परन्तु औपनिवेशिक शासन में यह व्यवसाय पूरी तरह अंग्रेजों के नियन्त्रण में चला गया।

4. औपनिवेशिक काल में वन प्रबन्धन में आए परिवर्तन ने किन समूहों को और किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर औपनिवेशिक काल में वन प्रबन्धन में आए परिवर्तनों ने झूम खेती करने वाले, बस्तर आदिवासियों, बागान मालिकों एवं व्यापार करने वाली कम्पनियों को प्रभावित किया था।

इन समूहों को निम्न प्रकार से प्रभावित किया—

(i) झूम खेती करने वालों को—औपनिवेशिक शासकों ने झूम खेती पर प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय लिया। इससे जंगलों में जो स्थानान्तरी कृषिकर्ता थे, उन्हें अपने पैतृक घरों को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। कई बड़े काश्तकारों को अपने व्यवसाय मजबूर होकर बदलने पड़े तथा परिणामस्वरूप कुछ किसानों ने इसके विरोध में विद्रोह कर दिया।

(ii) बस्तर के आदिवासियों को—बस्तर में रहने वाले मारिया, मुरिया, गोण्ड एवं धुरवा आदि आदिवासी समुदायों को औपनिवेशिक वन प्रबन्धन में आए बदलावों ने अत्यधिक प्रभावित किया। सरकार द्वारा दो-तिहाई जंगली भाग को संरक्षित रखने, स्थानान्तरी कृषि पर प्रतिबन्ध, शिकार एवं जंगली उत्पादों के संग्रहण पर रोक आदि के कारण इन समुदायों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा।

(iii) लकड़ी और वन उत्पादों का व्यापार करने वाली कम्पनियों को—इन कम्पनियों को अत्यधिक लाभ पहुँचाया गया। उन्हें ब्रिटिश सरकार का समर्थन प्राप्त था। वनों पर वन विभाग का नियन्त्रण हो जाने के पश्चात् वन उत्पादों के व्यापार को अत्यधिक बल मिला। ब्रिटिश सरकार ने कुछ विशेष क्षेत्रों में व्यापार के अधिकार यूरोपीय कम्पनियों को दे दिए। इस प्रकार से वन उत्पादों पर ब्रिटिश सरकार का नियन्त्रण हो गया।

(iv) बागान मालिकों को—अधिकांश बागान मालिक यूरोपीय थे। वे चाय, कॉफी और नील आदि की खेती करके अधिक-से-अधिक लाभ कमाते थे। औपनिवेशिक काल में वन प्रबन्धन में आए परिवर्तनों के बाद बागान मालिकों ने स्थानीय लोगों व भूमिहीन श्रमिकों का शोषण करना शुरू कर दिया तथा उत्पादों के निर्यात से अत्यधिक धन कमाया।

❑❑❑

5

आधुनिक विश्व चरवाहे

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चरवाहा समुदाय के लोगों की जीवन पद्धति किन कारकों पर निर्भर करती है? किन्हीं तीन कारकों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर चरवाहा समुदाय के लोगों की जीवन पद्धति निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती हैं—

(i) उनके पशु किसी प्रदेश में कितने समय तक रह सकते हैं, ताकि मौसम बदलने पर उनके पशुओं पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

(ii) पशुचारण के लिए घास तथा पानी कहाँ मिल सकता है।

(iii) वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने में कितना समय लगता है। इस बात को ध्यान में रखकर ही वे अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं।

2. बेकार भूमि से सम्बन्धित वन कानून को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर औपनिवेशिक शासन को यह विश्वास था कि वह चरवाहा भूमि, जिस पर खेती नहीं की जा रही हो, 'बेकार' भूमि है। इस तरह की भूमि को खेती के लिए उपयोगी बनाने का कार्य किया। अंग्रेजों ने इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए 19वीं सदी के मध्य से देश के विभिन्न भागों में परती अथवा बेकार भूमि विकास के लिए कानून बनाए जाने लगे। सरकार की ओर से कुछ विशेष लोगों को इस तरह की जमीन सौंप दी गई, जिसमें कई तरह की रियायतें भी दी गईं। इनमें से कुछ लोगों को गाँव का मुखिया बना दिया गया। ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाए गए वन अधिनियम ने चरवाहों के जीवन को बदल दिया। सरकार ने ऐसे जंगलों को आरक्षित वन घोषित किया।

3. उस अधिनियम का नाम बताइए, जिसे घुमन्तू चरवाहों की गतिविधियों को सीमित करने के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित किया गया। इस अधिनियम के कोई दो लक्षण भी बताइए।

उत्तर घुमन्तू चरवाहों की गतिविधियों को सीमित करने के लिए अपराधी जनजाति अधिनियम पारित किया गया।

अपराधी जनजाति अधिनियम के निम्नलिखित दो लक्षण हैं

(i) इस अधिनियम के द्वारा दस्तकारों, व्यापारियों तथा चरवाहों के अनेक समुदायों को अपराधी जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया।

(ii) इस अधिनियम के अन्तर्गत उनकी गतिविधियों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिए गए।

4. चराई कर का चरवाहों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर चराई कर का चरवाहों के जीवन पर निम्न प्रभाव पड़ा—

(i) 19वीं सदी के मध्य में चराई कर ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत की देहाती भूमि में पेश किया गया।

(ii) आय बढ़ाने के लिए सरकार ने जानवरों पर भी कर लागू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप मवेशी करों में निरन्तर वृद्धि हुई, यह कर व्यवस्था प्रतिदिन मजबूत होती गई।

(iii) 1850 से 1880 के दशकों के मध्य 'कर' वसूली का कार्य बोली लगाकर ठेकेदारों को सौंपा जाता था। 1880 के दशक तक आते-आते सरकार ने चरवाहों से प्रत्यक्ष रूप से कर वसूलना शुरू कर दिया। प्रत्येक चरवाहे को एक पास दिया गया, जिसका उपयोग वह चरागाह में प्रवेश करने के लिए करता था। इस पास को दिखाकर पहले कर देना पड़ता था उसके पश्चात् चरागाह में जाने की अनुमति दी जाती थी।

5. औपनिवेशिक काल में हुए बदलावों का घुमन्तू चरवाहों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर बेकार भूमि कानून, वन अधिनियम, अपराधी जनजाति अधिनियम, चरवाहा कर आदि ने घुमन्तू चरवाहों के जीवन को प्रभावित किया। इनके प्रभाव निम्नलिखित थे—

(i) चरागाहों को सरकारी कब्जे में लेकर इन्हें खेतों में परिवर्तित किया जाने लगा, जिससे चरागाहों के लिए उपलब्ध इलाके सिकुड़ने लगे।

(ii) गड़रिये अपने पशुओं को स्वतन्त्रतापूर्वक वनों में नहीं ले जा सकते थे और न ही चरा सकते थे। पहले चरवाहे अपने मवेशियों को एक जगह से दूसरी जगह आसानी से चराने के लिए ले जाते थे। चारे की कमी होने के कारण जानवर बड़ी संख्या में भूख से मरने लगे।

6. मसाई का शाब्दिक अर्थ क्या है? यह समुदाय कहाँ निवास करता है? इस समुदाय के बारे में संक्षेप में बताइए।

उत्तर मसाई शब्द की उत्पत्ति 'मा' शब्द से हुई है, जिसमें मा-साई का अर्थ 'मेरे लोग' होता है। औपनिवेशिक काल से पूर्व मसाइलैण्ड का क्षेत्र उत्तरी केन्या से लेकर तंजानिया के घास मैदानों (Steppes) तक फैला हुआ था।

19वीं शताब्दी के अन्त में यूरोप की साम्राज्यवादी शक्तियों ने अफ्रीका में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए विद्रोह शुरू कर दिया और बहुत सारे क्षेत्रों को छोटे-छोटे उपनिवेशों में परिवर्तित करके अपने कब्जे में ले लिया। कालान्तर में सरकार ने गोरों को बसाने के लिए बेहतरीन चरागाहों को अपने कब्जे में ले लिया। मसाइयों को दक्षिणी केन्या और उत्तरी तंजानिया के छोटे से क्षेत्र में सीमित कर दिया गया।

7. आरक्षित वनों एवं संरक्षित वनों के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आरक्षित वनों एवं संरक्षित वनों में निम्नलिखित अन्तर हैं—

आरक्षित वन	संरक्षित वन
वाणिज्यिक रूप से कीमती लकड़ी पैदा करने वाले वनों को 'आरक्षित वन' घोषित कर दिया गया था।	इन वनों में चरवाहों को कुछ पारम्परिक अधिकार दिए गए थे, लेकिन उनकी आवाजाही पर कठोर प्रतिबन्ध लगे थे।
चरवाहों को इन वनों में घूमने की अनुमति नहीं थी।	चरवाहे इन वनों में घूम सकते थे, किन्तु उन्हें सरकार से अनुमति लेनी पड़ती थी।

8. जम्मू-कश्मीर के गुज्जर बकरवाल समुदाय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर जम्मू-कश्मीर का गुज्जर बकरवाल समुदाय 19वीं शताब्दी में अपनी भेड़ एवं बकरियों के लिए चरागाहों की खोज में यहाँ आया तथा कुछ समय बाद वह यहीं बस गया। सर्दियों में जब ऊँचे पर्वत बर्फ से ढके होते हैं, तो इस समुदाय के लोग अपने पशुओं के झुण्ड के साथ शिवालिक की निचली पहाड़ियों में रहने के लिए आ जाते हैं। सर्दियों में यहाँ मिलने वाली सूखी झाड़ियाँ ही उनके पशुओं के लिए चारा बनती हैं। वे पीरपंजाल के दर्रों को पार करते हुए कश्मीर की घाटी में प्रवेश करते हैं। जब गर्मियों में जमी हुई बर्फ पिघल जाती है और चारों तरफ हरियाली छा जाती है, तब ये लोग पुन: ऊँची पहाडियों की ओर जाने की तैयारी शुरू कर देते हैं। इस समय उगने वाली अंकुरित घास पशुओं को पौष्टिक चारा प्रदान करती है। गुज्जर गड़रिये बुग्याल में मिलने वाले रिंगल (एक तरह का पहाड़ी बाँस) और घास से बने मण्डपों में रहते हैं।

9. हिमाचल प्रदेश के घुमन्तू चरवाहे कौन थे? इनकी प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर गद्दी चरवाहे हिमाचल प्रदेश के घुमन्तू चरवाहे थे। इनकी प्रमुख विशेषताएँ अग्रलिखित हैं—

(i) ये चरवाहे भी गुज्जर बकरवाल की भाँति मौसम के अनुसार अपना स्थान बदलते थे। सर्दियों में गद्दी चरवाहे अपने पशुओं के झुण्ड को शिवालिक की निचली पहाड़ियों के जंगलों में उगने वाली झाड़ियों में चराते थे।

(ii) 19वीं सदी में बहुत-से गुज्जर चरवाहे जम्मू और कश्मीर से हरे-भरे चरागाहों की खोज में उत्तर की पहाड़ियों में आकर बस गए।

(iii) सितम्बर तक वे अपनी वापसी प्रारम्भ कर देते थे। वापसी के समय ये लाहौल एवं स्पीति में कुछ समय के लिए रुकते थे।

10. राइका समुदाय कहाँ निवास करते थे? उनकी जीवन-शैली की कोई तीन विशेषताएँ बताइए। **(2016, 12)**

उत्तर राइका समुदाय के लोग राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में निवास करते थे।

इनकी जीवन शैली की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) वर्ष 1947 से पहले ये सिन्ध की ओर पलायन करते थे और अपने पशुओं को सिन्धु नदी के किनारे चराते थे।

(ii) यह समुदाय जिस क्षेत्र में रहता था वहाँ वर्षा प्राय: बहुत कम होती थी और वर्षा का समय निश्चित भी नहीं था। इसके कारण इस समुदाय ने कृषि के साथ-साथ पशुचारण भी प्रारम्भ कर दिया।

(iii) राइकाओं के एक समुदाय को मारू राइका कहा जाता था। इस समुदाय के लोग राजस्थान में जैसलमेर के निकट थार रेगिस्तान में निवास करते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मसाइयों की चरवाही भूमि के नष्ट होने पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर 19वीं सदी के अन्त तक ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार पूर्वी अफ्रीका में भी स्थानीय किसानों को अपनी खेती के क्षेत्रफल को अधिक-से-अधिक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करने लगी। खेती के विस्तार के साथ-साथ चरागाह खेतों में बदलने लगे। 1885 ई. में ब्रिटिश केन्या और जर्मन तन्जानिया के मध्य एक अन्तर्राज्यीय सीमा निर्धारित कर मसाइलैण्ड को दो भागों में विभाजित कर दिया गया। औपनिवेशिक शासन के अन्त तक आते-आते निम्न परिवर्तन हो चुके थे—

(i) इस समय बहुत-से चरागाह शिकारगाह में परिवर्तित हो चुके थे; जैसे—केन्या में मसाई मारा व साम्बूरू नेशनल पार्क और तन्जानिया में सेरेन्गेटी पार्क।

(ii) घास के बिना पशु (मवेशी, बकरियाँ और भेड़ें) कुपोषण का शिकार हो जाते थे, जिससे चरवाहों के परिवार और बच्चों के लिए भोजन कम पड़ने लगता है।

(iii) किलिमन्जारो जल परियोजना अंबोसेली नेशनल पार्क से होकर गुजरती है, लेकिन यहाँ रहने वाले समुदाय न तो पीने के लिए और न ही सिंचाई के लिए इस परियोजना के पानी का उपयोग कर सकते हैं।

2. दक्षिणी भारत के दो प्रमुख क्षेत्रों अर्थात् कर्नाटक तथा आन्ध्र प्रदेश के चलवासी चरवाहों की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर गोल्ला, कुरूमा और करूबा महत्त्वपूर्ण चरवाहा समुदाय थे। सूखे मध्य पठार कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश के गोल्ला समुदाय के लोग मुख्यत: गाय-भैंस पालते थे, जबकि कुरूमा और कुरूबा समुदाय के लोग भेड़-बकरियाँ पालने का कार्य करते थे और हाथ के बुने कम्बल बेचते थे। ये लोग केवल चरवाही के कार्य में संलग्न नहीं थे, अपितु जीविकोपार्जन के लिए अन्य कई कार्यों में संलग्न थे। पहाड़ी चरवाहों के विपरीत इनका पलायन सर्दी एवं गर्मी से नहीं, बल्कि सूखे एवं बरसात के मौसम से निर्धारित होता था।

सूखे मौसम में ये तटीय क्षेत्रों की ओर चले जाते थे एवं बरसात के मौसम में ये वापिस चले जाते थे, क्योंकि मानसून के समय गीला दलदली क्षेत्र केवल भैंसों के अतिरिक्त अन्य जानवरों के लिए

अनुकूल नहीं होता। अतएव इन बचे हुए जानवरों के लिए इन्हें सूखे पठारी इलाकों में ले जाना आवश्यक था।

3. अपने जीवन को चलायमान रखने के लिए चरवाहा समुदायों को अनेक तथ्यों का ध्यान रखना होता है। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर जीवन को चलायमान रखने हेतु चरवाहा समुदायों से सम्बन्धित उल्लेखनीय बातें निम्न हैं—

(i) सबसे पहले इन समुदायों को इस बात का ध्यान रखना पड़ता था कि वे कब और किस दिशा में प्रस्थान करें, अन्यथा उनके पशुओं और स्वयं की भूखे मरने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

(ii) उन्हें इस बात का पक्का अनुमान लगाना होता था कि किस जगह उन्हें अपने पशुओं के लिए चारा और पीने के लिए पानी मिल सकता है।

(iii) उनको इस बात का भी ध्यान रखना होता था कि कब, कहाँ और कैसे उनके पशुओं को हरी घास उपलब्ध हो सकती है।

(iv) उन्हें अपने प्रवास के हर ठिकाने पर रहने वाले लोगों से घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखने की आवश्यकता होती थी, अन्यथा वे अपने खेतों में उनके पशुओं को चरने से रोक सकते थे। आपसी मेल-मिलाप उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

(v) उनको इस बात का निश्चय करना होता था कि वे अपने रेवड़ (पशुओं का झुण्ड) के साथ एक स्थान पर कब तक ठहर सकते हैं।

(vi) अन्त में उन्हें अपने निर्वाह के लिए पशु चराने के साथ-साथ खेती करना और अपनी चीजों का आदान-प्रदान करना भी आना चाहिए।

4. उपनिवेशी शासन में चरवाहों का जीवन कैसे बदला? चार प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर जन-विरोधी सरकारी नीतियों के कारण चरागाह कम हो गए। कानूनों द्वारा चलवासी चरवाहों का संचालन नियन्त्रित किया गया तथा उनके करों में वृद्धि कर दी गई। उनके कृषि भण्डार में कमी आई, जिसके कारण उनका व्यापार तथा हस्तशिल्प बुरी तरह प्रभावित हुए। इसके निम्न चार कारण थे—

(i) उपनिवेशी सरकार सभी चरागाहों को कृषि फार्म में बदलना चाहती थी, इसलिए उनका लगान बढ़ा दिया गया था।

(ii) ब्रिटिश अधिकारी चरागाह सम्बन्धी भूमि के बारे में गलत विचार रखते थे। वे मानते थे कि सभी अकृषीय भूमि अनुत्पादक भूमि है, क्योंकि न तो इससे लगान आता है और न ही कृषि उत्पाद होता है। यह बंजर भूमि है, जिसे कृषि के अन्तर्गत नहीं लाया जा सकता है।

(iii) इसके अन्तर्गत 19वीं शताब्दी के मध्य तक वन कानून लागू कर दिए गए। कुछ वन आरक्षित घोषित कर दिए गए, इनमें चराई निषिद्ध थी। दूसरे वनों को संरक्षित घोषित कर दिया गया। इनमें कुछ पारम्परिक अधिकार दिए गए। उपनिवेशी अधिकारी विश्वास करते थे कि चराई करने से पौधे नष्ट हो जाते हैं। कुछ भागों में चरवाहों को चरागाह में जाने की आज्ञा लेनी होती थी तथा अधिक देर तक रुकने पर उन्हें जुर्माना देना पड़ता था।

(iv) 19वीं शताब्दी के मध्य से देश के भिन्न-भिन्न भागों में बंजर भूमि नियम लागू कर दिए गए। इस कानून के अनुसार, अकृषीय भूमि ले ली गई और कुछ चुनिन्दा लोगों को सौंप दी गई। इन लोगों को बहुत-सी छूट भी दी गईं। कुछ भूमि वास्तव में चरागाह भूमि थी। इस प्रकार चरागाह कम होते गए।

5. मान लीजिए कि जंगलों में जानवरों को चराने पर रोक लगा दी गई है। इस बात पर निम्नलिखित की दृष्टि से टिप्पणी कीजिए

(i) एक वन अधिकारी (ii) एक चरवाहा

उत्तर (i) एक वन अधिकारी—एक वन अधिकारी होने के नाते मैं वन अधिनियम का पालन करता और चरवाहों द्वारा जंगलों में जानवर चराने को प्रतिबन्धित करता। जंगलों में जानवर चराना एवं जंगलों का उपयोग करना गैरकानूनी है, इसलिए मैं जंगलों को संरक्षित करने का प्रयास करता। इसके लिए मैं चरवाहों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखता तथा चरवाहों से वन अधिनियम के नियमों का पालन करने के लिए कहता।

(ii) एक चरवाहा–एक चरवाहा होने से मैं निश्चित ही वन अधिनियम के प्रावधानों से सहमत नहीं होता, क्योंकि इससे मैं अपने उपयोग की चीजें तथा पशुओं के लिए चारा लाने के लिए वनों का प्रयोग नहीं कर सकता था। मुझे ईंधन एवं अपनी आजीविका के साधनों से हाथ धोना पड़ा। अत: वन अधिनियम के तहत जंगलों में जानवरों को चराने पर रोक लगने से हमारी आजीविका के साथ-साथ हमारी घुमन्तू संस्कृति भी नष्ट हो जाएगी।

❑❑❑

1

समकालीन भारत-1 (भूगोल)

भारत : आकार एवं स्थिति

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत का देशान्तरीय तथा अक्षांशीय विस्तार क्या है? इसका क्या महत्त्व है? दो कारक बताइए।

उत्तर भारत के मुख्य भू-भाग का देशान्तरीय विस्तार 68°7' पूर्व से 97°25' पूर्व तक तथा अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तर से 37°6' उत्तर तक है। इसके महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) भारत की भौगोलिक स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए महत्त्वपूर्ण है।

(ii) पूर्वी गोलार्द्ध में केन्द्रीय स्थिति के कारण, प्रमुख व्यापारिक महामार्गों पर स्थित है।

2. भारत के देशान्तरीय विस्तार के लाभों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत का देशान्तरीय विस्तार 68°7′ पूर्व (गुजरात) से 97°25′ पूर्व (अरुणाचल प्रदेश) तक है। भारत के देशान्तरीय विस्तार के लाभ निम्न हैं—

(i) भारत का विस्तार पूर्वी एशिया के देशों; जैसे—म्यांमार, मलेशिया, सिंगापुर एवं थाइलैण्ड के निकट पूर्व की ओर से है, जबकि पश्चिमी एशिया के देशों; जैसे—पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं अरब के निकट पश्चिम की ओर से है। यही कारण है कि इन सभी सीमावर्ती देशों से द्विपक्षीय व्यापार निरन्तर चलता रहता है।

(ii) देशान्तरीय विस्तार के कारण ही भारत अपने पूर्व में स्थित जापान, ऑस्ट्रेलिया और अन्य देशों तथा पश्चिम में अफ्रीका और यूरोप महाद्वीप के अनेक देशों से नज़दीकी बनाए हुए है। साथ ही देशान्तरीय विस्तार के कारण ही इन सभी देशों से भारत ने व्यापारिक सम्बन्ध भी स्थापित किए हुए हैं।

(iii) भौगोलिक दृष्टि से अमेरिका, भारत के पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से सामान्य दूरी पर स्थित है।

3. 82° 30' को भारत की मानक याम्योत्तर क्यों चुना गया? कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत का अक्षांशीय और देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है। अत: मानक समय के लिए ऐसे देशान्तर बिन्दु का चयन आवश्यक था, जो दोनों छोरों (पूर्व और पश्चिम) को बराबर रख सके। गुजरात से अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय समय में दो घण्टे का अन्तर है। अत: 82° 30' पूर्व देशान्तर रेखा को भारत का मानक याम्योत्तर माना गया है, जो उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर से गुजरती है। अक्षांश का प्रभाव दक्षिण से उत्तर की ओर, दिन और रात की अवधि पर पड़ता है। यही कारण है कि 82° 30' को भारत का मानक याम्योत्तर चुना गया।

4. भारत का भौगोलिक क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 2.4% है, लेकिन यह दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। भारत के सन्दर्भ में इसके प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत का क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी है। यह विश्व के कुल क्षेत्रफल के 2.4% के बराबर है, परन्तु जनसंख्या के दृष्टिकोण से यह चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। देश में बहुल जनसंख्या के कारण इसके कई प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं।

(i) बहुल जनसंख्या के कारण संसाधनों के अतिदोहन की समस्या उत्पन्न हो गई है।

(ii) जनसंख्या घनत्व की अधिकता से संसाधन उपलब्धता और उसकी आपूर्ति भी बाधित हुई है।

(iii) इससे न्यून आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिलता है।

5. 'भारत एक उपमहाद्वीप है।' कथन को स्पष्ट करते हुए भारतीय उपमहाद्वीप में शामिल देशों के नाम बताइए।

उत्तर एक महाद्वीप के अन्दर पृथक् भौतिक और सांस्कृतिक पहचान रखने वाले भू-भाग को उपमहाद्वीप कहा जाता है। भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। यह एशिया महाद्वीप का एक भाग होते हुए भी विशिष्ट भौगोलिक इकाई है।

भारत की एशिया महाद्वीप में अवस्थिति के पश्चात् भी इसकी भौतिक और सांस्कृतिक पहचान अपने आप में विशिष्ट और अन्य एशियाई देशों से अलग है। यहाँ की जलवायु और प्राकृतिक वनस्पति की पहचान भी विशिष्ट है।

इसे हिमालय पर्वत श्रेणी शेष अन्य एशियाई भू-भागों से पृथक् करती है। अत: भारत को इन विशेषताओं के कारण उपमहाद्वीप कहा जाता है। इस उपमहाद्वीप में भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव शामिल हैं।

6. भारत को उपमहाद्वीप क्यों कहा जाता है ?

उत्तर भारत के भौगोलिक आकार ने इसे विशिष्ट भौतिक विविधता प्रदान की है। इसके उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत श्रृंखला है। गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, कृष्णा, गोदावरी और कावेरी जैसी बड़ी नदियाँ हैं। उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी भारत में वनाच्छादित पहाड़ियाँ हैं तथा पश्चिम में मरुस्थल विस्तृत है।

भारत के उत्तर-पश्चिम में हिन्दुकुश व सुलेमान श्रेणियाँ, उत्तर-पूर्व में पूर्वांचल पहाड़ियाँ तथा दक्षिण में विशाल हिन्द महासागर से सीमांकित एक वृहत भौगोलिक इकाई है, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप कहा जाता है, क्योंकि यह एशिया महाद्वीप के अन्तर्गत पृथक् दृष्टिगोचर होता है तथा महाद्वीप की लगभग सभी विशेषताओं से युक्त है। भारतीय उपमहाद्वीप में भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा मालदीव देशों को शामिल किया जाता है। इनमें से श्रीलंका तथा मालदीव द्वीपीय राष्ट्र हैं।

7. भारत की दक्षिणी एशिया में महत्त्वपूर्ण सामरिक स्थिति है। समझाइए।

उत्तर भारतीय भूखण्ड पश्चिमी और पूर्वी एशिया के मध्य में स्थित है। यह एशिया का दक्षिणी विस्तार है। हिन्द महासागर भारत को एक केन्द्रीय अवस्थिति प्रदान करता है।

भारत का दक्षिणी पठार हिन्द महासागर में शीर्षवत फैला हुआ है। यह पश्चिम में एशियाई देशों सहित यूरोपीय और अफ्रीकी देशों को मिलाता है। भारत का पूर्वी तट पूर्वी एशियाई देशों से निकट सम्बन्ध स्थापना में सहायक है। इसी प्रकार भारत का उत्तरी भाग, जो अन्य देशों से जुड़ा है, भू-मार्ग और दर्रों से उत्तर, पश्चिम और पूर्व स्थित देशों को आपस में जोड़ता है। भारत की दक्षिणी एशिया में केन्द्रीय स्थिति इसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और व्यापार में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

8. 'भारत का अक्षांशीय और देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है, फिर भी भारत का उत्तर-दक्षिणी विस्तार पूर्व-पश्चिम के विस्तार से अधिक है।' कारण बताइए।

उत्तर इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत का उत्तर-दक्षिणी अक्षांशीय विस्तार 30° है और इतना ही पूर्व-पश्चिमी देशान्तरीय विस्तार है, परन्तु जब इस विस्तार को किलोमीटर में मापते हैं, तो यह दूरी बराबर नहीं आती। देश का पूर्व-पश्चिमी विस्तार लगभग 2,933 किमी और उत्तर-दक्षिणी विस्तार लगभग 3,214 किमी है।

इसका कारण यह है कि देशान्तर रेखाएँ अक्षांश रेखाओं की भाँति एक-दूसरे के समानान्तर नहीं हैं। सभी देशान्तर रेखाएँ ध्रुवों पर आकर आपस में मिल जाती हैं और जैसे-जैसे विषुवत् रेखा से दूर होती हैं, देशान्तर रेखाओं के बीच की दूरी घटती जाती है, परिणामस्वरूप भारत का पूर्व-पश्चिमी विस्तार (किलोमीटर में) कम है।

9. भारत का अक्षांशीय विस्तार क्या है? यह हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है? उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

उत्तर भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तर से 37°6' उत्तर तक है। यह हमारे जीवन को निम्न प्रकार से प्रभावित करता है—

(i) भारत की अक्षांशीय स्थिति जलवायु को प्रभावित करती है। उदाहरणस्वरूप उत्तरी भारत में जहाँ वार्षिक तापमान का स्तर उच्च होता है, वहीं दक्षिणी भारत में यह निम्न अवस्था में होता है।

(ii) भारत उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। इसकी अक्षांशीय अवस्थिति के कारण यह एक उष्णकटिबन्धीय जलवायविक प्रदेश है।

(iii) देश का अक्षांशीय विस्तार लगभग 30° के बराबर है। अक्षांशीय विस्तार के कारण देश के अन्दर ही दिन और रात की अवधि में विविधता है।

उदाहरण. हम जैसे ही दक्षिणी भारत से उत्तर दिशा की ओर अग्रसर होते हैं, तो दिन व रात की अवधि में 45 मिनट का अन्तर प्राप्त होता है। यह अन्तर दक्षिणतम भाग से देश के उत्तरतम भाग तक 5 घण्टे तक दर्ज किया जाता है।

10. 'स्वेज नहर भारत के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुई।' इस कथन का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर स्वेज नहर 1869 ई. में खोली गई। भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ने वाले इस मार्ग के खुलने से भारत और यूरोप के बीच की दूरी 7,000 किमी तक कम हो गई।

स्वेज नहर के पूर्व, भारत और यूरोप का सम्पर्क केप ऑफ गुड होप (अफ्रीका का दक्षिणतम बिन्दु) के माध्यम से होता था। यह मार्ग बहुत लम्बा और अधिक खर्चीला था। अत: हम कह सकते हैं कि स्वेज नहर से भारत और यूरोप के मध्य दूरी में कमी आने से हमारे सम्पर्क सुलभ और लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत की भौगोलिक स्थिति का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों से कीजिए।

(i) धरातलीय, (ii) स्थिति एवं विस्तार

उत्तर (i) धरातलीय विस्तार—भारत के भू-भाग का कुल क्षेत्रफल 32,82,263 वर्ग किमी है। भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.4% है। यह रूस (170.7), कनाडा (99.7), संयुक्त राज्य अमेरिका (98.0), चीन (95.9), ब्राजील (85.4) और ऑस्ट्रेलिया (76.8) के बाद विश्व का 7वाँ बड़ा देश है। भारत की स्थलीय सीमा की लम्बाई 15200 किमी है। उत्तर से दक्षिण में इसकी लम्बाई 3214 किमी तथा पूर्व-पश्चिम में इसकी लम्बाई 2933 किमी है। भारत की स्थलीय सीमा पश्चिम में कच्छ के रन (गुजरात) से प्रारम्भ होकर पूर्व में म्यांमार सीमा तक तथा बंगाल की खाड़ी एवं उत्तर में जम्मू-कश्मीर से दक्षिण में हिन्द महासागर तक फैली है। मुख्य भूमि की तटीय सीमा की लम्बाई 6,100 किमी है।

(ii) स्थिति एवं विस्तार—भारत उत्तरी गोलार्द्ध का एक विशाल देश है। इसका मुख्य भाग 8°4′ से 37°6′ उत्तरी अक्षांश तथा 68°7′ से 97°25′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। उत्तरी अक्षांश रेखा देश को लगभग दो बराबर भागों में बाँटती है। इसे कर्क रेखा के नाम से जाना जाता है। मुख्य भू-भाग के दक्षिण-पूर्व में अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में तथा लक्षद्वीप समूह अरब सागर में स्थित है। भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण-मध्य भाग में स्थित है और अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी के रूप में विस्तृत इसकी दोनों भुजाएँ हिन्द महासागर के साथ सीमा बनाती हैं। इसके उत्तर एवं पूर्वोत्तर में चीन, नेपाल व भूटान, पश्चिम में पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान पूर्व में म्यांमार व बांग्लादेश तथा दक्षिण में जलीय सीमा में श्रीलंका स्थित है।

2. भारत की तट रेखा कितनी लम्बी है? इसके पाँच लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारतीय तट रेखा की लम्बाई 7,516.6 किमी है। इसमें अण्डमान, निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप भी शामिल हैं। हिन्द महासागर में भारत जितनी लम्बी तट रेखा किसी अन्य देश की नहीं है।

तट रेखा की विशेषता/लाभ

तट रेखा की विशेषताएँ/लाभ निम्नलिखित हैं—

(i) भारतीय तट रेखा का विस्तार दक्षिण में हिन्द महासागर की ओर पूर्वी और पश्चिमी तट के सहारे है।

(ii) पश्चिमी तट रेखा से भारत के पश्चिमी एशिया सहित, यूरोप और अफ्रीका से निकटतम सम्बन्ध हैं।

(iii) भारत का तटीय विस्तार सम्बद्ध देशों से व्यापारिक गतिविधियों सहित द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सम्बन्धों को बढ़ाने में सहायता करता है।

(iv) तट रेखा के सहारे बन्दरगाह स्थापना में सहायता मिलती है। बन्दरगाह भारत के विदेशी व्यापार के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

(v) यह भारत में मत्स्य उद्योग को विकसित करने में सहायक है। इस व्यवसाय में भारत के परिवार संलिप्त हैं, जो रोजगार का एक प्रमुख साधन है।

3. 'भारत के हिन्द महासागर में केन्द्रीय स्थिति से इसे व्यापारिक और सांस्कृतिक दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त हो रहे हैं।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हिन्द महासागर में भारत की केन्द्रीय स्थिति से हमें निम्नलिखित प्रकार के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक लाभ प्राप्त हुए हैं—

(i) पुराने समय में भारत का व्यापार समुद्री मार्ग से होता था। हिन्द महासागर के शीर्ष पर स्थित भारत की केन्द्रीय स्थिति इस कार्य में सहायक रही है।

(ii) विश्व के विभिन्न देशों को भारत से कपड़े एवं अन्य सामान का निर्यात होता था। इससे भारत को भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होती थी।

(iii) भारत की वस्तुओं का आदान-प्रदान अफ्रीका के पूर्वी तटीय प्रदेशों, एशिया के पश्चिमी एवं दक्षिणी देशों, पूर्व में चीन, जापान तथा दक्षिण-पूर्वी देशों के साथ होता रहा है।

(iv) उपनिषदों के विचार, रामायण, पंचतन्त्र की कहानियाँ, भारतीय अंक तथा दशमलव प्रणाली समुद्री मार्ग से विभिन्न देशों तक पहुँचे हैं।

(v) भारत को पाश्चात्य देशों से यूनानी वास्तुकला एवं स्थापत्य कला की प्राप्ति हुई। इनका प्रभाव भारत के मन्दिर, मस्जिद आदि में मीनारों तथा गुम्बदों के रूप में पाया जाता है।

4. 'भारत की सामरिक स्थिति ने प्राचीन काल से देश को जलीय एवं स्थलीय मार्ग द्वारा विचारों एवं वस्तुओं के आवागमन को प्रोत्साहित किया है।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर हिन्द महासागर के शीर्ष पर भारत की भौगोलिक स्थिति महत्त्वपूर्ण है। देश की सामरिक स्थिति ने प्राचीन काल से ही जलीय एवं स्थलीय मार्ग द्वारा विचारों तथा वस्तुओं के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया है।

भारत के उत्तरी भाग से जुड़े देशों और पर्वतों व पहाड़ों के बीच स्थित दर्रों से अनेक यात्री प्राचीन काल में भारत आए। उस समय समुद्री मार्ग का ज्ञान नहीं था। स्थलीय सम्पर्क में रेशम मार्ग का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह चीन से होकर पश्चिमी, दक्षिणी और पूर्वी एशिया सहित यूरोप और उत्तरी अफ्रीका तक विस्तारित था। इससे भारत को भी अन्य देशों के साथ सम्पर्क स्थापना में सहायता मिली।

यात्रियों के आवागमन से उपनिषदों, रामायण, महाभारत के सन्देश और पंचतन्त्र की कहानियाँ, दशमलव प्रणाली, भारतीय अंक आदि सम्बन्धित विचार अन्य देशों तक पहुँचे। मसाले, मलमल के कपड़े और अन्य व्यापारिक सामान भी इन मार्गों से अन्य देशों तक ले जाया जाता था।

दूसरी ओर यूनानी स्थापत्य कला तथा पश्चिमी एशिया की वास्तुकला के प्रतीक चिह्नों, मीनारों एवं गुम्बदों का प्रभाव भारतीय स्थापत्य कला पर देखने को मिलता है। मध्य काल और आधुनिक काल में जलमार्ग के विकास ने हमारे वैश्विक सम्बन्धों को और अधिक बढ़ावा दिया है। देश के पश्चिमी तट से जहाँ हमने पश्चिमी एशिया, यूरोप और अफ्रीका तक आसान पहुँच प्राप्त की, वहीं पूर्वी तट से पूर्वी एशियायी देशों से हमारे सम्बन्ध और प्रगाढ़ हुए हैं। 1869 ई. में स्वेज नहर का खुलना हमारे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे भारत और यूरोप की दूरी 7,000 किमी तक कम हो गई है।

5. प्राचीन तथा मध्य काल में भारत के संसार के अन्य देशों के साथ सम्बन्धों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत का विश्व के अन्य देशों के साथ सम्पर्क सदियों पुराना है, जिसमें भारत के पश्चिम मध्य, पूर्वी और दक्षिणी एशियाई देशों से महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं। प्राचीनकाल में यह सम्बन्ध समुद्री जलमार्गों की अपेक्षा स्थल मार्गों से अधिक था।

इन सम्पर्कों के कारण ही प्राचीन काल से विचारों और वस्तुओं का आदान-प्रदान होता रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय उपनिषद् के विचार, रामायण और महाभारत के सन्देश, पंचतन्त्र की कहानियाँ, भारतीय अंक और दशमलव प्रणाली संसार के विविध भागों तक पहुँचे हैं।

व्यापार के माध्यम से मसाले, मलमल व कपड़े सहित अन्य वस्तुओं को भी विभिन्न देशों तक पहुँचाया जाता था। इन देशों के साथ वस्तुओं व विचारों के आदान-प्रदान से न केवल आवश्यकताओं की पूर्ति हुई, बल्कि सम्बन्ध स्थापना को भी मजबूती मिली है। ऐसे ही यूनानी स्थापत्य कला तथा पश्चिमी एशिया की वास्तुकला के प्रतीक चिह्नों, मीनारों, गुम्बदों व अन्य कलाकृतियों का प्रभाव हमारे देश के विभिन्न भागों में देखा जा सकता है।

वर्ष 1947 से पूर्व भारत में दो प्रकार के राज्य थे—प्रान्त और रियासत। वायसराय द्वारा नियुक्त अंग्रेज अधिकारी प्रान्तों पर शासन करते तथा रियासतों का शासन स्थानीय शासकों द्वारा पैतृकता के आधार पर अंग्रेजी शासकों की प्रभुसत्ता मानकर स्वायत्तता से किया जाता था।

❑❑❑

2

भारत का भौतिक स्वरूप

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के समुद्रतटीय मैदान की दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर भारत के समुद्रतटीय मैदान की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) समुद्रतट का पश्चिमी मैदान अत्यन्त उपजाऊ है। यहाँ चावल, जूट, नारियल, गन्ना, रबड़, तम्बाकू आदि फसलें उत्पन्न की जाती हैं। यहाँ सघन जनसंख्या निवास करती है।

(ii) पूर्वी समुद्रतटीयमैदान में चावल, रबड़, नारियल, तम्बाकू तथा मसालों की खेती की जाती है, किन्तु यहाँ विरल जनसंख्या पाई जाती है।

2. पूर्वी तटीय मैदान की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर पूर्वी तटीय विस्तार को पूर्वी समुद्री मैदान कहा जाता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) यह पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में पूर्वी घाटों के मध्य फैला है।

(ii) इसका विस्तार पश्चिम बंगाल से लेकर तमिलनाडु के कन्याकुमारी तक है।

(iii) इस भाग की चौड़ाई एक समान नहीं है। यह 60 से 100 किमी तक के क्षेत्र में विस्तृत है।

(iv) पूर्वी तटीय मैदान के दो उप-विभाग हैं। इसे उत्तर में उत्तरी सरकार, जबकि दक्षिण में कोरोमण्डल तट के नाम से जाना जाता है। प्रायद्वीपीय पठार की प्रमुख नदियाँ; जैसे—महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी इस तट पर विशाल डेल्टा का निर्माण करती हैं।

3. थार के मरुस्थल की दो विशेषताओं का विवरण दीजिए।

उत्तर राजस्थान का उत्तर-पश्चिमी भाग रेगिस्तानी है, जिसे 'थार का मरुस्थल' कहा जाता है। इस मरुस्थल का कुछ भाग पाकिस्तान में भी है। इस मरुस्थल का 85% भू-भाग (3,20,000 वर्ग किमी भारत में स्थित है। इसकी दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

(i) अति अल्प वर्षा—थार के मरुस्थल में अत्यधिक कम वर्षा होती है, यहाँ वर्षभर में 10 सेमी से भी कम वर्षा होती है। अत: पूरे भाग में पानी की कमी रहती है।

(ii) वनस्पति का अभाव—वर्षा की कमी के कारण यहाँ वनस्पति के रूप में केवल कँटीली झाड़ियाँ तथा कैक्टस (नागफनी) के पौधे पाए जाते हैं। वनस्पतियों के अभाव में यहाँ धूल भरी आँधियाँ चलती हैं।

4. 'प्रवाल पॉलिप्स' क्या है? संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर 'प्रवाल पॉलिप्स' समूह में निवास करने वाले सूक्ष्म जीव हैं। इन पॉलिप्स के द्वारा ही प्रवाल निवह का निर्माण होता है, जिन्हें शंख या मूंगा कहते हैं। इनका जीवनकाल न्यून होता है। इन जीवों का विकास छिछले और गर्म जल में होता है। प्रवाल पॉलिप्स से कैल्शियम कार्बोनेट का स्राव होता है। इससे होने वाले स्राव व इसकी अस्थियाँ टीलों के रूप में निक्षेपित हो जाती हैं। ये निक्षेपण मूलत: तीन प्रकार के होते हैं—

(i) प्रवाल रोधिका

(ii) तटीय प्रवाल भित्ति

(iii) प्रवाल वलय द्वीप

ऑस्ट्रेलिया का 'ग्रेट बैरियर रीफ' प्रवाल रोधिका का उदाहरण है।

5. भारत के उत्तरी मैदानों और तटीय मैदानों में क्या अन्तर है?

उत्तर भारत के उत्तरी मैदानों और तटीय मैदानों में निम्नलिखित अन्तर हैं—

उत्तरी मैदान	तटीय मैदान
यह मैदान बहुत बड़ा है। इन मैदानों में बहने वाली नदियाँ डेल्टा बनाती हैं।	यह मैदान तंग पट्टियों जैसा है। इसमें पूर्वी तटीय पट्टी में बहने वाली नदियाँ ही डेल्टा बनाती हैं।
उत्तरी मैदानों में कोई लैगून नहीं होता।	तटीय मैदानों में कई लैगून, बालू रोधिकाएँ आदि होते हैं।
उत्तरी मैदानों का विकास हिमालयी नदियों द्वारा लाए गए मलबे से हुआ है।	तटीय मैदानों का विकास पूर्वी घाट एवं पश्चिमी घाट से होकर गुजरने वाली प्रायद्वीपीय नदियों द्वारा हुआ है।

6. हिमाद्रि हिमालय और हिमाचल हिमालय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हिमाद्रि हिमालय और हिमाचल हिमालय में अन्तर निम्न प्रकार हैं—

हिमाद्रि हिमालय	हिमाचल हिमालय
हिमाद्रि हिमालय श्रेणी समतल है। यह हिमालय की उत्तरी श्रेणी है।	हिमाचल हिमालय श्रेणी ऊबड़-खाबड़ है। यह हिमाद्रि की दक्षिणी श्रेणी में स्थित है।
यह श्रेणी अत्यधिक दुर्गम है और हमेशा बर्फ से ढकी हुई रहती है।	इस श्रेणी में अनेक पर्वतीय स्थल आते हैं, जहाँ मौसम अत्यधिक सुहावना रहता है।
हिमाद्रि हिमालय सबसे ऊँची श्रेणी है।	यह श्रेणी हिमाद्रि हिमालय से नीचे है।

7. उत्तरी मैदान और दक्षिणी पठार की भौतिक रचना की तुलना कीजिए और इसका आर्थिक महत्त्व भी बताइए।

उत्तर उत्तरी मैदान और दक्षिणी पठार की भौतिक रचना की तुलना निम्न प्रकार से है—

उत्तरी मैदान	दक्षिणी पठार
यह मैदान समतल है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई लगभग 275 मी है।	इस पठार की भूमि ऊबड़-खाबड़ है। यह प्रदेश समुद्र तल से 500 से 900 मी ऊँचा है।
यह मैदान नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बना है। यह मिट्टी काफी उपजाऊ है।	यह कठोर आग्नेय चट्टानों से बना है। यह भूमि कम उपजाऊ होती है।
यहाँ पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है। यहाँ की खेती के लिए यह वर्षा लाभदायक है।	इस पठार के मध्यवर्ती हिस्से में बहुत कम वर्षा होती है। यहाँ हमेशा सूखा पड़ता है।
यहाँ चावल, गेहूँ, गन्ना, कपास इत्यादि की खेती की जाती है।	यहाँ कपास, मूँगफली, ज्वार, बाजरा इत्यादि की खेती की जाती है।
यहाँ की नदियाँ पहाड़ी होने के कारण वर्षभर बहती रहती हैं।	दक्षिणी पठार की नदियाँ बरसाती होती हैं। ये शीतकाल में शुष्क हो जाती हैं।

8. उत्तरी भारत के पर्वत दक्षिणी भारत के पर्वतों से किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर उत्तरी भारत के पर्वत दक्षिणी भारत के पर्वतों से निम्न प्रकार से हैं

उत्तरी भारत के पर्वत	दक्षिणी भारत के पर्वत
उत्तरी भारत के पर्वत नवीन वलित पर्वत हैं। इनमें हिमालय पर्वत श्रेणी प्रमुख है।	दक्षिणी भारत के पर्वत बहुत प्राचीन हैं। इनमें नीलगिरि, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट प्रमुख हैं।
ये पर्वत बहुत ऊँचे हैं। हिमालय का एवरेस्ट शिखर संसार में सबसे ऊँचा है, जिसकी ऊँचाई 8,848 मी है।	ये पर्वत बहुत कम ऊँचाई वाले हैं। इन पर्वतों में सबसे ऊँची चोटी अनाईमुडी है, जिसकी ऊँचाई मात्र 2,695 मी है।
इन पर्वतों के शिखर वर्षभर हिम से ढके रहते हैं।	इन पर्वत श्रेणियों पर हिम के दर्शन नहीं होते।

9. 'भारत की भौगोलिक विविधता हमारी एकता को प्रदर्शित करती है।' इस कथन से आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर भारतीय उपमहाद्वीप की पहचान एशिया के अन्य देशों से अलग है। यह भाग सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। इस उपमहाद्वीपीय विस्तार में भारत के साथ भूटान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और पाकिस्तान हैं। पर्वतों और सागरों से घिरे इन देशों के बीच अपवाद को छोड़कर आपसी सामंजस्य और सामाजिक सम्बन्धों का ताना-बाना प्रदर्शित होता है। भारत उत्तर में हिमालय पर्वतमाला और तीन ओर समुद्र से घिरा है। हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी इसकी भौगोलिक व सामरिक पहचान को पुष्ट करते हैं। इसके साथ मरुस्थलीय क्षेत्र, पठारी भाग, मैदानी व द्वीपीय समूह हमारी विविधता के महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं। विशिष्ट भौतिक पहचान के साथ यहाँ अनेक वर्ण, जाति, धर्म, पन्थ, सम्प्रदाय, रीति-रिवाज व विविध परम्परा वाले लोग, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के साथ जीवन-यापन करते हैं। अलग-अलग आस्था व प्रतीकों वाले समुदाय राष्ट्रवादी भावना व देशभक्ति के एक सूत्र में बँधे हुए हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारी भौतिक विविधता हमारी एकता को पुष्ट करने में सहयोगी है।

10. क्या हिमालय पर्वत श्रृंखला भारत के लिए वरदान सिद्ध हुई है? मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर भारत की उत्तरी दिशा में स्थित हिमालय पर्वत श्रृंखला देश के लिए भौगोलिक और सामरिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह हमारा सुरक्षा कवच है, जो हमें उत्तर दिशा से आने वाली शीतल और शुष्क हवाओं से सुरक्षित रखता है। यह भारत को अविजित सीमा प्रदान करता है। हिमालय हमारे उपजाऊ गंगा के मैदान को आदर्श दिशा प्रदान करने में मदद करता है। यह मानसूनी हवा को अपनी ओर आकृष्ट करता है। इससे देश के लगभग सभी भौगोलिक क्षेत्रों को जीवनदायिनी वर्षा प्रदान होती है। इसके साथ वर्षभर बर्फ से ढके रहने के कारण यह कई महत्त्वपूर्ण नदियों; जैसे—सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों का स्रोत है। यह विविध प्रकार की वनस्पतियों व जीव-जन्तुओं का निवास क्षेत्र है, जो हमारे लिए उपयोगी कच्चे माल की उपलब्धता को सरल बनाता है। प्राकृतिक संसाधनों के अक्षय भण्डार, हिमालय की वादियों में सुंदर घाटियाँ और स्वास्थ्यवर्द्धक आश्रय स्थल भी हैं। कश्मीर, कुल्लू, काँगड़ा, ऋषिकेश, नैनीताल, रानीखेत ऐसे ही उदाहरण हैं। उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिमालय पर्वत श्रृंखला भारत के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

11. भू-गर्भीय प्लेटों की गतियों के सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सामान्यत: भू-गर्भीय प्लेटों की गतियों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है, जिनका वर्णन इस प्रकार है—

(i) अभिसारित परिसीमा—जब विवर्तनिकी प्लेटें एक-दूसरे के पास आती हैं, तब ये अभिसारित परिसीमा का निर्माण करती हैं।

(ii) अपसारित परिसीमा—जब प्लेटें परस्पर भिन्न दिशा में एक-दूसरे से दूर जाती हैं, तो अपसारित परिसीमा का निर्माण करती हैं।

(iii) रूपान्तर परिसीमा—जब प्लेटें एक-दूसरे के साथ क्षैतिज दिशा या समानान्तर गति करती हैं, तो रूपान्तर परिसीमा का निर्माण होता है।

12. हिमालय पर्वत पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर भारत की उत्तरी सीमा पर फैला हिमालय भू-गर्भीय रूप से युवा और बनावट के दृष्टिकोण से वलित पर्वत श्रृंखला है। यह श्रृंखला पश्चिम से पूर्व दिशा में सिन्धु से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी तक फैली है। हिमालय विश्व की सर्वाधिक ऊँची पर्वत श्रेणी है, जो 2,400 किमी की लम्बाई में फैली है।

इसके उच्चावच अत्यधिक अनियमित और विषम हैं। इसकी चौड़ाई कश्मीर में 400 किमी और अरुणाचल प्रदेश में 150 किमी है। यह

अपने देशान्तरीय विस्तार में तीन समानान्तर श्रृंखलाओं से निर्मित है, जो निम्नलिखित हैं—

(i) हिमाद्रि या महान्/आन्तरिक हिमालय
(ii) हिमाचल या निम्न हिमालय
(iii) शिवालिक श्रेणी

13. हिमालय को पश्चिम-पूर्व दिशा में किस प्रकार विभाजित किया गया है?

उत्तर हिमालय को पश्चिम से पूर्व तक क्षेत्रीय आधार पर चार भागों में विभाजित किया गया है। हिमालय पश्चिम से पूर्व निम्नलिखित चार भागों में विभाजित है—

(i) पंजाब हिमालय—यह सिन्धु एवं सतलुज नदियों के मध्य स्थित है।

(ii) कुमाऊँ हिमालय—यह सतलुज एवं काली नदियों के मध्य स्थित है।

(iii) नेपाल हिमालय—यह काली एवं तिस्ता नदियों के मध्य स्थित है।

(iv) असोम हिमालय—यह तिस्ता और दिहांग नदियों के मध्य स्थित है।

14. पूर्वांचल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर दिहांग महाखड्ड (गॉर्ज) के बाद हिमालय दक्षिण की ओर तीव्र मोड़ बनाते हुए भारत की पूर्वी सीमा के साथ फैल जाता है। इन्हें पूर्वांचल या पूर्वी पहाड़ियों तथा पर्वत श्रृंखलाओं के नाम से जाना जाता है।

पूर्वांचल पहाड़ियाँ उत्तर-पूर्वी राज्यों से होकर गुजरती हैं। ये मजबूत बलुआ पत्थरों (अवसादी शैल) से बनी हैं। यह क्षेत्र घने जंगलों से ढका हुआ है। ये समान्तर श्रृंखलाओं एवं घाटियों के रूप में फैली हुई हैं। पटकाई, नागा और मिजो मणिपुर क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण पहाड़ियाँ हैं।

15. भारत को प्राकृतिक भागों में विभाजित कीजिए तथा उनमें से किसी एक की स्थिति, प्राकृतिक स्वरूप, मानव जीवन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर भू-वैज्ञानिक संरचना एवं उच्चावच के आधार पर भारत को निम्नलिखित भू-भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) भारत का उत्तरी पर्वतीय भू-भाग
(ii) उत्तर का विशाल मैदान
(iii) प्रायद्वीपीय पठार
(iv) थार मरुस्थल
(v) तटीय प्रदेश

थार मरुस्थल

स्थित एवं विस्तार—यह मरुस्थल अरावली पर्वत श्रृंखला के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह मरुस्थल भारत के राजस्थान राज्य में मुख्य रूप से फैला है, जबकि इसका कुछ भाग हरियाणा, पंजाब व गुजरात में भी फैला है। भारत के अलावा यह पाकिस्तान के सिन्धु व पंजाब प्रान्त में भी फैला है। इस मरुस्थल का 85% भू-भाग (3,20,000 वर्ग किमी क्षेत्र) भारत में स्थित है।

प्राकृतिक स्वरूप—थार मरुस्थल अरावली पहाड़ियों से उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह एक ऊबड़-खाबड़ भू-तल है, जिस पर बहुत-से रेत के टीले पाए जाते हैं। यहाँ पर वार्षिक वर्षा 150 मिमी से कम होती है। इस कारण यह शुष्क और वनस्पति रहित क्षेत्र है। इन्हीं स्थलाकृतिक गुणों के कारण इसे मरुस्थल नाम से जाना जाता है। यह माना जाता है कि मेसोजोइक काल में यह समुद्र का हिस्सा था। रेतीले टीले, छत्रक चट्टानें और मरुस्थल यहाँ की स्थलाकृतियाँ थी। यहाँ की नदियाँ अधिकांशत: अल्पकालिक हैं। यहाँ की अनेक नदियाँ अल्प वर्षा और तीव्र वाष्पीकरण के कारण मरुस्थल में लुप्त हो जाती हैं। इनमें **लूनी** नदी प्रमुख है। यह अन्त: स्थलीय अपवाह का उदाहरण है, जहाँ नदियाँ झील या प्लाया में मिल जाती हैं।

मानव जीवन–थार मरुस्थल क्षेत्र में विरल जनसंख्या निवास करती है। कम वर्षा एवं मरुस्थलीय भूमि के कारण इन क्षेत्रों में कृषि कार्य सम्भव नहीं है, इसलिए सघन जनसंख्या का अभाव है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं, वहाँ कृषि कार्य सम्भव हो पाया है। उदाहरणस्वरूप, राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में इन्दिरा गाँधी नहर के समीप सघन जनसंख्या निवास करती है।

16. बोमडिला दर्रे की स्थिति का उल्लेख कीजिए तथा उसकी उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

उत्तर बोमडिला दर्रा अरुणाचल प्रदेश के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। तिब्बत जाने का मार्ग इस दर्रे से होकर गुजरता है। भूटान के पूर्व में अरुणाचल प्रदेश में स्थित यह दर्रा समुद्रतल से २,२१७ मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह प्रतिकूल मौसम और बर्फबारी के कारण शीत ऋतु में बन्द रहता है। यह पर्यटन स्थल के रूप में तो जाना ही जाता है, साथ ही यह सामरिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

17. भारत के उत्तरी मैदान की विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए। उत्तरी भारत के विशाल मैदानों की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारत के उत्तरी विशाल मैदान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

यह मैदान जलोढ़ मृदा से निर्मित है। इसका निर्माण तीन प्रमुख नदी प्रणालियों सिन्धु, गंगा और ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों से हुआ है।

(i) उत्तरी भारत के विशाल मैदान में नदी की प्रौढ़ावस्था में बनने वाली अपरदनी और निक्षेपण स्थलाकृतियाँ; जैसे— बालू रोधिक, विसर्प, गोखुर झीलें और गुम्फित नदियाँ पाई जाती हैं। ब्रह्मपुत्र घाटी का मैदान नदीय द्वीप तथा बालू रोधिकाओं की उपस्थिति के लिए जाना जाता है।

(ii) यहाँ अधिकतर क्षेत्र में प्राय: बाढ़ आती रहती है, जिससे मृदा की उर्वरता में वृद्धि होती है। इसी उर्वरता के कारण यह मैदान विश्व के सबसे उर्वर प्रदेशों में गिना जाता है।

समृद्ध मृदा, पर्याप्त जल की आपूर्ति और अनुकूल जलवायु इसे कृषि गतिविधियों के लिए उत्तम दशा प्रदान करते हैं।

18. उत्तरी मैदान में बहुत सघन जनसंख्या है। इसके कोई तीन कारण बताइए।

उत्तर 'उत्तरी मैदान' बंगाल की खाड़ी के तट पर फैले डेल्टा प्रदेश और गुजरात के मैदान सहित पश्चिम के तटीय मैदान सघन आबादी वाले क्षेत्र हैं। इसके तीन कारण निम्नवत् हैं—

(i) इन क्षेत्रों में घनी आबादी का प्रमुख कारण समतल, विस्तृत एवं उपजाऊ मैदान का होना है। इन मैदानों में देश की जनसंख्या के भरण-पोषण की क्षमता है।

(ii) इन क्षेत्रों में अच्छी वर्षा होती है। उत्तरी मैदान में नदियाँ सदानीरा रहती हैं। कृषि को पर्याप्त जल प्राप्त होता है। वर्षा की कमी सिंचाई के साधनों से पूरी कर ली जाती है। फलत: वर्षा में दो से तीन फसलें उगाना आसान होता है।

(iii) कृषि उत्पादों की सहायता से यहाँ अनेक उद्योग-धन्धे विकसित हुए हैं, जिन्होंने जनसंख्या को प्रभावित किया है। फलस्वरूप इन क्षेत्रों में जनसंख्या बढ़ी है।

19. उन तीन अनुभागों के नाम बताइए, जिनमें उत्तरी मैदान विभाजित है। प्रत्येक का एक गुण लिखिए।

उत्तर उत्तरी मैदान तीन अनुभागों में विभाजित है—

(i) पंजाब का मैदान

(ii) गंगा का मैदान

(iii) ब्रह्मपुत्र का मैदान

उत्तरी मैदान के तीन अनुभागों के गुण निम्नलिखित हैं—

(i) पंजाब का मैदान—यह उत्तरी मैदान के पश्चिमी भाग को आच्छादित करता है।

(ii) गंगा का मैदान—यह गंगा और तिस्ता नदियों के बीच उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में फैला हुआ है।

(iii) ब्रह्मपुत्र का मैदान—यह असोम राज्य में फैला हुआ है।

20. प्रायद्वीपीय पठार को देश का प्राचीनतम भू-भाग क्यों माना जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत का प्रायद्वीपीय पठार गोण्डवानालैण्ड का एक हिस्सा था। गोण्डवाना भूमि प्राचीन विशाल महाद्वीप पैंजिया का दक्षिणतम भाग है, जिसके उत्तर में अंगारा भूमि है। प्रायद्वीपीय पठार गोण्डवाना लैण्ड के टूटने और इसके खिसकने से ही अस्तित्व में आया है। इसी कारण इसे भारत का प्राचीनतम भू-भाग माना जाता है। भारत के अन्य भू-भाग इसके बाद अस्तित्व में आए हैं। मेज की आकृति वाला यह भाग पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय तथा रूपान्तरित शैलों से निर्मित है। इसमें चौड़ी तथा छिछली घाटियाँ एवं गोलाकार पहाड़ियाँ हैं।

21. डेल्टा की निर्माण प्रक्रिया को समझाइए।

उत्तर समुद्र में मिलने से पूर्व नदियाँ अपने मुहाने पर अपने साथ लाए गए अवसादों का निक्षेप करती हैं, जिसे डेल्टा कहा जाता है। इस तरह डेल्टा के निर्माण के क्रम में नदी अपने जल के साथ भारी मात्रा में कंकड़, पत्थर, बजरी, बालू, मिट्टी, गाद आदि बहाकर लाती हैं। नदी के बहाव की गति मन्द होने से अवसादों का जमाव होने लगता है। मुहाने के निकट जिन नदियों की गति मन्द होती है, वे नदियाँ अपने मुहानों पर बारीक-से-बारीक तलछट जमा करने को बाध्य हो जाती हैं। यही जमाव नदी के मार्ग में अवरोध बनकर उसे विभिन्न शाखाओं में विभाजित कर देता है। इस प्रकार विभिन्न शाखाओं के द्वारा अवसाद का जमाव विस्तृत भू-भाग पर त्रिभुजाकार रूप ले लेता है। मुहाने पर बने त्रिभुजाकार मैदान को डेल्टा कहते हैं। डेल्टा बहुत समतल और उपजाऊ मैदान है। विश्व में सबसे बड़ा डेल्टा गंगा-ब्रह्मपुत्र का है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत की भौगोलिक विविधता को कितने वर्गों में विभाजित किया गया? किन्हीं चार का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत की भौगोलिक विविधता को ध्यान में रखते हुए इसे 6 वर्गों में विभाजित किया गया है। इनमें से चार का वर्णन निम्न प्रकार है—

(i) हिमालय पर्वत श्रृंखला—हिमालयी श्रृंखला नवीन और वलित श्रृंखला है। इसका उच्चावच अत्यधिक विषम और अनियमित है। यहाँ विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है।

(ii) उत्तरी मैदान—भारत के उत्तरी मैदान अत्यधिक समतल और विस्तृत हैं। जलोढ़ मृदा से निर्मित यह भाग भारत का अत्यधिक उपजाऊ प्रदेश है।

(iii) प्रायद्वीपीय पठार—प्रायद्वीपीय पठार पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय और रूपान्तरित शैलों से निर्मित है। यह गोण्डवाना भूमि के विभाजन और अपवाह के कारण बना था।

(iv) भारतीय मरुस्थल—यह भारत के पश्चिमी भाग में स्थित अरावली पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर अवस्थित है। भारतीय मरुस्थल बालू के टिब्बों से ढका एक तरंगित मैदान है।

2. हिमालय पर्वत से होने वाले पाँच लाभों को लिखिए।

उत्तर **हिमालय पर्वत की भौतिक विशेषताएँ**—भारत के उत्तर में हिमालय पर्वतमाला अर्द्धचन्द्राकार रूप में, पश्चिम में सिन्धु नदी के गार्ज से पूर्व में अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक फैली है। हिमालय एक नवीन मोड़दार पर्वत है, जिसमें तीन समान्तर श्रेणियों की रचना हुई है। हिमालय पर्वत श्रृंखला अनेक प्रकार की क्षेत्रीय विषमता लिए हुए है। इस पर्वत की 6,000 मी से ऊँची श्रेणियों पर वर्षभर बर्फ जमी रहती है, तो दूसरी तरफ मध्य हिमालय या हिमाचल श्रेणी में हरियाली दृष्टिगोचर होती है। हिमालय पर्वतमाला की दो श्रेणियों के मध्य में अधिक मात्रा में घाटियाँ देखने को मिलती हैं, जिन्हें स्थानीय आधार पर 'मर्ग', 'दून', 'द्वार' आदि नामों से जानते हैं। शिवालिक क्षेत्र सबसे उपजाऊ व समतल है। इस पर्वतमाला में अनेक दर्रे पाए जाते हैं, जो आवागमन को सुविधाजनक बनाते हैं। इन प्रदेशों में वर्षभर पानी से भरी रहने वाली नदियों का प्रवाह है। यहाँ की नदियों को 'सदानीरा' कहा जाता है। भौतिक रूप से हिमालय पर्वत संसार की सबसे विस्तृत पर्वत श्रृंखला है, जिसमें विश्व की सर्वोच्च चोटी 'माउण्ट एवरेस्ट' स्थित है।

हिमालय पर्वत का महत्त्व—हिमालय पर्वत श्रृंखला उत्तरी भाग में एक दीवार की भाँति स्थित है, जो आर्थिक रूप से भारत के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। हिमालय के महत्त्व को निम्नलिखित रूपों में व्यक्त किया जा सकता है—

(i) सदानीरा नदियों का उद्गम स्थल भारत की अधिकांश नदियाँ हिमालय पर्वत के विशाल हिमनदों से निकलती हैं। हिमनदों के पिघलने से नदियाँ बनती हैं। अत: इनमें सदैव जल भरा रहता है।

सिन्धु, गंगा, यमुना तथा ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों के उद्‌गम स्रोत भी इसी पर्वतमाला में स्थित हैं।

(ii) **वर्षा के लिए सहायक**—हिमालय पर्वत की स्थिति, बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर से उठने वाली मानसूनी पवनों के मार्ग में रुकावट बनकर उन्हें वर्षा करने के लिए बाध्य करती है, जो उत्तरी भारत में व्यापक वर्षा का कारण बनती हैं।

यदि भारत की उत्तरी सीमा पर हिमालय पर्वत न होता, तो उत्तर का विशाल मैदान शुष्क मरुस्थल में बदल गया होता।

(iii) **शीत हवाओं से भारत की रक्षा**—हिमालय पर्वत शीत ऋतु में उत्तर ध्रुवीय प्रदेश एवं साइबेरिया की ओर से चलने वाली ठण्डी एवं बर्फीली हवाओं से हमारी रक्षा करता है।

(iv) **उपयोगी वन**—हिमालय पर्वत के ढालों पर अनेक उपयोगी वन पाए जाते हैं, जिनकी लकड़ियों का उपयोग विभिन्न प्रकार के उद्योगों एवं भवन निर्माण में किया जाता है।

(v) **जल विद्युत का उत्पादन**—हिमालय पर्वतों से निकलने वाली सदावाहिनी नदियाँ अपने प्रवाह मार्ग में प्राकृतिक झरनों की रचना करती हैं। ये झरने जल विद्युत शक्ति के उत्पादन में बहुत ही सहायक होते हैं।

(vi) **खनिज संसाधन**—इस पर्वत पर प्रचुर मात्रा में कोयला, पेट्रोल तथा अन्य अनेक खनिज पदार्थ प्राप्त होने की सम्भावना है।

3. भारत के उत्तरी मैदानी भागों का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों में कीजिए

(i) विस्तार (ii) उच्चावच (iii) वनस्पति

(iv) व्यवसाय (v) जल प्रवाह।

उत्तर उत्तर का विशाल मैदान हिमालय की उत्पत्ति के पश्चात् निर्मित एक नवीन भू-खण्ड है, जिसका निर्माण सिन्धु, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा बहाकर लाए गए अवसादी निक्षेप से हुआ है।

(i) **उत्तर के विशाल मैदान की स्थिति**—हिमालय पर्वत तथा दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार के बीच सिन्धु, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र जैसी महान् नदियों की निक्षेप क्रिया द्वारा निर्मित विशाल मैदान को 'उत्तरी मैदान' या 'सिन्धु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान' भी कहा जाता है। उत्तर भारत में स्थित होने के कारण इसे उत्तरी भारत का 'विशाल मैदान' भी कहा जाता है।

(ii) **भौतिक संरचना का विस्तार**—इस मैदान की पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई लगभग 3200 किमी तथा औसत चौड़ाई 150 से 300 किमी है। इस मैदान में जलोढ़ निक्षेप की अधिकतम गहराई 1000 से 2000 मी है। उत्तर से दक्षिण में इस मैदान को तीन भागों में बाँटा जाता है।

भाबर 8 से 10 किमी की चौड़ाई वाली पतली पट्टी के रूप में शिवालिक पर्वत श्रृंखला के गिरिपाद में समानान्तर फैली है। इसके परिणामस्वरूप हिमालय पर्वत श्रेणियों से बाहर निकलती नदियाँ यहाँ पर भारी जल भार; जैसे—बड़े शैल व गोलाश्म जमा कर देती हैं और कभी-कभी स्वयं इसी में लुप्त हो जाती हैं। भाबर के दक्षिण में तराई क्षेत्र है, जिसकी चौड़ाई 10 से 20 किमी है। भाबर क्षेत्र में लुप्त नदियाँ यहाँ पुन: धरातल पर निकल आती हैं। यह क्षेत्र प्राकृतिक वनस्पति से ढका रहता है और विभिन्न वन्य जीवों का घर है। तराई के दक्षिण में वे मैदान हैं, जो पुराने और नए जलोढ़ से बने होने के कारण **बांगर** या **खादर** कहलाते हैं। यह विशाल मैदान विश्व का सबसे उर्वर एवं सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है। भारत की लगभग 45% जनसंख्या इसी मैदान में निवास करती है।

(iii) **उच्चावच**—इस मैदान की चौड़ाई पूर्व से पश्चिम की ओर क्रमश: कम होती जाती है। पश्चिम की ओर इसकी चौड़ाई 480 किमी, जबकि पूर्व में घटकर मात्र 145 किमी रह जाती है। इसका ढाल अत्यन्त मन्द है तथा इसका अधिकांश भाग समुद्र तल से 150 मी से अधिक ऊँचा नहीं है। इस मैदान का विस्तार उत्तरी राजस्थान, पजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा असोम राज्यों में है। पश्चिम की ओर यह मैदान थार मरुस्थल में मिल गया है। इस मैदान को नदियों द्वारा प्रतिवर्ष उर्वर काँप मिट्‌टी से पोषित किया जाता है, जिस कारण इसमे अवसादी निक्षेपण प्रक्रिया सतत् रूप से जारी है।

(iv) **वनस्पति**—उत्तर के विशाल मैदान को मानसून से प्रचुर मात्रा में वर्षा प्राप्त होती है। इसी कारण यहाँ मानसूनी वन या उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वन पाए जाते हैं। इन वनों में साल, सागौन, आम आदि वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त मैदान के कम वर्षा वाले भागों में शुष्क पर्णपाती वन तथा झाड़ियाँ भी पाई जाती हैं। शुष्क ऋतु में ये वन अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। तेन्दू , पलास, अमलतास, बेल, खैर, अक्सलवुड आदि इनकी प्रमुख प्रजातियाँ हैं।

(v) **जल प्रवाह नोट**—जल प्रवाह के लिए अध्याय 3 देखें।

(vi) **कृषि/व्यवसाय**—उत्तर के विशाल मैदान में रहने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यह मैदान विश्व में सबसे अधिक उपजाऊ मैदानों में से एक है। यहाँ गेहूँ, चावल, दलहन, गन्ना तथा मोटे अनाज प्रमुख रूप से उगाए जाते हें। यहाँ से अनेक कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल भी प्राप्त होता है। अत: यहाँ पर चीनी एवं जूट उद्योग जैसे व्यवसायों की महत्त्वपूर्ण इकाइयाँ स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त नदियों की अधिकता के कारण इन क्षेत्रों में मत्स्य पालन का विकास सम्भव है।

(vii) **आर्थिक महत्त्व**—उत्तर का विशाल मैदान कृषि सम्पन्न प्रदेश है। यहाँ से भारत की विशाल जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए खाद्यान्नों का उत्पादन होता है। समतल होने के कारण यहाँ रेल, सड़क आदि यातायात के साधनों का सर्वाधिक विकास हुआ है। इस कारण यहाँ उद्योगों का भी प्रचुर विकास हुआ है। इसके अलावा यहाँ भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग भी निवास करता है। संक्षेप में, उत्तर का विशाल मैदान सांस्कृतिक, आर्थिक व मानव अधिवास की दृष्टि से अत्यधिक उपयोगी है।

4. भारत के दक्षिणी पठारी भाग का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों में कीजिए

(i) स्थिति (ii) विस्तार

(iii) खनिज सम्पदा

भारत के दक्षिण पठार का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए

(i) स्थिति एवं विस्तार, (ii) प्राकृतिक बनावट, (iii) भौतिक लक्षण एवं खनिज।

उत्तर (i) दक्कन के पठार की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार—दक्कन का पठार प्रायद्वीपीय पठार का एक भाग है। इस पठार का विस्तार विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी तथा प्रायद्वीपीय पठार के दक्षिणी छोर के मध्य है। यह त्रिभुजाकार है। उत्तरी भाग में इसकी चौड़ाई सर्वाधिक है। इसके उत्तर में विन्धाचल पर्वत श्रेणी तथा पूर्वी भाग में महादेव व मैकाल पहाड़ियाँ हैं। इसके पश्चिम में पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला तथा पूर्व में पूर्वी घाट पर्वत श्रृंखला है।

(ii) धरातलीय प्राकृतिक बनावट—दक्कन का पठार त्रिभुजाकार है। यह पठार मुख्यत: लावा से निर्मित है। इसकी औसत ऊँचाई 600 मी है। दक्षिण में यह पठार 1000 मी ऊँचा है, किन्तु उत्तर में इसकी ऊँचाई 500 मी ही है। लगभग 2 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल वाले इस विशाल पठार की ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। इस पठार के पूर्वी तथा पश्चिमी किनारों पर पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। पश्चिमी घाट श्रृंखला उत्तर में तापी नदी की घाटी से दक्षिण में कन्याकुमारी तक 1500 किमी लम्बाई में विस्तृत है। इसकी सर्वोच्च चोटी अनाईमुडी है, जो 2,696 मी ऊँची है। पूर्वी घाट दक्कन के पठार की पूर्वी सीमा पर स्थित है यह ओडिशा के उत्तर पूर्वी भाग से आरम्भ होकर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी के समानान्तर नीलगिरि तक फैला है। इसे कृष्णा, गोदावरी तथा कावेरी नदियों ने अनेक स्थानों पर खण्डित कर दिया है।

(iii) भौगोलिक महत्त्व भौतिक संरक्षण—दक्कन के पठार के भौगोलिक महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं की सहायता से समझा जा सकता है

- दक्कन का पठार गोण्डवानालैण्ड का भू-भाग होने के कारण एक स्थिर भू-खण्ड है। इस कारण यह भूकम्प, भूस्खलन जैसी आपदाओं से मुक्त है।
- इस पठार के तीनों ओर समुद्र है, जो हिन्द महासागर में भारत को विशिष्ट भौगोलिक स्थिति उपलब्ध कराता है, जोकि सामरिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। दक्कन के पठार का पश्चिमी तट खुरदरा है, जिससे यहाँ प्राकृतिक पत्तन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

  इस पठार के कारण ही दक्षिणी-पश्चिम मानसून दो भागों में बँट जाता है, जिससे भारत इनसे अधिकतम वर्षा प्राप्त करता है।

(iv) खनिज सम्पदा—अग्नेय कायान्तरित शैलों से निर्मित होने के कारण यह भू-भाग खनिज सम्पदा से सम्पन्न है। इस पठार के अन्तर्गत मध्य प्रदेश में मैंगनीज, संगमरमर, चूना-पत्थर, झारखण्ड व ओडिशा में मैंगनीज, क्रोमाइट, लोहा व कोयला, तेलंगाना में हीरा, कोयला, ग्रेनाइट, चूना-पत्थर तथा छत्तीसगढ़ में डोलोमाइट, लौह-अयस्क आदि पाया जाता है।

5. भारत के विशाल प्रायद्वीपीय पठार की पाँच प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर भू-गर्भीय रूप से भारत का प्रायद्वीपीय पठार पृथ्वी की सतह का प्राचीनतम भाग है। इसे भूमि का बहुत ही स्थिर भाग माना जाता है। मेज की आकृतिनुमा प्रायद्वीपीय पठार पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय और रूपान्तरित चट्टानों से निर्मित है। इसका निर्माण गोण्डवाना भूमि के टूटने और अपवाह के कारण हुआ है। इसी कारण इसे प्राचीनतम भू-भाग का हिस्सा माना जाता है। इस भाग में चौड़ी और छिछली घाटियाँ एवं गोलाकार पहाड़ियाँ हैं। प्रायद्वीपीय पठार के दो मुख्य भाग हैं—

(i) मध्य उच्च भूमि—यह भाग नर्मदा नदी के उत्तर में विस्तृत है। यह मालवा पठार के अधिकतर भागों पर फैला है। यह भाग दक्षिण में विन्ध्य श्रृंखला और उत्तर-पश्चिम में अरावली से घिरा है। पश्चिम में यह धीरे-धीरे राजस्थान के बलुई और पथरीले मरुस्थल से मिल जाता है।

(ii) दक्कन का पठार—प्रायद्वीपीय पठार का यह भाग त्रिभुजाकार है। यह नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है। उत्तर में इसके आधार चौड़े हैं, जहाँ सतपुड़ा की श्रृंखला है। महादेव, कैमूर और मैकाल श्रृंखला इसके पूर्वी विस्तार हैं।

6. हिमालय पर्वतमाला का संक्षिप्त रूप से विवरण दीजिए।

उत्तर हिमालय पर्वतमाला भारत की उत्तरी सीमा पर विस्तृत एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक लक्षण है।

हिमालय पर्वत श्रृंखला की लम्बाई 2,400 किमी है। पश्चिम से पूर्वी भाग तक इसकी चौड़ाई असमान वितरण को प्रदर्शित करती है। यह कश्मीर में 400 किमी और अरुणाचल में 150 किमी चौड़ा है। देशान्तरीय विस्तार के साथ हिमालय पर्वत श्रृंखला को निम्न तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) हिमाद्रि/महान् या आन्तरिक हिमालय—यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का सर्वाधिक उत्तरी भाग है। यह भाग सर्वाधिक सतत् है, जिसमें विश्व के सर्वाधिक ऊँचे पर्वत शिखर हैं। इन शिखरों की औसत ऊँचाई 6,000 मी है। हिमालय के इस भाग का क्रोड ग्रेनाइट से निर्मित है। यह क्षेत्र वर्षभर बर्फ से ढका होता है, जिससे यहाँ कई हिमानियों का प्रवाह होता रहता है।

(ii) हिमाचल या निम्न/लघु हिमालय—यह श्रृंखला हिमाद्रि के दक्षिणी भाग में है। इसकी ऊँचाई 3,700-4,500 मी के मध्य और चौड़ाई 50 किमी है। पीरपंजाल, धौलाधर और महाभारत यहाँ की प्रमुख श्रृंखलाएँ हैं। इसी भाग में कश्मीर घाटी, काँगड़ा व कुल्लू की घाटियाँ हैं। शिमला (हिमाचल प्रदेश), मसूरी, नैनीताल, रानीखेत, कौसानी (सभी उत्तराखण्ड) इसी क्षेत्र में हैं।

(iii) शिवालिक हिमालय—यह हिमालय की सबसे बाहरी श्रृंखला है। इसकी ऊँचाई 900-1,100 मी और चौड़ाई 10-50 किमी के मध्य है। यह नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से निर्मित है। शिवालिक हिमालय गहन कृषि व सघन वनीय क्षेत्र है। सीढ़ीनुमा कृषि और भेड़पालन यहाँ के जनजीवन का महत्त्वपूर्ण भाग है।

7. भारत के पूर्वी एवं पश्चिमी तटीय मैदानों की तुलना कीजिए।

उत्तर भारत के प्रायद्वीपीय पठार के किनारों पर संकीर्ण पट्टियों में विस्तृत, पश्चिमी और पूर्वी तटीय मैदान के मध्य अन्तर निम्नलिखित हैं—

पश्चिमी तटीय मैदान	पूर्वी तटीय मैदान
पश्चिमी तटीय मैदान, पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच स्थित एक संकीर्ण मैदान है।	पूर्वी तटीय मैदान, पूर्वी घाट और बंगाल की खाड़ी के मध्य विस्तृत है। यह विस्तृत और चौड़ा है।
इस मैदान का क्षेत्र संकीर्ण होने के साथ यहाँ का पहाड़ी भाग छिटका हुआ है	यह मैदान पूर्ण विकसित डेल्टाई प्रदेश है।
इसका विस्तार पश्चिमी तट के सहारे गुजरात से कन्याकुमारी तक है।	पूर्वी भाग में यह पश्चिम बंगाल से कन्याकुमारी तक विस्तृत है।
इसकी औसत चौड़ाई 40 किमी है।	यह 60 से 100 किमी तक चौड़ा है।
इसके उत्तरी भाग को 'कोंकण', मध्य भाग को 'कन्नड़' और दक्षिणी सिरे को 'मालाबार' कहा जाता है।	इसके उत्तरी और दक्षिणी भाग को क्रमश: 'उत्तरी सरकार' और 'कोरोमण्डल' तट कहा जाता है।
इस भाग की मुख्य नदियाँ तापी, नर्मदा, माण्डवी व जुआरी हैं।	इसकी मुख्य नदियाँ महानदी, गोदावरी, कावेरी और कृष्णा हैं।

8. हिमालय श्रेणी तथा पूर्वांचल पर्वत चोटियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हिमालय श्रेणी तथा पूर्वांचल पर्वत चोटियों में निम्नलिखित अन्तर हैं—

हिमालय श्रेणी	पूर्वांचल पर्वत चोटी
भारत की उत्तरी सीमा पर विस्तृत हिमालय अपनी प्रकृति में नवीन और संरचना के दृष्टिकोण से वलित पर्वत श्रृंखला है।	ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय की सर्वाधिक पूर्वी सीमा का निर्माण करती है।
यह श्रृंखला पश्चिम से पूर्व की ओर सिन्धु से ब्रह्मपुत्र नदी तक फैली है।	दिहांग महाखड्ड के बाद हिमालय दक्षिण दिशा की ओर एक मोड़ बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप यह भारत की पूर्वी सीमा के साथ फैल जाता है।
हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है। इसके उच्चावच भी अत्यधिक ऊबड़-खाबड़ हैं।	इनको पूर्वांचल या पूर्वी पहाड़ियों तथा पर्वत श्रृंखलाओं के नाम से जाना जाता है।
2400 किमी की लम्बाई में फैला हिमालय एक अर्द्ध-वृत्त का निर्माण करता है। यह कश्मीर में 400 किमी और अरुणाचल में 150 किमी है।	ये पहाड़ियाँ भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों से होकर गुजरती हैं।
पश्चिमी भाग की अपेक्षा पूर्वी भाग की ऊँचाई में अधिक विविधता पाई जाती है। इसकी चौड़ाई देशान्तरीय विस्तार के साथ हिमालय पर्वत श्रृंखला को निम्न तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है	ये सघन वन के क्षेत्र हैं, जो समानान्तर श्रृंखलाओं एवं घाटियों के रूप में विस्तृत हैं। पटकाई, नागा, मिजो एवं मणिपुर यहाँ की महत्त्वपूर्ण पहाड़ियाँ हैं।

❑❑❑

3

अपवाह

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत की प्रायद्वीपीय नदियों को जहाजरानी के लिए क्यों उपयुक्त नहीं माना जाता है?

उत्तर भारत की प्रायद्वीपीय क्षेत्रों की नदियाँ जहाजरानी के दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं हैं। इसका कारण इन नदियों में जल आपूर्ति में निरन्तरता का अभाव है। यहाँ की अधिकांश नदियों का बहाव वर्षा जल पर निर्भर करता है। इसके साथ ही नदियों के तल भी ऊँचे-नीचे, चट्टानी व तीव्र ढालों वाले हैं। समय-समय पर इन नदियों पर बाँधों के निर्माण ने भी जहाजरानी को कठिन कर दिया है।

2. भारत में नदियों के जल को प्रदूषित करने का सबसे अधिक सामान्य स्रोत क्या है? इसे नियन्त्रित करने के कोई दो सुझाव दीजिए।

उत्तर नदियों के जल को प्रदूषित करने वाले सामान्य स्रोत निम्न हैं—

(i) फैक्ट्रियाँ अपना कूड़ा-कचरा निकटवर्ती नदियों में बहा देती हैं, जिसके कारण जल प्रदूषित होता है।

(ii) शहरी क्षेत्रों का गन्दा पानी नदियों में बहाया जाता है, जो जल प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है।

जल प्रदूषण को नियन्त्रित करने के दो उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) फैक्ट्रियों से निकले कूड़े-कचरे को नदियों में गिराने से रोकना चाहिए।

(ii) अपशिष्ट पदार्थों का उपचार करके ही नदियों के पानी में मिलाने की अनुमति देनी चाहिए।

3. भारतीय झीलें एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं? उदाहरण सहित संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर भारतीय झीलें एक-दूसरे से निम्न प्रकार से भिन्न हैं—

(i) भारतीय झीलों के निर्माण की प्रक्रिया अलग-अलग है। इनमें से कुछ का निर्माण हिमानियों एवं बर्फ की चादरों से होता है, जबकि कई झीलों का निर्माण वायु, नदियों एवं मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा होता है।

(ii) यहाँ की झीलें स्थायी और अस्थायी दोनों प्रकृति की हैं। वर्षा जल पर आधारित झीलें अस्थायी, जबकि हिमानी निर्मित झीलें स्थायी प्रकृति की हैं।

(iii) भारतीय झीलों में मीठे जल और लवणीय जल दोनों शामिल हैं। वूलर झील और साम्भर झील क्रमश: मीठे और लवणीय जल की झीलें हैं।

4. बारहमासी तथा मौसमी नदियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बारहमासी तथा मौसमी नदियों में अन्तर निम्नलिखित हैं—

बारहमासी नदी	मौसमी नदी
इन नदियों में वर्षभर पानी रहता है।	इनमें केवल वर्षा ऋतु में ही पानी होता है।
वर्षा तथा बर्फ के पिघलने से प्राप्त जल ही इन नदियों के जल का स्रोत है।	वर्षा से प्राप्त जल ही इन नदियों के जल का स्रोत है।
हिमालय की अधिकतर नदियाँ बारहमासी हैं।	प्रायद्वीपीय नदियाँ अधिकतर मौसमी होती हैं।

5. 'नदियों को मानव सभ्यता की जीवन रेखा कहा जाता है।' इस कथन से आप कितना सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर नदियों को मानव सभ्यता की जीवन रेखा कहा जाता है। इसने प्राचीन सभ्यताओं को पृथ्वी पर फलने-फूलने को बेहतर एवं आदर्श अवसर प्रदान किया है। इन प्राचीन सभ्यताओं में सिन्धु घाटी सभ्यता, मिस्र सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता प्रमुख हैं।

नदी हमारे प्राथमिक क्षेत्र के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है, जिनमें कृषि सम्बन्धित गतिविधियाँ, मत्स्यन आदि शामिल हैं। इनके लिए सिंचाई और पर्याप्त जल की आपूर्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन हमारी नदियाँ हैं। ये अपने अपवाह क्षेत्र में नवीन मृदा का निक्षेपण करती हैं, जिसमें भरपूर उर्वरा शक्ति होती है। ये कृषि उत्पादन को बढ़ाने में मददगार होती हैं। नदियाँ हमारी वाणिज्यिक गतिविधियों की धमनियाँ हैं। इनका उपयोग विद्युत उत्पादन एवं यातायात के साधन के रूप में भी किया जाता है, जो सरल, पर्यावरण मित्र और अपेक्षाकृत सस्ता भी है।

6. भारतीय अपवाह तन्त्र के मुख्य लक्षण बताइए।

उत्तर भारतीय अपवाह तन्त्र के मुख्य लक्षण निम्न प्रकार हैं—

(i) भारतीय अपवाह तन्त्र का नियन्त्रण व निर्धारण उपमहाद्वीप की भौगोलिक आकृतियों द्वारा होता है।

(ii) भारतीय अपवाह तन्त्र को दो मुख्य वर्गों—हिमालय और प्रायद्वीपीय नदियों में विभाजित किया गया है।

(iii) यहाँ बारहमासी और मौसमी दोनों प्रकार की नदियाँ हैं। सामान्यत: इन नदियों का विस्तार हिमालय और प्रायद्वीपीय भाग में है।

7. हिमालय की नदियों की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर हिमालय की नदियों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) हिमालय से निकलने वाली अधिकांश नदियाँ बारहमासी हैं अर्थात् इनमें पूरे वर्ष जल मौजूद रहता है।

(ii) हिमालय की नदियों की धारा सबसे लम्बी अर्थात् उद्गम से लेकर समुद्र तक है।

(iii) ये अपनी ऊपरी धाराओं में गहन कटाव की गतिविधियाँ करती हैं और गाद तथा रेत का भारी प्रक्षेपण लेकर बहती हैं।

(iv) ये पर्वतों में से महाखड्ड बनाती हुई निकलती हैं तथा ये समुचित विकसित डेल्टा बनाती हैं।

8. सिन्धु नदी तन्त्र की छः प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर सिन्धु नदी तन्त्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बत की मानसरोवर झील के पास है।

(ii) 2,900 किमी लम्बी सिन्धु नदी, विश्व की सर्वाधिक लम्बी नदियों में से एक है।

(iii) यह भारत के जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करती है।

(iv) सिन्धु का एक-तिहाई भाग भारत के जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पंजाब में है, जबकि शेष पाकिस्तान में है।

(v) कराची के पूर्व में यह अरब सागर में गिरती है।

(vi) इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ सतलुज, व्यास, रावी, चेनाब व झेलम हैं।

9. गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा को 'सुन्दरवन डेल्टा' कहा जाता है। इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) गंगा-ब्रह्मपुत्र के मुहाने पर, बंगाल की खाड़ी के समीप स्थित यह विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।

(ii) सुन्दरवन डेल्टा का निर्माण गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों की वितरणिकाओं में विभाजन के पश्चात् हुआ है, जो अपने साथ बहुतायत मात्रा में गाद व मिट्टी लाती हैं।

(iii) यह क्षेत्र सघन जनसंख्या वाला और उपजाऊ प्रदेश है।

(iv) नदी के मीठे जल और समुद्र के लवणीय जल के निरन्तर मिलते रहने से इसके निचले भाग में दलदली भूमि का निर्माण हो गया है।

10. ब्रह्मपुत्र नदी की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर ब्रह्मपुत्र नदी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम तिब्बत स्थित मानसरोवर झील के पास है। यह विश्व की महत्त्वपूर्ण नदियों में से एक है। इसकी लम्बाई 3,848 किमी है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला के समानान्तर पूर्व दिशा में बहती है।

(ii) यह तिब्बत स्थित नामचा बरवा शिखर के पास अंग्रेजी के 'यू' (U) अक्षर जैसा मोड़ बनाती है। यहीं से (अरुणाचल प्रदेश) ब्रह्मपुत्र भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करती है। दिहांग, लोहित, केनुला इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

11. गंगा द्रोणी के विस्तार को बताइए।

उत्तर गंगा नदी का उद्गम हिमालय के गोमुख हिमनद से होता है, जो कि उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले में स्थित है। इसकी कुल लम्बाई 25, 10 किमी है। यमुना, सोन, रामगंगा, घाघरा, गण्डक, कोसी तथा विन्ध्याचल से निकलने वाली नदियाँ चम्बल, बेतवा, केन तथा सोन भी गंगा की सहायक नदियाँ हैं। गंगोत्री से आने वाली इस नदी का नाम गंगा तब पड़ता है, जब इसके दो नदी-शीर्ष अलकनन्दा तथा भागीरथी देवप्रयाग में मिलते हैं।

यह हरिद्वार के निकट मैदानी भाग में प्रवेश करती है। इलाहाबाद के निकट इसमें यमुना नदी आकर मिल जाती है। यह स्थान संगम कहलाता है। इससे आगे उत्तर की ओर से गोमती, घाघरा, गण्डक और कोसी जैसी सहायक नदियाँ इसमें मिलती हैं। दक्षिण की ओर से इसमें सोन नदी आकर मिलती है। बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले यह विशाल डेल्टा का निर्माण करती है, जिसे 'सुन्दरवन डेल्टा' कहते हैं।

12. प्रायद्वीपीय भारत की किन्हीं दो नदियों की तीन-तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर नर्मदा और गोदावरी प्रायद्वीपीय भारत की दो प्रमुख नदी हैं। इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

नर्मदा नदी—नर्मदा नदी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) नर्मदा का उद्गम मध्य प्रदेश स्थित अमरकण्टक पहाड़ी के पास है।

(ii) इसका बहाव पश्चिम की ओर एक भ्रंश घाटी के अन्तर्गत है।

(iii) नर्मदा द्रोणी मध्य प्रदेश सहित गुजरात में विस्तृत है।

गोदावरी नदी—गोदावरी नदी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) गोदावरी भारत की सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी है। इसे 'दक्षिण की गंगा' भी कहा जाता है।

(ii) यह नासिक जिले में पश्चिमी घाट से निकलती है।

(iii) गोदावरी की लम्बाई 1,500 किमी है। इसकी द्रोणी महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा और आन्ध्र प्रदेश में है।

13. प्रायद्वीपीय भारत में नहर बनाना कठिन है, क्यों? दो कारण लिखिए।

उत्तर प्रायद्वीपीय भारत में नहर बनाना कठिन है। इसके दो मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(i) प्रायद्वीपीय पठार के उत्तरी-पश्चिमी भाग में नदी, खड्ड एवं महाखड्ड हैं, जो इसके धरातल को जटिल बनाते हैं, जिस कारण नहरों का निर्माण दुष्कर होता है।

(ii) नहरों के लिए सदानीरा नदियों की आवश्यकता होती है, जबकि दक्कन के पठार की अधिकांश नदियाँ वर्षा पर निर्भर हैं, जो शीतकाल व ग्रीष्मकाल में जल के अभाव से ग्रसित हो जाती हैं।

14. प्रायद्वीपीय नदियाँ स्वभाव से मौसमी क्यों होती हैं? कोई तीन कारण बताइए?

उत्तर प्रायद्वीपीय नदियों के मौसमी होने के कारण निम्न हैं—

(i) प्रायद्वीपीय नदियों का प्रवाह वर्षा पर आधारित होता है।

(ii) प्रायद्वीपीय नदियाँ अपनी सहयोगी हिमालय की नदियों की तुलना में छोटी और उथली धारा में पाई जाती हैं।

(iii) इनकी सहायिकाएँ अत्यन्त छोटी तथा संख्या में कम होती हैं और बहुत कम मात्रा में पानी लाती हैं, जो मुख्य नदी की जलमात्रा को बढ़ा पाने में असमर्थ होता है।

अत: शुष्क ऋतु में बड़ी नदियों की धाराओं में भी बहुत कम मात्रा में जल पाया जाता है।

15. कृष्णा द्रोणी की किन्हीं तीन विशेषताओं को बताइए।

उत्तर कृष्णा द्रोणी की तीन विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) कृष्णा नदी महाबलेश्वर के पास एक झरने में से निकलती है। यह 1,400 किमी तक बहती है।

(ii) तुंगभद्रा, कोयना, घाटप्रभा, मूसी और भीमा इसकी कुछ सहायक नदियाँ हैं।

(iii) इसकी अपवाह द्रोणी महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्र प्रदेश के साथ लगती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. नदी तन्त्र किसे कहते हैं? भारत के उत्तरी विशाल मैदान का निर्माण किन नदी तन्त्रों से हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर नदी तन्त्र से आशय उस नदी प्रणाली से है, जिसमें एक मुख्य नदी और उसकी सहायक नदियों को शामिल किया जाता है। प्रत्येक नदी तन्त्र का अपना एक जल प्रवाह क्षेत्र होता है, जिसका जल मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के जल के साथ बहाकर ले जाती है। भारत के उत्तरी विशाल मैदान का निर्माण तीन नदी तन्त्रों द्वारा हुआ है—सिंधु नदी तन्त्र, गंगा नदी तन्त्र और ब्रह्मपुत्र नदी तन्त्र।

जल प्रवाह तन्त्र या उपवाह तन्त्र—उद्गम की दृष्टि से भारतीय अपवाह तन्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है

(i) हिमालयी अपवाह तन्त्र इस अपवाह तन्त्र को निम्न नदी तन्त्रों के तहत बाँटा गया है

सिन्धु नदी तन्त्र—यह विश्व के सबसे बड़े नदी तन्त्रों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल 11,65,000 वर्ग किमी है। इसकी कुल लम्बाई 2880 किमी है, जिसमें भारत में 1114 किमी भाग ही है। सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बत में कैलाश पर्वत श्रेणी में बोखर चू के निकट एक हिमनद से होता है।

गंगा नदी तन्त्र—गंगा नदी अपनी जल प्रणाली तथा सांस्कृतिक महत्त्व के कारण भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी है। यह नदी उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले के समीप **गोमुख हिमनद** से निकलती है। यहाँ यह भागीरथी नाम से जानी जाती है। देवप्रयाग में यह अलकनन्दा से मिलकर **गंगा** के नाम से जानी जाती है।

ब्रह्मपुत्र नदी तन्त्र—विश्व की सबसे बड़ी नदियों में से एक ब्रह्मपुत्र का उद्गम कैलाश पर्वत श्रेणी में मानसरोवर के निकट **चेमायुंगडुंग हिमनद** से होता है। तिब्बत में इसे सांग्पो नाम से जाना जाता है।

(ii) प्रायद्वीपीय भारत का अपवाह तन्त्र—दक्कन के पठार का अपवाह तन्त्र हिमालयी नदियों के अपवाह तन्त्र से पुराना है यह तथ्य नदियों की प्रौढ़ावस्था तथा नदी घाटियों के चौड़े व उथले होने से स्पष्ट होता है। पश्चिम घाट पर्वत श्रृंखला बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों एवं अरब सागर में गिरने वाली छोटी नदियों के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।

2. गंगा नदी तन्त्र की प्रमुख विशेषताओं का विवरण दीजिए।

उत्तर गंगा नदी तन्त्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) गंगा नदी की मुख्य धारा 'भागीरथी' है। यह गंगोत्री हिमानी से निकलती है।

(ii) भागीरथी देवप्रयाग (उत्तराखण्ड) में एक अन्य धारा अलकनन्दा से मिलती है और गंगा का निर्माण करती है।
गंगा हरिद्वार के पास पर्वतीय भाग को छोड़कर मैदानी भाग में प्रवेश करती है।

(iii) यमुना, घाघरा, कोसी एवं गण्डक हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ हैं। प्रायद्वीपीय भाग से गंगा की मुख्य सहायक नदियाँ चम्बल, बेतवा व सोन हैं।

(iv) यह अपने मुहाने पर ब्रह्मपुत्र नदी के साथ मिलकर विशाल 'सुन्दरवन डेल्टा' का निर्माण करती है। यह विश्व का सबसे बड़ा और तीव्र वृद्धि वाला डेल्टा है।

(v) गंगा नदी तन्त्र का अपवाह क्षेत्र उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में विस्तृत है।
गंगा नदी को 4 नवम्बर, 2008 को राष्ट्रीय नदी का दर्जा प्रदान किया गया।

3. प्रायद्वीपीय भारत की नदियों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर भारत के प्रायद्वीपीय भाग में प्रवाहित होने वाली नदियाँ प्रायद्वीपीय भारत की नदियाँ कहलाती हैं। पश्चिमी घाट प्रायद्वीपीय भारत में मुख्य जल विभाजक का निर्माण करता है। पश्चिमी घाट भारत के प्रायद्वीपीय भाग में पश्चिमी तट के समानान्तर उत्तर से दक्षिण की ओर स्थित है। महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी इत्यादि प्रायद्वीपीय भारत में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ हैं। ये नदियाँ पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं तथा अपने मुहाने पर डेल्टा का निर्माण करती हैं। नर्मदा एवं ताप्ती प्रायद्वीपीय भारत में पश्चिमी घाट से पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली मुख्य नदियाँ हैं। ये नदियाँ पश्चिम की ओर प्रवाहित होती हुईं अरब सागर में गिरती हैं तथा अपने मुहाने पर ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं।

गोदावरी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी नदी है, जो महाराष्ट्र के नासिक जिले से निकलती है। इसे दक्षिण की गंगा उपनाम से जाना जाता है। महानदी छत्तीसगढ़ की उच्च भूमि से निकलती है तथा ओडिशा से बहते हुए बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। कावेरी पश्चिमी घाट की ब्रह्मगिरि श्रृंखला से निकलती है तथा केरल, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में प्रवाहित होती हुई कुडलूर के दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। नर्मदा मध्य प्रदेश के अमरकण्टक की पहाड़ी से निकलती है तथा मध्य प्रदेश एवं गुजरात से प्रवाहित होती हुई अरब सागर में गिरती है। इसी नदी पर प्रसिद्ध धुआँधार जलप्रपात स्थित है। ताप्ती मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में सतपुड़ा की श्रृंखला से निकलती है तथा मध्य प्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्र राज्यों से प्रवाहित होकर अरब सागर में मिल जाती है।

4. 'नदियाँ भारत के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।' व्याख्या कीजिए।

उत्तर देश की अर्थव्यवस्था में नदियों का महत्त्व निम्न प्रकार है—

(i) जल ही जीवन है। यह नहाने, पीने, साफ़-सफ़ाई, पौधों की सिंचाई आदि कई मानवीय गतिविधियों के लिए अनिवार्य होता है।

(ii) भारत की नदी द्रोणियाँ देश के लिए अनुपम कृषि भूमियाँ प्रदान करती हैं। कृषि अब भी भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है।

(iii) नदियों से नहरें बनाकर खेतों की बारहमासी सिंचाई होती है, जो भारत जैसे मानसून-सापेक्ष देश के लिए महत्त्वपूर्ण है।

(iv) बहुउद्देशीय बाँध (जैसे—भाखड़ा-नाँगल बाँध) भारतीय नदियों पर ही बने हैं, जिनसे कृषि सुविधाएँ, जल-विद्युत विकास, सिंचाई जैसी गतिविधियाँ चलती हैं।

(v) भारत में गंगा द्रोणी जैसी नदी द्रोणियाँ देश के सबसे सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं। नदी परिवहन से औद्योगीकरण के विकास में भी अत्यन्त सहायता मिलती है।

5. 'भारतीय इतिहास के आदिकाल से ही नदियाँ मूलभूत महत्त्व रखती आई हैं।' इस कथन की व्याख्या तीन कारण बताकर करें।

उत्तर भारतीय इतिहास में नदियों की भूमिका का वर्णन निम्नलिखित है—

(i) जल ही जीवन है। यह एक आधारभूत संसाधन है। यह हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

(ii) नदी घाटी सभ्यताएँ विश्व की प्रारम्भिक सभ्यताओं का ऐतिहासिक दृष्टि से केन्द्रक रही हैं; जैसे—नील घाटी की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता आदि।

(iii) नदियों ने आप्लावित मैदान तथा डेल्टाओं का निर्माण किया है, जो कृषि के लिए उपजाऊ भूमि प्रदान करते हैं। ये उर्वर भूमि उपलब्ध कराती हैं।

(iv) नदी घाटियाँ विश्वभर में सर्वाधिक सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं, क्योंकि ये कृषि के लिए सर्वोत्तम भूमि तथा जल आपूर्ति सुनिश्चित बनाती हैं। भारत में गंगा द्रोणी इसका सर्वोत्तम उदाहरण मानी जाती है।

❑❑❑

4

जलवायु

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में वर्षा के वितरण में उच्चावच के प्रभाव पर प्रकाश डालिए।

उत्तर उच्चावच अर्थात् भू-भाग का भौतिक स्वरूप भारत में वर्षा के वितरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। इसको निम्नलिखित तीन उदाहरणों से समझा जा सकता है—

- हिमालय पर्वत मानसूनी पवनों को रोककर उत्तर भारत में वर्षा का कारण बनता है।
- जून व जुलाई में पश्चिमी घाट तथा असोम में पवनाभिमुखी ढाल अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं, जबकि पश्चिमी घाट के साथ लगा दक्षिणी पठार पवनाभिमुखी ढाल अति अल्प वर्षा प्राप्त करता है।
- थार मरुस्थल में मानसूनी पवनों के मार्ग में अवरोध न होने के कारण यहाँ वर्षा नाममात्र की होती है।

2. उत्तर-पूर्वी मानसून तथा लौटते हुए मानसून में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर उत्तर-पूर्वी मानसून तथा लौटते मानसून में अन्तर—

आधार	उत्तर-पूर्वी मानसून	लौटता हुआ मानसून
उत्पत्ति	उत्तर-पूर्वी मानसून की उत्पत्ति भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में उच्च वायुदाब के क्षेत्र बन जाने से पवनें स्थलीय भागों से सागरीय भाग की ओर चलने से होती है।	अक्टूबर एवं नवम्बर के महीनों में देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में उच्च वायुदाब विकसित हो जाता है, जिससे मानसून लौटने लगता है। इसी से लौटता हुआ मानसून बनता है।
मौसम	उत्तर-पूर्वी मानसून के कारण ऋतु बड़ी सुहावनी तथा आनन्ददायक होती है। स्वच्छ आकाश, निम्न तापमान एवं आर्द्रता, शीतल, मन्द समीर तथा वर्षा की कमी इस ऋतु की विशेषताएँ हैं।	लौटते हुए मानसून के समय पर्यावरण बड़ा ही उमस भरा होता है। तापमान घटना आरम्भ हो जाता है, आकाश स्वच्छ रहता है तथा मृदा में आर्द्रता बनी रहती है।

3. थार रेगिस्तान में कम वर्षा होने के दो कारण बताइए।

उत्तर पश्चिमी राजस्थान या थार मरुस्थल अत्यन्त शुष्क स्थान है। यहाँ वर्षा का औसत 25 सेमी से भी कम रहता है। यहाँ वर्षा कम होने के निम्नलिखित कारण हैं—

1. **अरावली पर्वतमाला की स्थिति**—अरावली पर्वतमाला दक्षिण-पश्चिमी दिशा से उत्तर-पूर्व की ओर 612 किमी की लम्बाई में फैली है। यह नम मानसूनी पवनों की राह में बाधा उत्पन्न नहीं करती है, जिस कारण मानसून बिना वर्षा किए आगे बढ़ जाते हैं।
2. **मानसून की नमी समाप्त होना**—दूसरा कारण दक्षिण-पश्चिमी मानसून का यहाँ पहुँचने तक शुष्क या नमीरहित होना है, क्योंकि यहाँ की गर्मी मानसूनी पवनों की ठोस नमी भी सोख लेती है, जिससे पवनें बिना वर्षा किए ही ऊपर उठ जाती हैं, इन्हीं कारणों से यहाँ वर्षभर सूखा रहता है।

4. दक्षिणी प्रायद्वीपीय भाग में जाड़ों में वर्षा होती है, कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर शीतकाल में उत्तरी भारत के भू-भाग में अत्यधिक ठण्ड हो जाने के कारण उच्च वायुदाब तथा हिन्द महासागर में तापमान बढ़ने के कारण निम्न वायुदाब केन्द्र स्थापित हो जाता है। अत: इस समय पवनें स्थल से सागर की ओर चलने लगती हैं। इन पवनों को लौटता हुआ मानसून या मानसून का विवर्तन कहा जाता है।

लौटते समय जब ये पवनें बंगाल की खाड़ी से होकर गुजरती हैं, तो कुछ नमी ग्रहण कर लेती हैं। आगे जब ये प्रायद्वीपीय भाग में प्रवेश करती हैं, तो पूर्वी घाट की पहाड़ियों से टकराकर तमिलनाडु व आन्ध्र प्रदेश के कोरोमण्डल तट पर वर्षा करती हैं। इसके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्वी कर्नाटक तथा दक्षिण-पूर्वी केरल में भी इनके द्वारा वर्षा होती है।

5. मौसम एवं जलवायु में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मौसम और जलवायु में अन्तर निम्नलिखित हैं—

मौसम	जलवायु
मौसम एक विशेष समय में एक क्षेत्र के वायुमण्डल की अवस्था है।	जलवायु एक क्षेत्र में लम्बी समयावधि में मौसमी अवस्थाओं एवं विविधताओं का कुल योग है।
मौसमी अवस्था अस्थिर प्रकृति की होती है। यह एक दिन में कई बार बदल सकती है।	इसकी प्रकृति स्थिर और दीर्घ अवधि (30 वर्ष से अधिक) की होती है।
यह किसी पूर्व-निर्धारित घटकों द्वारा प्रभावित होता है; जैसे—तापमान, आर्द्रता आदि।	यह अपने सभी घटकों का सामूहिक प्रभाव है।

6. 'मानसून को उसकी अनिश्चितताओं के लिए जाना जाता है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मानसून अनिश्चितताओं का प्रतीक है। इसमें निरन्तरता का अभाव पाया जाता है। भारतीय जलवायु मानसूनी प्रकार की है, जिस पर देश की अर्थव्यवस्था व जनजीवन की पहचान जुड़ी है। मानसून जब एक क्षेत्र में अपने आगमन से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न कर सकता है, उसी समय यह अन्य क्षेत्र में सूखे का भी कारण हो सकता है। इसका कारण वर्षा का असमान वितरण है।

मानसून आगमन के समय पश्चिमी घाटों के पवनमुखी ढालों पर भारी वर्षा होती है। यह वर्षा 250 सेमी से भी अधिक होती है। वहीं दक्षिण पठार के वृष्टि छाया क्षेत्रों तथा मध्य प्रदेश, राजस्थान व गुजरात के कुछ हिस्सों और लेह (जम्मू-कश्मीर) में कम वर्षा होती है। देश के उत्तर-पूर्वी हिस्सों में सर्वाधिक वर्षा होती है।

7. ग्रीष्म मानसून तथा शीत मानसून में अन्तर स्पष्ट करो।

उत्तर ग्रीष्म तथा शीत मानसून में निम्न अन्तर हैं—

ग्रीष्म मानसून	शीत मानसून
ये जून से सितम्बर के महीने में चलती हैं।	ये दिसम्बर से फरवरी के महीने में चलती हैं।
ये समुद्र पर उच्च दबाव वाले क्षेत्र से धरती पर निम्न दबाव वाले क्षेत्र की ओर चलती हैं।	ये धरती पर उच्च दबाव वाले क्षेत्र से समुद्र पर निम्न दबाव वाले क्षेत्र की ओर चलती हैं।
ये भारत के अधिकतर भागों में वर्षा करती हैं।	ये केवल तमिलनाडु के तट पर थोड़ी सी वर्षा करती हैं।
ये भारत में दो शाखाओं में बहती हैं, जैसे अरब सागर की शाखा तथा बंगाल की खाड़ी की शाखा।	इनकी केवल एक ही शाखा है।

8. लू तथा पश्चिमी विक्षोभ में अन्तर बताइए।

उत्तर लू तथा पश्चिमी विक्षोभ में निम्न अन्तर हैं—

लू	पश्चिमी विक्षोभ
लू ग्रीष्म ऋतु में पाई जाती है।	पश्चिमी विक्षोभ की पवनें सर्दियों की ऋतु में चलती हैं।
ये शक्तिशाली, धूल भरी, गर्म शुष्क पवनें होती हैं, जो उत्तरी भारत से उत्तर पश्चिम की ओर दिन में चलती हैं।	कम दबाव की यह व्यवस्था भूमध्यसागर के ऊपर से और पश्चिमी एशिया से उठती हैं और भारत में चलती हैं।
उत्तरी भारत में धूल भरी आँधियाँ मई के महीने में प्राय: चलती रहती हैं।	ये पवनें भारत में जनवरी के मास में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में चलती हैं।
ये आँधियाँ अस्थायी राहत देती हैं, क्योंकि ये तापमान कम कर देती हैं और हल्की वर्षा तथा ठण्डी हवा भी ले आती हैं।	ये सर्दियों में मैदानों में वर्षा लाती हैं। इसकी जरूरत भी होती है और पर्वतों पर बर्फबारी करती हैं।
इन हवाओं से सीधा सम्पर्क घातक भी हो सकता है।	रबी की फसलों की उपज के लिए सर्दियों की वर्षा का अत्यन्त लाभ होता है, जिसके कारण इनका महत्त्व बढ़ जाता है।

9. बंगाल की खाड़ी से उत्पन्न दक्षिण-पश्चिमी मानसून शाखा की तीन विशेषताएँ लिखो।

उत्तर दक्षिण-पश्चिमी मानसून की शाखा की तीन विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) मानसून भारतीय प्रायद्वीपीय के दक्षिणी सिरे पर जून के प्रथम सप्ताह में पहुँचता है। परिणामत: यह अरब सागर शाखा तथा बंगाल की खाड़ी की दो अलग शाखाओं में बँट जाता है।

(ii) अरब सागर की शाखा मुम्बई में 10 दिन बाद लगभग 10 जून तक पहुँचती है। मध्य जून तक अरब सागर की मानसून-शाखा सौराष्ट्र-कच्छ तथा देश के केन्द्रीय भागों के ऊपर जा पहुँचती है।

(iii) अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी की मानसून शाखाएँ गंगा के मैदानों के ऊपर उत्तर-पश्चिमी भागों से जा मिलती हैं। दिल्ली में बंगाल की खाड़ी शाखा की मानसून से प्राय: जून के अन्त में वर्षा होती है (अनुमानित तिथि 29 जून मानी जाती है)।

10. 'जैसे-जैसे हम पश्चिमी बंगाल से पंजाब तक पश्चिम की ओर जाते हैं, वर्षा की मात्रा कम होती जाती है।' दो कारण बताओ।

उत्तर दो कारण निम्न हैं—

(i) ग्रीष्म ऋतु में ये दोनों क्षेत्र, अधिकतर वर्षा, बंगाल की खाड़ी की शाखा वाले मानसून से प्राप्त करते हैं, जोकि गंगा घाटी की ओर मुड़ जाती है यह हिमालय पर्वत को पार नहीं कर पाती और हिमालय के साथ-साथ पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। गंगा का निचला भाग ऊपरी भाग से अधिक और पहले वर्षा प्राप्त करता है। यही कारण है कि कोलकाता में अधिक वर्षा होती है।

(ii) इसके बाद मानसून पश्चिम की ओर मुड़ जाती है तथा शुष्क होती चली जाती है, क्योंकि समुद्र से दूरी बढ़ती जाती है, इसलिए पंजाब में कम वर्षा होती है।

11. भारत उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनों के क्षेत्र में अवस्थित है। इन पवनों की मुख्य विशेषताओं का विवरण दीजिए।

उत्तर उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) उत्तर-पूर्वी पवन की उत्पत्ति उत्तरी गोलार्द्ध के उपोष्ण कटिबन्धीय उच्च दाब पट्टियों से होती है।

(ii) ये पवनें दक्षिण दिशा की ओर चलती हैं। कोरिओलिस बल के प्रभाव के कारण ये पवनें दाहिनी ओर विषुवतीय निम्न दाब वाले क्षेत्रों की ओर बढ़ती हैं।

(iii) सामान्यत: इनमें नमी की मात्रा कम होती है, क्योंकि इनकी उत्पत्ति और बहाव दोनों स्थलीय भागों पर होते हैं।

12. अन्त:उष्णकटिबन्धीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) का वर्णन कीजिए।

उत्तर अन्त:उष्णकटिबन्धीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं—

(i) ITCZ विषुवतीय अक्षांशों में विस्तृत गर्त एवं निम्न दाब का क्षेत्र है।

(ii) यह अभिसरण क्षेत्र विषुवत् वृत्त के लगभग समानान्तर होता है।

(iii) इसी क्षेत्र में उत्तर-पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें मिलती हैं।

(iv) सूर्य की आभासी गति के साथ ITCZ उत्तर या दक्षिण की ओर खिसकता है।

13. 'दक्षिणी दोलन' से क्या अभिप्राय है? इसकी प्रमुख विशेषता बताइए।

उत्तर सामान्य रूप से जब दक्षिणी प्रशान्त महासागर के उष्णकटिबन्धीय पूर्वी भाग में उच्च दाब होता है, तब हिन्द महासागर के उष्णकटिबन्धीय पूर्वी भाग में निम्न दाब की स्थिति होती है, परन्तु कुछ विशेष वर्षों की स्थिति में वायुदाब की यह स्थिति विपरीत होती है। पूर्वी प्रशान्त महासागर के ऊपर हिन्द महासागर की तुलना में निम्न दाब का क्षेत्र बन जाता है। दाब की अवस्था में इस नियतकालिक परिवर्तन को 'दक्षिणी दोलन' कहा जाता है।

एल निनो, दक्षिणी दोलन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण लक्षण है। यह गर्म जलधारा है, जो पेरू की ठण्डी धारा के स्थान पर प्रत्येक 2 या 5 वर्ष के अन्तराल पर बहती है। वायुदाब की अवस्था में परिवर्तन इसी से होता है।

14. मानसून की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर मानसून की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) मानसून स्पन्दमान प्रकृति का होता है।

(ii) यह उष्णकटिबन्धीय समुद्रों के ऊपर प्रवाह के दौरान विभिन्न वायुमण्डलीय अवस्थाओं से प्रभावित होकर अग्रसर होता है।

(iii) मानसून का काल जून से सितम्बर माह के बीच 100-120 दिनों तक का होता है।

(iv) मानसूनी प्रकार की जलवायु ऋतुओं की विभिन्नताओं का प्रतिमान है। यह ऋतु परिवर्तन का भी द्योतक है।

15. ग्रीष्म ऋतु की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को बताइए।

उत्तर सूर्य के उत्तर दिशा में आभासी गति के कारण भूमण्डलीय ताप पट्टी उत्तर की ओर खिसक जाती है। भारत में मार्च से मई तक ग्रीष्म ऋतु का काल होता है। इसकी विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) 'लू' ग्रीष्मकाल का एक प्रभावी लक्षण है। यह दिन के समय भारत के उत्तर एवं उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में चलती है। यह धूल भरी गर्म एवं शुष्क पवन होती है।

(ii) मई माह में उत्तरी भारत में धूल भरी आँधियाँ आती हैं। इनमें तीव्र हवाओं के साथ गरज वाली मूसलाधार वर्षा भी होती है। पश्चिम बंगाल में इसे 'काल बैशाखी' कहा जाता है।

(iii) ग्रीष्म ऋतु के अन्त में कर्नाटक और केरल राज्य में प्राय: मानसून पूर्व वर्षा होती है। इसे 'आम्र वर्षा' भी कहा जाता है।

16. भारत उत्तर-पूर्वी पवनों के क्षेत्र में पड़ता है। इन पवनों की कोई तीन विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर उत्तर-पूर्वी पवनों की तीन विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) ये पवनें अर्द्ध-उष्णकटिबन्धीय क्षेत्र से उठती हैं जिनका उच्च दबाव उत्तरी गोलार्द्ध की पट्टी पर पड़ता है।

(ii) वे दक्षिण की ओर बहती हैं, दाईं ओर विपथित हो जाती हैं, क्योंकि उन पर गहन बल होता है और फिर भूमध्यवर्ती निम्न दबाव के क्षेत्र की ओर मुड़ जाती है।

(iii) प्राय: ये पवनें बहुत कम आर्द्रता लिए होती हैं, क्योंकि वे धरती से ही उठती हैं और उसी के साथ-साथ बहती हैं।

17. 'एल निनो' का क्या अर्थ है? इसकी दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर 'एल निनो' ऐसा नाम है जो उन समुद्री गर्म धाराओं के समय-समय (सामयिक) पर उत्पन्न होने को दिया गया है, जो पेरू के तट के साथ पेरू की ठण्डी धाराओं के स्थान पर अस्थायी तौर पर बहती है।

एल निनो की विशेषताएँ—

- एल निनो के दबाव से समुद्र तल का तापमान बढ़ने लगता है।
- इससे क्षेत्र में व्यापारिक पवनें कमजोर पड़ने लगती हैं।
- इनसे भारी वर्षा, बाढ़ तथा विश्व के कई क्षेत्रों में सूखा पड़ जाता है। ये कई बार भारत के खराब मानसून के लिए भी उत्तरदायी होती हैं।

18. भारत के जलवायु को जेट धाराएँ कैसे प्रभावित करती हैं?

उत्तर ऊपरी वायुमण्डल में 12000 मीटर से ऊपरी, तंग क्षेत्र में तीव्र गति से चलने वाली धाराएँ जेट धाराएँ कहलाती हैं। ये धाराएँ कई प्रकार की होती हैं, जिनकी गति ग्रीष्म में 110 किमी प्रति घण्टा तथा सर्दियों में लगभग 184 किमी प्रति घण्टा की होती हैं।

(i) सर्दियों में उपोष्ण कटिबन्धीय पश्चिमी जेट धाराएँ भारत के पश्चिमी भागों में वर्षा लाती हैं। विशेषत: हिमाचल प्रदेश, हरियाणा तथा पंजाब में।

(ii) गर्मियों में उपोष्ण कटिबन्धीय पूर्वी जेट धाराएँ प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर से 14° उत्तर की ओर होकर बहती हैं और थोड़ी वर्षा तथा आँधी लाती हैं।

(iii) ये धाराएँ मानसून पवनों के आगमन तथा लौटने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

19. मानसून की वापसी प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए।

उत्तर मानसून की वापसी की व्याख्या निम्न हैं—

- मानसून की वापसी बहुत धीमी प्रक्रिया है।
- मानसून की वापसी दिसम्बर के पहले सप्ताह से लेकर जनवरी के पहले सप्ताह तक उत्तर से दक्षिण की ओर होती है।
- मानसून की वापसी सितम्बर के शुरू से भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों में आरम्भ होती है।
- अक्टूबर के मध्य तक, मानसून प्रायद्वीपीय के आधे उत्तरी भाग से पूर्णतया वापस हो जाता है। प्रायद्वीपीय के आधे दक्षिणी भाग से मानसून बहुत तेजी से वापस जाता है।
- दिसम्बर के शुरू में देश के शेष भागों से मानसून की वापसी हो जाती है।

20. भारत की जलवायु की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत की जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) भारत के उत्तरी भाग में उपोष्ण तथा दक्षिणी भाग में उष्ण जलवायु पाई जाती है।

(ii) भारतीय जलवायु मानसूनी जलवायु है।

(iii) भारत में सम तथा विषम दोनों प्रकार की जलवायु विद्यमान है।

(iv) भारतीय जलवायु में अत्यधिक अनिश्चितता है।

(v) ऋतुओं में विचलन तथा दैनिक वर्षण एवं तापमान में विचलन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

21. भारत में अधिकांश वर्षा गर्मियों में होती है, क्यों?

उत्तर ग्रीष्मकाल में मौसम की क्रियाविधि गर्मी का मौसम शुरू होने पर जब सूर्य उत्तरायण की स्थिति में आ जाता है, तो भारतीय उपमहाद्वीप में निम्न व उच्च दोनों स्तरों पर वायु परिसंचरण परिवर्तित हो जाता है। जुलाई के मध्य तक धरातल के निकट निम्न वायुदाब पेटी उत्तर की ओर खिसक जाती है। इस पेटी को अन्त: उष्णकटिबन्धीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) कहा जाता है। यह उत्तर की ओर खिसककर 20° से 25 ° उत्तरी अक्षांश पर स्थित हो जाती है। इस समय तक पश्चिम जेट-प्रवाह भारतीय क्षेत्र से लौट चुका होता है। ITCZ निम्न वायुदाब क्षेत्र होने के कारण विभिन्न दिशाओं से पवनों को अपनी ओर आकर्षित करता है, जिस कारण उष्णकटिबन्धीय सामुद्रिक संहति (MT) विषुवत् वृत्त पार करके दक्षिण-पश्चिमी मानसून का सृजन करती है।

22. भारत में मानसून की उत्पत्ति तथा वर्षा का वितरण बताइए।

उत्तर मानसून की उत्पत्ति—मानसून की उत्पत्ति का स्पष्ट कारण अभी भी ज्ञात नहीं है। 19वीं सदी के अन्त में इस सन्दर्भ में यह व्याख्या की गई कि गर्मी के समय में स्थल और समुद्र का अलग-अलग दर से गर्म होना ही मानसूनी पवनों के भारतीय उपमहाद्वीप की ओर चलने की पृष्ठभूमि तैयार करता है। अप्रैल और मई के महीनों में जब सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है, तो हिन्द महासागर के उत्तर में स्थित विशाल भूखण्ड अत्यधिक गर्म हो जाता है।

भारत में वर्षा का वितरण

मात्रा	वर्षा का घनत्व	सम्बन्धित क्षेत्र
अधिक वर्षा वाले क्षेत्र	200 सेमी से अधिक वर्षा	पश्चिमी घाट, पश्चिम बंगाल, मेघालय व उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र।
मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र	100 सेमी से 200 सेमी	गुजरात के दक्षिणी भाग, पूर्वी तमिलनाडु, ओडिशा, उत्तर-पूर्वी प्रायद्वीप, झारखण्ड, बिहार, पूर्वी मध्य प्रदेश, गंगा का उत्तरी मैदान, हिमालय का तराई भाग।
न्यून वर्षा वाले क्षेत्र	50 सेमी से 100 सेमी	पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, पंजाब व जम्मू-कश्मीर।
अति अल्प वर्षा वाले क्षेत्र	50 सेमी से कम	राजस्थान, पश्चिमी हरियाणा, लद्दाख व गुजरात।

23. भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में अधिक वर्षा के दो कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में अधिक वर्षा के दो कारण निम्नलिखित हैं—

- बंगाल की खाड़ी की मानसूनी पवनों की एक उपशाखा मेघालय में गारो-खासी तथा जयन्तिया की पहाड़ियों से टकराकर अत्यधिक वर्षा करती है। यहाँ मासिनराम की पहाड़ियों पर विश्व की सर्वाधिक वर्षा होती है।
- गारो, खासी, जयन्तिया पहाड़ियों की कीपाकार आकृतियाँ अधिक मानसूनी पवनों को वर्षण के लिए प्रेरित करती हैं।

24. पूर्वी तट पर स्थित वह राज्य, जहाँ उष्णकटिबन्धीय चक्रवात प्रायः आते हैं, वर्णन कीजिए।

उत्तर पूर्वी तट पर स्थित ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु तट पर उष्णकटिबन्धीय चक्रवातों द्वारा प्राय: वर्षा होती है। शीत ऋतु में उत्तर भारत में निम्न दाब का क्षेत्र उच्च वायुदाब क्षेत्र में परिणत हो जाता है और निम्न वायुदाब के इस क्षेत्र का स्थानान्तरण बंगाल की खाड़ी में हो जाता है। इस अवधि में अण्डमान सागर में पुन: चक्रवात बनने लगते हैं, इनमें से कुछ चक्रवात दक्षिणी प्रायद्वीप के पूर्वी तट को पार कर जाते हैं तथा इन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जलवायु से आप क्या समझते हैं? भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर इस प्रश्न के उत्तर के लिए 'भारतीय जलवायु' तथा 'भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक' का अध्ययन करें।

2. भारत में मानसून की तैयारी तथा पूर्वागमन की व्याख्या करें।

उत्तर भारत में मानसून की तैयारी तथा पूर्वागमन की व्याख्या निम्न प्रकार है

(i) भारतीय प्रायद्वीप में मानसून प्राय: प्रतिवर्ष जून के प्रथम सप्ताह में आता है।

(ii) अरब सागर शाखा मुम्बई में 10 दिन बाद अर्थात् 10 जून तक पहुँचती है। यह नितान्त तीव्र आगमन होता है, जबकि बंगाल की खाड़ी की शाखा असम में जून के प्रथम सप्ताह में पहुँचती है। ऊँची पर्वत चोटियाँ इन्हें गंगा के मैदानों में पश्चिम की ओर विपथित करने का कारण बनती हैं।

(iii) मध्य-जून तक मानसून की अरब सागर शाखा सौराष्ट्र-कच्छ तथा केंद्रीय भारत के भागों में पहुँच जाती है।

(iv) अरब सागर शाखा तथा बंगाल की खाड़ी की मानसून शाखाएँ गंगा के मैदानों के उत्तर पश्चिमी भाग में परस्पर मिल जाती हैं।
दिल्ली में प्राय: मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा द्वारा जून के अन्त में वर्षा होती है (अनुमानित रूप में 29 जून की तिथि को)।

(v) जुलाई के प्रथम सप्ताह तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा पूर्वी राजस्थान में मानसून का आगमन होता है। जुलाई के मध्य तक ये मानसून शाखाएँ हिमाचल प्रदेश तथा शेष भारत में जा पहुँचती हैं।

3. भारत में मानसूनी वर्षा का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए।

1. मानसून की उत्पत्ति

2. वर्षा की अनिश्चितता

3. वर्षा का वितरण

उत्तर मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के **मौसिम** शब्द से हुई है, जिसका अर्थ मौसम या ऋतु होता है। मानसून के अन्तर्गत ऋतु के अनुसार पवनों की दिशा में परिवर्तन हो जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु उष्ण मानसूनी है, जो दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया में पाई जाती है।

(i) मानसून की उत्पत्ति या आरम्भ—मानसून की उत्पत्ति का स्पष्ट कारण अभी भी ज्ञात नहीं है। 19वीं सदी के अन्त में इस सन्दर्भ में यह व्याख्या की गई कि गर्मी के समय में स्थल और समुद्र का अलग-अलग दर से गर्म होना ही मानसूनी पवनों के भारतीय उपमहाद्वीप की ओर चलने की पृष्ठभूमि तैयार करता है। अप्रैल और मई के महीनों में जब सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है, तो हिन्द महासागर के उत्तर में स्थित विशाल भूखण्ड अत्यधिक गर्म हो जाता है।

इसके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग पर एक निम्न वायुदाब क्षेत्र विकसित हो जाता है, क्योंकि भूखण्ड के दक्षिण में स्थित हिन्द महासागर अपेक्षत: धीरे-धीरे गर्म होता है। ये निम्न वायुदाब केन्द्र विषुवत् रेखा के पार से दक्षिण-पूर्वी सन्मार्गी पवनों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस प्रकार दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवनों को दक्षिण-पूर्वी सन्मार्गी पवनों के विस्तार के रूप में देखा जाता है, जोकि भूमध्य रेखा पार करके भारतीय उपमहाद्वीप की ओर मुड़ जाती हैं।

दक्षिण-पश्चिम मानसून केरल तट पर 1 जून के आस-पास पहुँचता है और शीघ्र ही 10 से 13 जून के बीच यह मुम्बई, कोलकाता पहुँच जाता है। जुलाई माह के मध्य तक मानसूनी पवनें सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैल जाती हैं। प्रायद्वीपीय स्थिति के कारण दक्षिण-पश्चिम मानसून दो शाखाओं अरब सागर शाखा तथा बंगाल की खाड़ी में बँट जाता है।

(ii) वर्षा की अनिश्चितता—अनियमितता एवं अनिश्चितता भारतीय मानसून की विशेषता है। वर्षा एवं बिना वर्षा वाले दिनों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है। यही नहीं कभी-कभी वर्षा होती है, कभी हल्की तथा कभी लम्बी अवधि तक वर्षा ही नहीं होती है। कभी-कभी भारी वर्षा से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तो कभी सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस कारण भारतीय कृषकों को हानि उठानी पड़ती है।

(iii) वर्षा का वितरण—नोट इसके लिए लघु प्रश्न संख्या 22 को देखें।

4. भारतीय मानसूनी वर्षा की छः विशेषताएँ हैं ?

उत्तर व्यापारिक पवनों के विपरीत मानसूनी पवनें नियमित नहीं हैं। ये स्पन्दमान प्रकृति की होती हैं। भारतीय मानसून की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. मानसून का आरम्भ जून के आरम्भ से मध्य सितम्बर (100-120 दिन) के बीच होता है।
2. मानसून आगमन के समय सामान्य वर्षा में अचानक वृद्धि हो जाती है। यह कई दिनों तक अनवरत जारी रहती है, इसे 'मानसून प्रस्फोट' कहा जाता है।
3. ये पवनें भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर से प्रवेश कर दो भागों—'अरब सागर' और 'बंगाल की खाड़ी' शाखा में विभक्त हो जाती हैं।
4. देशभर में वर्षा का असमान वितरण है। मानसून के आरम्भ में पश्चिमी घाट के पवनमुखी ढालों पर भारी वर्षा होती है। यह वर्षा 250 सेमी से भी अधिक है।
5. वहीं प्रायद्वीपीय पठार के वृष्टि छाया क्षेत्र एवं मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान के कुछ हिस्सों सहित लेह में भी बहुत कम वर्षा होती है। सर्वाधिक वर्षा क्षेत्र देश का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र है।
6. भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों से मानसून की वापसी सितम्बर के आरम्भ में शुरू हो जाती है। दिसम्बर तक शेष भारत से मानसून की वापसी हो जाती है।

5. भारत में वर्षा की क्षेत्रीय विविधता की चर्चा कीजिए।

उत्तर भारत में वर्षा का असमान वितरण है। यहाँ न केवल वर्षा के रूप और प्रकार में, बल्कि उसकी मात्रा और ऋतु अनुसार वितरण में भी स्पष्ट विविधता प्रदर्शित होती है।

पश्चिमी तट के भागों एवं उत्तर-पूर्वी भारत में लगभग 400 सेमी वार्षिक वर्षा होती है।

वहीं पश्चिमी राजस्थान एवं इससे लगे पंजाब, हरियाणा एवं गुजरात के भागों में 60 सेमी से भी कम वर्षा होती है। दक्षिणी पठार के आन्तरिक भागों सहित सह्याद्रि के पूर्व में भी कम वर्षा होती है। जम्मू-कश्मीर का लेह भी कम वर्षण क्षेत्र का हिस्सा है।

देश के शेष हिस्सों में मध्यम वर्षा होती है। मानसूनी प्रकृति के कारण एक वर्ष से दूसरे वर्ष में भी वार्षिक वर्षा की मात्रा भिन्न होती है। वर्षा की विषमता निम्न वर्षा क्षेत्रों में ज्यादा स्पष्टता से दर्ज की जाती है। हिमालय के ऊपरी हिस्सों में जहाँ हिमपात की घटना आम बात है, वहीं शेष भारत में वर्षा के रूप में जल प्राप्त होता है।

भारत के तटीय क्षेत्र आन्तरिक और पश्चिमी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि इन क्षेत्रों में मानसून के पहुँचने तक पवनों की आर्द्रता न्यून या समाप्त हो जाती है।

6. भारत में ग्रीष्म ऋतु की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर गर्मी का मौसम मार्च से आरम्भ होकर जून तक चलता है।

मुख्य लक्षण

(i) मार्च के मध्य से तापमान बढ़ना आरम्भ होता है और मध्य-मई तक पारा 41° से 42° को छू जाता है।

(ii) यहाँ तापमान में विविधता है। उत्तर-पश्चिम में यह लगभग 45° से.होता है, परन्तु दक्षिण में यह 26° से. से 30° से. तक होता है।

(iii) दक्षिणी भागों में अत्यधिक गर्मी नहीं होती, क्योंकि ये समुद्र के नजदीक हैं।

(iv) उत्तर तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में 'लू' नामक गर्म स्थानीय हवा बहती है।

(v) मई के अन्त में यहाँ एक लम्बा निम्न दबाव का क्षेत्र बन जाता है, जिसे मानसून निम्न दबाव कहते हैं।

(vi) स्थानीय बनी हुई धूल से भरी आँधियों तथा तूफानों के कारण देश के विभिन्न भागों में विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा आदि में भिन्न मात्रा में वर्षा होती है।

(vii) केरल तथा पश्चिमी घाटों में भी मानसून से पूर्व की वर्षा होती है, जिसे स्थानीय भाषा में 'आम्र वृष्टि' कहा जाता है।

7. दक्षिण-पश्चिमी मानसून की अरब सागर शाखा भारत के उत्तरी मैदानों में अच्छी वर्षा के लिए कैसे उत्तरदायी है? इससे मध्यवर्ती प्रायद्वीपीय में वर्षा क्यों नहीं होती?

उत्तर अच्छी वर्षा के लिए निम्न कारण उत्तरदायी है—

(i) दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के जो अंश सागर के ऊपर से होकर बहते हैं, उनसे भारत के पश्चिमी तटों पर भारी वर्षा होती है।

(ii) ये पवनें सौराष्ट्र से होकर उत्तरी मैदानों में प्रवेश पाती हैं। ये हिमालय से टकराती हैं और भारी आर्द्रता पाने के कारण अच्छी वर्षा करती हैं।

(iii) दक्षिण-पश्चिमी मानसून पश्चिमी घाटों की दिशा में लम्बवत् दिशा में चलती हैं। अत: पश्चिमी घाटों की पवनों वाली दिशा में भारी वर्षा करती हैं।

(iv) मध्यवर्ती प्रायद्वीपीय पश्चिमी घाटों की अनुवर्ती पार्श्व में पड़ता है। अत: अरब सागर से उठने वाली दक्षिण-पश्चिमी मानसून की शाखा वहाँ नहीं पहुँच पाती।

8. दक्षिण-पश्चिमी मानसून और उत्तर-पूर्वी मानसून के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर दक्षिण-पश्चिमी मानसून और उत्तर-पूर्वी मानसून दो अलग-अलग ऋतुओं और वर्षा प्रतिरूप के परिचायक हैं। इनके मध्य अन्तर निम्नलिखित हैं—

दक्षिण-पश्चिमी मानसून	उत्तर-पूर्वी मानसून
यह मानसून दो शाखाओं में विभक्त होकर उत्तर दिशा में अग्रसर होता है। ये दो शाखाएँ हैं—अरब सागर और बंगाल की खाड़ी शाखा।	यह उत्तर-पूर्व दिशा से समुद्र की ओर गमन करता है।
ये पवनें जून से सितम्बर माह के बीच 100-120 दिनों के बीच चलती हैं।	ये पवनें अक्टूबर-नवम्बर माह के मध्य चलती हैं।
दक्षिण-पश्चिमी मानसून का प्रभाव क्षेत्र व्यापक है। इससे सम्पूर्ण देश को वर्षा प्राप्त होती है।	इसका प्रभाव क्षेत्र न्यून है। यह केवल कोरोमण्डल तट (तमिलनाडु) में वर्षा कराता है।
ये पवनें महासागरीय उच्च दाब क्षेत्र से आर्द्रता से परिपूर्ण होकर भूमि के निम्न दाब क्षेत्र की ओर चलती हैं।	इसका बहाव दिशा भूमि से समुद्र की ओर है। पवन की यह दिशा सूर्य की दक्षिण की ओर आभासी गति के कारण होती है।
इसका बहाव मानसून आगमन ऋतु (वर्षा ऋतु) के दौरान होता है।	ये पवनें मानसून की पश्चगमन ऋतु (शीत ऋतु) में चलती हैं।

❑❑❑

5

प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत एक जैव-विविधता वाला देश है। टिप्पणी कीजिए।

उत्तर भारत 12 प्रमुख जैव-विविधता वाले देशों में से एक विशाल देश है, जिसके कारण यहाँ अनेक प्रकार की जैवीय विविधता का स्पष्ट सामंजस्य देखने को मिलता है। भारत में लगभग 47,000 विभिन्न जातियों के पौधे पाए जाते हैं, जिनमें 15,000 पौधे संसार के फूलों के पौधों का 6% है। इस अर्थ में भारत को विश्व में 10वाँ और एशिया में चौथा स्थान प्राप्त है। भारत में बिना फूलों वाले पौधे भी हैं; जैसे—फर्न, शैवाल और कवक इत्यादि, साथ ही 90,000 जातियों के जानवर और विभिन्न प्रकार की मछलियाँ भी हैं। यहाँ ताजे और समुद्री पानी, दोनों प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं।

2. आर्द्र और शुष्क उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वनों में क्या अन्तर है?

उत्तर आर्द्र और शुष्क उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वनों में निम्नलिखित अन्तर हैं—

आर्द्र पर्णपाती वन	शुष्क पर्णपाती वन
आर्द्र पर्णपाती वन 100-200 सेमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।	शुष्क पर्णपाती वनों का विस्तार 70-100 सेमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में है।
इनका विस्तार देश के पूर्वी भागों, उत्तर-पूर्वी राज्यों, हिमालय के गिरिपद प्रदेशों, झारखण्ड, पश्चिमी ओडिशा (उड़ीसा), छत्तीसगढ़ तथा पश्चिमी घाटों के पूर्वी ढालों में है।	इस प्रकार के वन प्रायद्वीपीय पठार, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में पाए जाते हैं।
यहाँ की प्रमुख वनस्पति हैं—बाँस, साल, शीशम, चन्दन, खैर, कुसुम, अर्जुन आदि।	यहाँ की प्रमुख वनस्पति प्रजाति हैं—सागौन, साल, पीपल, नीम आदि।

3. भारत में पाए जाने वाले मानसूनी वनों का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए

(i) वितरण **(ii) प्रमुख वृक्ष**

(iii) आर्थिक महत्त्व

उत्तर **(i) मानसूनी वनों का वितरण**—भारत में मानसूनी वन उन क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जहाँ 75 से 200 सेमी औसत वार्षिक वर्षा होती है। ये शिवालिक के पर्वतीय भागों तथा प्रायद्वीपीय पठारी भागों में पाए जाते हैं। जल की उपलब्धता के आधार पर इन्हें आर्द्र तथा शुष्क पर्णपाती वनों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

(ii) मानसूनी वनों के प्रमुख वृक्ष—मानसूनी वनों में सागौन, साल, शीशम, महुआ, आँवला, बाँस, चन्दन तथा सेमल आदि के वृक्ष प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

(iii) मानसूनी वनों का आर्थिक महत्त्व—आर्थिक रूप से मानसूनी वन काफी समृद्ध होते हैं। इन वनों में अनेक प्रकार के कीमती वृक्ष पाए जाते हैं, जिनका व्यावसायिक महत्त्व अधिक है।

उदाहरण के रूप में हम चन्दन के वृक्ष को देख सकते हैं। इससे अनेक सौन्दर्य प्रसाधन एवं औषधियों का निर्माण होता है। इनमें साल, शीशम आदि इमारती लकड़ियाँ पाई जाती हैं।

4. भारत में वनों का असमान वितरण क्यों है? इनकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं। ये वन भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 21.34% भाग पर विस्तृत हैं। हिमालय पर्वतों पर शीतोष्ण कटिबन्धीय वन हैं, तो पश्चिमी घाट तथा अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह में उष्णकटिबन्धीय वर्षा वाले वन पाए जाते हैं। डेल्टा क्षेत्रों में मैंग्रोव वन हैं, वहीं राजस्थान के मरुस्थलीय व अर्द्ध-मरुस्थलीय क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की झाड़ियाँ, कैक्टस तथा काँटेदार वनस्पति पाई जाती है। इन वनों का वितरण भी असमान है।

भारतीय वनों के असमान वितरण के कारण

भारतीय वनों के असमान वितरण के निम्नलिखित कारण हैं—

1. **उच्चावचीय दशाएँ**—भारत की उच्चावचीय दशाओं का वनों के वितरण पर प्रभाव पड़ा है। भारतीय भू-भाग के उत्तर में हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ हैं, जहाँ वनस्पति नहीं पाई जाती है। हिमालय के निचले क्षेत्रों में शंकुधारी तथा शिवालिक में पर्णपाती वन पाए जाते हैं, तो वहीं पठारी भागों में भी पश्चिमी घाट के पवनाभिमुखी ढाल पर प्रचुर वन हैं, साथ ही पवनाभिमुखी ढालों पर विरल वनस्पति पाई जाती है।
2. **मानसूनी जलवायु**—भारत की जलवायु मानसूनी है। अत: जो क्षेत्र अधिक वर्षा तथा अधिक ताप वाले हैं, वहाँ घने वन पाए जाते हैं तथा जहाँ वर्षा कम होती है, वहाँ विरल पतझड़ वाले वन तथा अतिअल्प वर्षा वाले स्थानों पर केवल झाड़ियाँ पाई जाती हैं।
3. **मिट्टी की दशाएँ**—मिट्टी की उर्वरता का भी वनों के वितरण पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। पठारी क्षेत्रों में उपजाऊ काली मिट्टी पाई जाती है, जो खनिजों से भरपूर है। अत: यहाँ घने वन हैं, जबकि मरुस्थलीय क्षेत्रों में अनुपजाऊ मिट्टी पाई जाती है, जहाँ वन नहीं हैं।
4. **मानवीय कारण**—प्राकृतिक कारणों के अतिरिक्त अनेक मानवीय कारकों से भी वनों का वितरण असमान हो गया है। उत्तर के मैदान

की उपजाऊ भूमि के कारण यहाँ वनों को साफ कर कृषि क्षेत्र का विस्तार कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त हिमालयी चीड़ व देवदार के वनों का विनाश ब्रिटिश काल में रेलवे पटरियों के निर्माण हेतु बड़ी मात्रा में किया गया है।

5. वनों पर आधारित किन्हीं चार उद्योगों के नाम लिखिए।

उत्तर वनों पर आधारित प्रमुख उद्योग निम्नलिखित हैं—

1. **कागज उद्योग**—कागज निर्माण के लिए कच्चा माल मुख्य रूप से वनों से प्राप्त होता है। **बाँस**, **यूकेलिप्टिस** आदि के वृक्षों से प्राप्त कच्चे माल का उपयोग कागज निर्माण के लिए किया जाता है।
2. **खेल उपकरण उद्योग**—खेलों के लिए उपयोग में आने वाले अधिकांश उपकरण लकड़ी से निर्मित होते हैं, जोकि वनों से प्राप्त होते हैं। खेल उपकरणों के निर्माण के लिए पोपलर, अखरोट, टीक आदि की लकड़ी उपयोगी होती है।
3. **माचिस उद्योग**—माचिस की तीलियाँ बनाने के लिए मुख्य रूप से पोपलर, यूकेलिप्टिस जैसी कमजोर लकड़ी की आवश्यकता होती है, जोकि वनों से प्राप्त होती है।
4. **तारपीन तेल उद्योग**—तारपीन का तेल हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले चीड़ (पाइन) वृक्ष से निकलने वाले गाढ़े द्रव से बनाया जाता है, जोकि एक वनोत्पाद है।

6. कँटीले और मैंग्रोव वन में अन्तर बताइए।

उत्तर कँटीले और मैंग्रोव वन में निम्नलिखित अन्तर हैं—

कँटीले वन	मैंग्रोव वन
कँटीले वन वाले क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा न्यून होती है। यहाँ 70 सेमी से कम वर्षा होती है।	मैंग्रोव वन का विकास वर्षा पर आधारित नहीं है। ये प्राय: डेल्टाई क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
इनका विस्तार देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में है। इनमें गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र शामिल हैं।	इन वनों का विस्तार गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों के डेल्टाई क्षेत्रों में है।
यहाँ की प्रमुख वनस्पति हैं—अकासिया, खजूर, यूफोरबिया, नागफनी आदि।	इस क्षेत्र की प्रमुख वनस्पति प्रजातियाँ में सुन्दरी वृक्ष हैं। नारियल, ताड़, क्योड़, ऐंगार अन्य पादप हैं।

7. उष्णकटिबन्धीय पर्वतीय वन के तीन प्रमुख लक्षण बताइए।

उत्तर उष्णकटिबन्धीय पर्वतीय वन के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं—

(i) पर्वतीय क्षेत्रों में न्यून तापमान और अधिक ऊँचाई होती है। इससे प्राकृतिक वनस्पति में विविधात्मक चरित्र प्रतीत होते हैं।

(ii) 1,000 से 2,000 मी तक की ऊँचाई में आर्द्र शीतोष्ण कटिबन्धीय वन पाए जाते हैं।

(iii) 1,500 से 3,000 मी तक की ऊँचाई में शंकुधारी वृक्ष; जैसे—चीड़, देवदार, सिल्वर फर, स्प्रूस, सीडर आदि पाए जाते हैं।

8. मैंग्रोव वन पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर प्राकृतिक वनस्पतियों में मैंग्रोव वन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका विस्तार भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में है। तटवर्ती क्षेत्रों में ज्वार-भाटा के क्षेत्र इस वनस्पति की वृद्धि के लिए अनुकूल दशा प्रदान करते हैं। मैंग्रोव वनस्पति के पौधों की जड़ें पानी में डूबी रहती हैं। मैंग्रोव वनस्पति गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों के डेल्टाई भागों में विकसित है। इनमें गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा में सुन्दरी वृक्ष महत्त्वपूर्ण हैं, जिनसे मजबूत लकड़ी प्राप्त होती है। इसके साथ मैंग्रोव वनस्पति की मुख्य प्रजातियाँ नारियल, ताड़, क्योड़ा व ऐंगार हैं। मैंग्रोव वन का प्रसिद्ध जानवर रॉयल बंगाल टाइगर है। इसके अतिरिक्त कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल एवं अनेक प्रकार के साँप भी इन जंगलों में पाए जाते हैं।

9. पारितन्त्र किसे कहते हैं?

उत्तर पारिस्थितिक-तन्त्र (Ecosystem) पृथ्वी पर विद्यमान पादप जगत्, प्राणी जगत् और भौतिक पर्यावरण का समन्वयात्मक स्वरूप है। जब किसी भी क्षेत्र के पादप तथा प्राणी अपने भौतिक पर्यावरण से अन्तर्सम्बन्धित होते हैं, तब एक पारिस्थितिक तन्त्र का निर्माण होता है। मनुष्य भी इस तन्त्र का एक अभिन्न अंग है। पादपों की प्रकृति क्षेत्र विशेष के प्राणी जीवन को प्रभावित करती है। वनस्पति के बदलाव से प्राणी जीवन भी बदल जाता है। पारितन्त्र के अध्ययन को पारिस्थितिकी विज्ञान (Ecology) कहा जाता है। किसी भी पारितन्त्र के सभी जीव अपने स्थानीय परिवेश में एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा ये जीवधारी परस्पर इतने आश्रित होते हैं कि एक-दूसरे के अभाव में जीवित नहीं रह सकते।

10. ''भूमि प्राकृतिक वनस्पति को प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से प्रभावित करती है।'' सिद्ध कीजिए।

उत्तर भूमि प्राकृतिक वनस्पति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, इसके निम्न कारण हैं—

(i) भूमि की प्रकृति वनस्पति के प्रकार को प्रभावित करती है। उर्वर स्तर की भूमि प्राय: कृषि के लिए उपयुक्त रहती है।

(ii) असमतल तथा ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों को चरागाहों तथा वनों के विकास के लिए छोड़ दिया जाता है।

(iii) गरान (कच्छी) वन दलदली तथा गाद वाली भूमि में पाए जाते हैं। अकासिया, खजूर, यूफोरबिया तथा कैक्टाई मरुस्थल भूमि में पाए जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के वनों का वर्गीकरण कीजिए। किसी एक प्रकार के वन की प्रमुख विशेषताओं एवं आर्थिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर भारत में निम्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियाँ पाई जाती हैं—

उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वन

इन वनों को **उष्णकटिबन्धीय वर्षा वन** (Tropical Rain Forests) भी कहा जाता है। ये भारत के वन क्षेत्र के लगभग 12% भाग में पाए जाते हैं। भारत में इन वनों का विस्तार अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में है। ये वन पश्चिमी घाट, लक्षद्वीप, अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूहों, असोम के ऊपरी भागों और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों तक सीमित हैं। इनका विस्तार ऐसे क्षेत्रों में है, जहाँ 200 सेमी से अधिक वर्षा होती है, साथ ही यहाँ अल्पकाल के लिए शुष्क ऋतु भी पाई जाती है।

उष्णकटिबन्धीय वनों का वैश्विक विस्तार विषुवत् रेखा के 30° उत्तर तथा 30° दक्षिण के मध्य में विस्तृत हैं।

उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वनों की विशेषताएँ

ऊष्णकटिबन्धीय सदाबहार वनों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वनों में वृक्ष की ऊँचाई 60 मी या इससे अधिक होती है। ऐसे क्षेत्र वर्षभर गर्म और आर्द्र होते हैं। इसके कारण यहाँ प्रत्येक प्रकार की वनस्पति को बढ़ने का मौका मिलता है। यहाँ हर प्रकार की वनस्पति वृक्ष, झाड़ियाँ और लताएँ उगती हैं, जिनकी विभिन्न ऊँचाइयों के अनुसार कई स्तर देखने को मिलते हैं।

(ii) इन वनों के वृक्षों में पतझड़ का कोई निश्चित समय नहीं होता है। अत: ये वर्षभर हरे-भरे बने रहते हैं। इन वनों में व्यापारिक महत्त्व से पाए जाने वाले कुछ वृक्ष आबनूस (Ebony), महोगनी (Mahogany), रोजवुड (Rosewood), रबड़ और सिनकोना हैं।

(iii) इन वनों में सामान्य रूप से पाए जाने वाले जानवर हाथी, बन्दर, लैमूर व हिरण हैं। एक सींग वाले गैण्डे मुख्य रूप से असोम और पश्चिम बंगाल के दलदली क्षेत्र में मिलते हैं।

(iv) इसके अतिरिक्त इन जंगलों में अनेक प्रकार के पक्षी, चमगादड़ एवं रेंगने वाले जीव भी पाए जाते हैं।

2. भारत में पाई जाने वाली छः प्रकार की वनस्पतियों में से किन्हीं तीन की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर भारत में मूल रूप से छ: प्रकार की वनस्पतियाँ उपलब्ध हैं, इनका विवरण इस प्रकार है—

(i) उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन—इन वनों को उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन भी कहा जाता है। भारत में इन वनों का विस्तार अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में है। ये वन पश्चिमी घाट, लक्षद्वीप, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों, असोम के ऊपरी भागों और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों तक सीमित हैं। इनका विस्तार ऐसे क्षेत्रों में है, जहाँ 200 सेमी से अधिक वर्षा होती है। साथ ही यहाँ अल्पकाल के लिए शुष्क ऋतु भी पाई जाती है।

(ii) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन—ये वन भारत के सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्रों में फैले हुए हैं, इन वनों को मानसूनी वन भी कहा जाता है। इनका विस्तार 70 सेमी से 200 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में है। ऐसे वनों के वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु के समय 6-8 सप्ताह के लिए अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं, इसलिए इन्हें पर्णपाती/पतझड़ी वन कहा जाता है। इन वनों को जल की उपलब्धता के आधार पर दो वर्गों—आर्द्र और शुष्क पर्णपाती वनों में विभाजित किया गया है।

(iii) कँटीले वन तथा झाड़ियाँ—70 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में कंटीले वन तथा झाड़ियाँ पाई जाती हैं। इनका विस्तार देश के उत्तरी-पश्चिमी भागों—गुजरात व राजस्थान के साथ छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में है।

इन वनों की मुख्य पादप प्रजातियाँ अकासिया, खजूर, यूफोरबिया तथा नागफनी हैं। इन वनों के वृक्ष बिखरे हुए होते हैं और इनकी जड़ें लम्बी दूरी तक फैली हुई होती हैं।

पत्तियों के आकार छोटे होते हैं, जिससे वाष्पीकरण कम हो सके। झाड़ियाँ और कंटीले पादप शुष्क क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इन वनस्पति क्षेत्र में पाए जाने वाले पशु-चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िए, शेर, सिंह, जंगली गधा, घोड़े और ऊँट आदि हैं।

3. उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वन और घास के मैदान वाले शीतोष्ण वन में अन्तर बताइए।

उत्तर उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वन और घास के मैदान वाले शीतोष्ण वन में निम्नलिखित अन्तर है—

उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वन	घास के मैदान वाले शीतोष्ण वन
इन वनों का भारत के सर्वाधिक बड़े क्षेत्रों में विस्तार है।	ये वन केवल पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
इनका विस्तार 100-200 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में है।	इनका क्षेत्र अत्यन्त ऊँचाई और बर्फपात वाले क्षेत्रों में है।
ये भारत के उत्तर-पूर्वी हिमालय की तलहटी में, झारखण्ड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिमी घाट के क्षेत्रों में विस्तृत हैं।	घास वाले मैदान का विस्तार हिमालय के दक्षिणी ढलानों तथा दक्षिण और उत्तर-पूर्वी भारत के अत्यधिक उच्च भागों में है।
ये पतझड़ प्रकृति के वन हैं, जो 6-8 सप्ताह की अवधि में पत्ते गिराते हैं।	इस क्षेत्र के वन सदा हरी-भरी प्रकृति अर्थात् सदाबहार वन का उदाहरण हैं।
प्रमुख पादप—साल, सागौन, पलाश, अर्जुन, पीपल, चन्दन इत्यादि हैं।	प्रमुख वनस्पति/पादप—सेब, आड़ू, बाँस, बलूत, चीड़, तुन आदि हैं।
प्रमुख वन्य प्राणी—शेर, बाघ, सुअर, हिरण, हाथी आदि हैं।	यहाँ के प्रमुख वन्य प्राणी—कश्मीरी मृग, चीतल, खरगोश, हिरण, याक, जंगली भेड़ आदि हैं।

4. वनों का संरक्षण क्यों आवश्यक है? विवरण दीजिए।

उत्तर वन हमारे पारिस्थितिक तन्त्र का एक जीवन्त उदाहरण हैं। ये हमारी उत्तरजीविता और समेकित विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। इनकी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष महत्ता को और इनके संरक्षण को निम्न बिन्दुओं से समझ सकते हैं—

(i) वन एक राष्ट्रीय सम्पत्ति है। यह औद्योगिक विकास सहित दैनिक आवश्यकता की पूर्ति का एक साधन है।

(ii) यह दैनिक जीवन में ईंधन व फर्नीचर की लकड़ियों की आपूर्ति का सर्वप्रमुख स्रोत है।

(iii) भारत का वन्य क्षेत्र सीमित है। इसमें न्यून सुधार और अधिकतम दोहन की समस्या विद्यमान है।

(iv) पर्यावरणीय सन्तुलन के लिए 33% भू-भागों पर, क्षेत्र विशेष के वनों का विस्तार आवश्यक है। वर्तमान में भारत के कुल क्षेत्रफल के 21.23% भाग पर ही वन का विस्तार है। न्यून सुधार के साथ देश में वर्तमान वन का क्षेत्रफल 6,97,898 वर्ग किमी है, जो वर्ष 2003 में 68 लाख वर्ग किमी था।

(v) निरन्तर जनसंख्या वृद्धि और उसकी आवश्यकता पूर्ति के लिए वनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। अत: वनों का संरक्षण व विकास अत्यन्त आवश्यक है।

6

जनसंख्या

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पश्चिम बंगाल सहित उत्तरी भारत के अन्य राज्यों और केरल की आबादी घनी है। कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर पश्चिम बंगाल सहित बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब जैसे उत्तरी राज्य और केरल सघन आबादी वाले राज्य हैं। इन राज्यों में सघन आबादी के संकेन्द्रण के निम्नलिखित कारण हैं—

(i) इन राज्यों की भूमि अधिक उपजाऊ है, जो कृषि गतिविधियों के लिए अनुकूल है। यहाँ सिंचाई की भी उत्तम व्यवस्था है।

(ii) इन राज्यों में वर्षा जल की प्राप्ति भी व्यापक स्तर पर होती है। अत: यहाँ भूमि/भौम जल की प्रचुरता है।

(iii) यहाँ बेहतर संचार और परिवहन की व्यवस्था सरल एवं सुगम है।

(iv) ये राज्य तुलनात्मक रूप से औद्योगिक सघन प्रदेश वाले हैं। इससे यहाँ रोजगार के कारण स्थानान्तरण होता है, साथ ही शिक्षा के भी अच्छे संस्थान उपलब्ध हैं।

2. भारत में महिलाओं का स्तर पुरुषों की तुलना में निम्नतर है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में महिलाओं का स्तर पुरुष वर्ग की तुलना में निम्नतर है। इसे निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है—

(i) भारत में लिंगानुपात पुरुष वर्ग के पक्ष में है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, लिंगानुपात 943 (प्रति हजार पुरुष पर) है।

(ii) भारत में महिला साक्षरता 64.6% है, जबकि 80.9% पुरुष साक्षर हैं।

(iii) संसद (भारत) में महिला गतिविधियों का अनुपात न्यून है, जो 14% से भी कम है।

3. विकासशील तथा विकसित देशों में निम्नलिखित अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर विकासशील तथा विकसित देशों में निम्नलिखित अन्तर हैं—

विकासशील देश	विकसित देश
प्रतिव्यक्ति आय कम होती है।	प्रतिव्यक्ति आय अधिक होती है।
प्राथमिक क्रियाकलापों में कार्यरत् लोगों का अनुपात अधिक होता है।	द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलापों में कार्य करने वाले लोगों का अनुपात अधिक होता है।
भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि कुछ विकासशील देश हैं।	अमेरिका, इंग्लैण्ड, जापान आदि कुछ विकसित देश हैं।
यह विकासशील अर्थव्यवस्था होती है।	यह विकसित अर्थव्यवस्था होती है।
तकनीकी विकास विकासशील अवस्था में होता है।	तकनीकी विकास उच्चतम अवस्था में होता है।

4. भारत में तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या को हम किस प्रकार नियन्त्रित कर सकते हैं? किन्हीं पाँच उपायों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को जन्म दर कम करके ही रोका जा सकता है। जन्म दर को निम्नलिखित उपायों से कम किया जा सकता है—

(i) भारत में दो बच्चों के परिवार को राष्ट्रीय आदर्श माना गया है, उसका दृढ़ता से पालन कराया जाए।

(ii) भारतीय संविधान में निर्धारित शादी की न्यूनतम आयु, लड़कियों की 18 वर्ष तथा लड़कों की 21 वर्ष को व्यावहारिक रूप दिया जाए।

(iii) स्त्री शिक्षा पर अधिक बल दिया जाए।

(iv) दो या इससे कम बच्चों वाले माता-पिता को सरकारी नियुक्तियों एवं पदोन्नतियों में प्राथमिकता दी जाए, साथ ही विशेष वेतन वृद्धि का प्रावधान हो।

(v) परिवार कल्याण सुविधाओं का देशभर में विस्तार किया जाए।

5. प्रवास से आप क्या समझते हैं? भारतीय अधिक संख्या में क्यों पलायन कर रहे हैं?

उत्तर आजीविका की तलाश हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान जाना ही प्रवास कहलाता है। यह आन्तरिक एवं बाह्य (अन्तर्राष्ट्रीय) दोनों स्तरों पर होता है।

उच्च शिक्षित भारतीय स्वदेश में बेहतर रोजगार एवं सुविधा नहीं मिलने के कारण विश्व के विकसित देशों में पलायन कर रहे हैं। विशेष रूप से अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन में इनकी संख्या अधिक है। प्रवासी भारतीय डॉक्टर, अभियन्ता, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री इत्यादि के रूप में विश्व के कई देशों में अपनी सेवाएँ देकर उक्त देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर रहे हैं।

इन्हें विदेशों में उच्च वेतन, सुविधाएँ एवं कौशल का सम्मान प्राप्त होता है। यह भारत के लिए बहुत बड़ी समस्या है, जिसे प्रतिभा पलायन कहा जाता है। आवश्यकता है सरकार को इन्हें बेहतर आधारीय सुविधाएँ एवं रोजगार मुहैया कराकर इनके ज्ञान एवं प्रतिभा का देश के विकास में उपयोग करे।

6. जनगणना क्या है? भारत में प्रथम जनगणना कब हुई थी? इसके द्वारा हम कौन-कौन सी सूचनाएँ ग्रहण करते हैं?

उत्तर एक निश्चित समय अन्तराल में जनसंख्या की आधिकारिक गणना 'जनगणना' कहलाती है। भारत में प्रथम जनगणना का आयोजन 1872 ई. में किया गया था, लेकिन प्रथम सम्पूर्ण जनगणना 1881 ई. में सम्पन्न हुई थी। इसके बाद लगातार 10 वर्ष के पश्चात् जनगणना का

आयोजन किया जाता है। भारतीय जनगणना का स्वरूप व्यापक है। यह जनसांख्यिकी, सामाजिक और आर्थिक आँकड़ों का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

7. भारत में अधिकतम एवं न्यूनतम जन घनत्व के क्षेत्रों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर इस प्रश्न के उत्तर के लिए बुक का पेज नं. 148 का अध्ययन करें।

8. भारत में विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र कौन-कौन से हैं? उनके विरल होने के कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर भारत में विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र उत्तर-पूर्व के राज्य हैं, जिनके अन्तर्गत क्रमश: अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय एवं असोम आते हैं। इन क्षेत्रों में जनसंख्या के विरल होने की मुख्य वजह यहाँ की भौगोलिक अवस्था का मानव रहन-सहन के अनुकूल न होना है। भारत के ये राज्य सुदूर क्षेत्र में स्थित होने के कारण देश के विकास की मुख्य धारा से कटे रहते हैं। इन क्षेत्रों में परिवहन के साधनों का समुचित ढंग से विस्तार न होने के कारण ये राज्य संरचनात्मक विकास से वंचित रह जाते हैं। यद्यपि आने वाले कुछ दिनों में उत्तर-पूर्व के राज्यों के विकास को लेकर केन्द्र की सरकार ने कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिससे कि इन क्षेत्रों में भी विकास का मार्ग सुनिश्चित किया जा सके।

9. जनसंख्या के असमान वितरण को प्रभावित करने वाले तीन कारकों का वर्णन कीजिए।

(२००६)

उत्तर जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

1. **स्वास्थ्य के लिए अनुकूल जलवायु**—अधिकांश लोग प्राय: उन्हीं क्षेत्रों में निवास करते हैं, जहाँ की जलवायु अनुकूल होती है अर्थात् जहाँ वर्षा, शीत, ग्रीष्म आदि मौसम अत्यधिक तीव्र नहीं होते हैं। इन्हीं कारणों से उत्तर के विशाल मैदान में अधिकांश जनसंख्या निवास करती है, जबकि लद्दाख या रेगिस्तानी भागों में अति अल्प जनसंख्या निवास करती है।
2. **आजीविका के साधनों की उपलब्धता**—भारत में अधिकांश जन घनत्व उन्हीं क्षेत्रों में पाया जाता है, जो या तो उर्वर कृषि प्रदेश हैं या औद्योगिक क्षेत्रों के समीप हैं या फिर व्यापार-वाणिज्य के बड़े केन्द्र हैं। इन कारकों से जनसंख्या का तीव्र संकेन्द्रण होता है; जैसे—उत्तरी विशाल मैदान उपजाऊ हैं
   अत: यहाँ जनसंख्या का संकेन्द्रण अधिक है। दिल्ली व मुम्बई व्यापारिक व औद्योगिक शहर हैं। इस कारण यहाँ अधिक जनसंख्या निवास करती है।
3. **परिवहन के साधनों की उपलब्धता**—भारत में गंगा का मैदान, तटीय एवं डेल्टाई भागों में यातायात के साधन अधिक विकसित हैं। अत: यहाँ जनसंख्या अधिक है, जबकि पूर्वोत्तर भारत, प्रायद्वीपीय उच्च भूमि तथा हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में परिवहन के संसाधन अल्प विकसित हैं। अत: यहाँ विरल जनसंख्या पाई जाती है। करें।

10. जनसंख्या से महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर जनसंख्या से सम्बन्धित तीन महत्त्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं—

(i) **जनसंख्या का आकार एवं वितरण**—इसके अन्तर्गत लोगों की देश में कितनी संख्या है तथा वे कहाँ निवास करते हैं, का अध्ययन किया जाता है।

(ii) **जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन की प्रक्रिया**—इसके अन्तर्गत समय के साथ जनसंख्या में किस प्रकार वृद्धि होती है, का अध्ययन किया जाता है।

(iii) **जनसंख्या के गुण या विशेषताएँ**—इसके अन्तर्गत जनसंख्या के सन्दर्भ में उम्र, लिंगानुपात, साक्षरता स्तर, व्यावसायिक संरचना एवं स्वास्थ्य की अवस्था का अध्ययन किया जाता है।

11. वर्ष 1951 के पश्चात् भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए तथा वृद्धि का प्रमुख कारण भी लिखिए।

उत्तर वर्ष 1951 के पश्चात् भारत में जनसंख्या वृद्धि में निरन्तर ही प्रगति हुई है, जिसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

मृत्यु दर में कमी तथा औसत आयु में वृद्धि—देश में स्वास्थ्य सेवाओं का विकास तेजी से होने के कारण अनेक महामारियों पर नियन्त्रण पा लिया गया है तथा टीके बना लिए गए हैं, साथ ही गर्भावस्था में ही अनेक टीके लगा दिए जाते हैं। इन कारणों से मृत्यु दर, जो 27.4% थी, वर्ष 2011 में घटकर मात्र 6.4% रह गई है। वर्ष 1951 में औसत आयु 36.7 वर्ष थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 66.1% हो गई है। इस कारण भी जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है।

शरणार्थी समस्या वर्ष 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना द्वारा किए गए अमानवीय दमन कार्यों के फलस्वरूप करोड़ों की संख्या में शरणार्थी भारत आए। इसके अतिरिक्त हिंसाग्रस्त देशों; जैसे—म्यांमार, श्रीलंका तथा अफगानिस्तान से भी समय-समय पर शरणार्थी भारत आते हैं। इस वजह से भी भारत की जनसंख्या में वृद्धि हुई।

12. भारत में प्रवास की प्रवृत्ति को बताइए।

उत्तर भारत में प्रवास की प्रवृत्ति ग्रामीण से शहरी क्षेत्र की ओर होती है। ग्रामीण क्षेत्र में अपकर्षण कारक प्रभावी होता है। इसका मूल कारण गरीबी और बेरोजगारी की समस्या है। वहीं नगरीय क्षेत्रों में रोजगार के अवसर और अच्छे जीवन स्तर के कारण अभिकर्षण कारक प्रभावी रहता है। भारत में वर्तमान प्रवास प्रवृत्ति के कारण देश के शहरों एवं नगरों की जनसंख्या में नियमित वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 1951 की कुल जनसंख्या की 17.29% नगरीय जनसंख्या थी। यह वर्ष 2011 में बढ़कर 31.16% हो गई है।

13. भारत में किशोर जनसंख्या की मुख्य प्रवृत्तियों/विशेषताओं को बताइए।

उत्तर भारत की किशोर जनसंख्या की मुख्य प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) भारत में किशोर वर्ग की आयु 10-19 वर्ष के बीच मानी गई है।

(ii) यह हमारे भविष्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानव संसाधन है।

(iii) भारत में किशोर वर्ग की अधिकांश लड़कियाँ अल्प पोषण की शिकार हैं।

(iv) सामान्य बच्चों व वयस्क की अपेक्षा किशोर वर्ग की जनसंख्या को पोषण की सर्वाधिक आवश्यकता महत्त्वपूर्ण है।

(v) भारत की कुल जनसंख्या का 5वाँ भाग किशोर जनसंख्या है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जनसंख्या वितरण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर भारत प्राकृतिक व भौगोलिक दृष्टिकोण से एक विविधतापूर्ण सामंजस्य को अपने साथ स्थापित करता है। भौगोलिक भिन्नता इसके जनसंख्या वितरण को भी प्रभावित करती है। जनसंख्या घनत्व के आधार पर देश को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है—

(i) **विरल जनसंख्या घनत्व वाले राज्य**—जम्मू-कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश एवं मिजोरम जैसे राज्यों में विरल जनसंख्या निवास करती है। इसके लिए यहाँ प्रतिकूल जलवायवी दशाएँ एवं पर्वतीय क्षेत्र उत्तरदायी हैं।

(ii) **मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य**—असोम सहित अधिकांश प्रायद्वीपीय राज्यों में जनसंख्या घनत्व मध्यम है। पहाड़ी एवं पथरीले भू-भाग, मध्यम से कम वर्षा तथा कम उपजाऊ मिट्टी यहाँ के जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करते हैं।

(iii) **सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले राज्य**—देश का उत्तरी मैदान एवं केरल का जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक है। इन क्षेत्रों की अनुकूल जलवायवी दशा, समतल मैदान और उपजाऊ मिट्टी तथा पर्याप्त वर्षा विपुल जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

2. जनसंख्या वृद्धि क्या है? इसके निर्धारक तत्त्वों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर किसी क्षेत्र/देश में एक निश्चित समय में लोगों की संख्या में परिवर्तन जनसंख्या वृद्धि है। जनसंख्या वृद्धि के निर्धारक तत्त्वों की व्याख्या निम्नवत् है

मृत्यु दर

- एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या को मृत्यु दर कहा जाता है। मृत्यु दर में गिरावट भी भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर का एक प्रमुख कारण है।
- वर्ष 1980 तक भारत में उच्च जन्म दर एवं मृत्यु दर में लगातार गिरावट के कारण जनसंख्या वृद्धि दर अधिक हो गई। वर्ष 1981 से जन्म दर में गिरावट के परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि दर में भी गिरावट आई।

प्रवास

- प्रवास, जनसंख्या वृद्धि/परिवर्तन का तीसरा महत्त्वपूर्ण घटक है। लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाना ही प्रवास कहलाता है। प्रवास को मूलत: दो भागों—आन्तरिक प्रवास और अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास में वर्गीकृत किया जा सकता है। आन्तरिक प्रवास राज्य की सीमाओं के अन्तर्गत ही होता है। इसके द्वारा किसी देश की जनसंख्या के आकार में कोई परिवर्तन नहीं आता है, किन्तु यह एक देश के भीतर जनसंख्या वितरण को प्रभावित करता है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास दो देशों के मध्य होता है और यह जनसंख्या एवं जनसंख्या वितरण दोनों को प्रभावित करता है।

3. भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर जनसंख्या वृद्धि के कारण निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं—

1. **बेरोजगारी की समस्या में वृद्धि**—भारत में रोजगार के साधनों में जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है, इस कारण बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है। कृषि में भी आवश्यकता से अधिक श्रमिक नियोजित हैं, जिस कारण प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या भी व्याप्त है।
2. **निर्धनता में वृद्धि**—संसाधनों की कमी तथा जनसंख्या की अधिकता के कारण अधिकांश जनसंख्या को आजीविका उपलब्ध नहीं हो पा रही है, जिसके कारण देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग गरीबी का जीवन जीने को मजबूर है, जिसका सापेक्षिक प्रभाव व्यक्ति के भोजन, स्वास्थ्य तथा शिक्षा के स्तर पर नकारात्मक रूप से पड़ता है।
3. **न्यून प्रतिव्यक्ति आय**—देश के नियोजित विकास के दौरान राष्ट्रीय आय में तो वृद्धि दर्ज की गई है, किन्तु प्रतिव्यक्ति आय का स्तर अपेक्षित गति में नहीं बढ़ा, फलस्वरूप देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग न्यून प्रतिव्यक्ति आय ही प्राप्त कर रहा है।
4. **कुपोषण में वृद्धि**—बढ़ती जनसंख्या को उचित खाद्य सुरक्षा उपलब्ध न होने के कारण बच्चों में कुपोषण की समस्या बढ़ रही है, जोकि आगे चलकर देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ ही बनते हैं।
5. **स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव**—जिस गति से जनसंख्या बढ़ी है, उस अनुपात से देश में स्वास्थ्य सेवाओं का विकास नहीं हो सका है। इस कारण शिशु मृत्यु दर तथा मातृ मृत्यु दर अभी भी ऊँची बनी हुई है।
6. **कृषि विकास में बाधा**—जनसंख्या में तीव्र वृद्धि से कृषि भूमि पर भार बढ़ रहा है। कृषि पर इसका नकारात्मक प्रभाव निम्न दो प्रकार से पड़ा है
   (i) परिवार में सदस्यों के बढ़ने से कृषि जोतों का बँटवारा अधिक मात्रा में हुआ है, जिससे जोतों का आकार छोटा होता जा रहा है।
   (ii) कृषि भूमि का उपयोग बढ़ती जनसंख्या को आवास सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु बड़ी मात्रा में हो रहा है, जिस कारण कृषि भूमि लगातार कम हो रही है।
7. **बचत एवं पूँजी निर्माण की न्यून दर**—जनसंख्या में जिस दर से वृद्धि हो रही है, उस अनुपात में आय अवसरों का सृजन नहीं हो पा रहा है। जो आय सृजित होती भी है, उसका उपयोग दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में हो रहा है। अत: पूँजी निर्माण की गति धीमी है, जोकि राष्ट्र के विकास में एक बड़ी बाधा है।
8. **प्रवासन में तेजी**—बढ़ती जनसंख्या से रोजगार की कमी हो रही है, जिस कारण लोग ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर तेजी से प्रवास कर रहे हैं तथा शहरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। प्रवासियों को शहरों में निम्नस्तरीय जीवन निर्वाह करना पड़ता है, जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। शहरों में भी रोजगार के अभाव में अपराध तथा गैर-कानूनी कृत्यों की मात्रा बढ़ रही है।

4. जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर किसे कहते हैं? जन्म दर को किस प्रकार कम किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर किसी क्षेत्र या देश के मध्य वर्ष की जनसंख्या में पाई जाने वाली जन्म दर और मृत्यु दर के अन्तर को जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर कहते हैं। इस संख्या में अप्रवासी जनसंख्या को शामिल नहीं किया

जाता। वृद्धि दर को हमेशा प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है। जन्म दर को कम करने के उपाय निम्नलिखित हैं

(i) शिक्षा के अधिक-से-अधिक प्रचार-प्रसार पर बल देना विशेषकर स्त्री शिक्षा पर।

(ii) परिवार नियोजन पर बल देना।

(iii) छोटे परिवार को प्रोत्साहित तथा बड़े परिवार के लिए कानूनी बाधाएँ एवं रोक।

(iv) निर्धारित विवाह उम्र का दृढ़ता से पालन।

(v) स्त्रियों के लिए रोजगार के साधनों का सृजन एवं रोजगार के लिए प्रोत्साहन।

5. क्या स्त्रियों को अच्छी शिक्षा देकर जनसंख्या की वृद्धि दर को कम किया जा सकता है? यह कैसे सम्भव है?

उत्तर विकसित देशों में निरक्षरता को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। इससे न केवल स्त्री-पुरुष के अनुपात में सन्तुलन पैदा हुआ अपितु इन देशों में जनसंख्या वृद्धि दर एक प्रतिशत से भी कम है। स्त्रियों को अच्छी शिक्षा प्रदान कर जनसंख्या की वृद्धि को आसानी से रोका जा सकता है

(i) अच्छी शिक्षा पाने के लिए एक लम्बी अवधि की आवश्यकता पड़ती है। अत: शिक्षित लड़कियों की अधिक उम्र में जाकर शादी होती है। तब तक परिवार-दायित्व का ज्ञान आसानी से हो जाता है।

(ii) शिक्षित स्त्रियों को रोजगार मिल जाता है। रोजगार प्राप्त महिलाएँ बच्चे की अच्छी देख-रेख करने में अपने को असमर्थ पाती हैं।

(iii) गर्भधारण से लेकर प्रजनन प्रक्रिया से जुड़ी अनेक समस्याओं का ज्ञान होने के कारण शिक्षित महिलाओं की जीवन प्रत्याशा अधिक होती है। वे अपने और अपने बच्चे के स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग होती हैं।

(iv) शिक्षित महिलाओं की दृष्टि व्यापक होती है। उनकी सोच राष्ट्रीय स्तर की होने के कारण वे बड़े परिवार को राष्ट्रीय संसाधनों पर बोझ मानती हैं।

(v) शिक्षित होने के कारण स्त्रियाँ छोटे परिवार के महत्त्व को समझती हैं, इसलिए छोटे परिवार के आकार को प्राथमिकता देती हैं।

6. व्यावसायिक संरचना से आप क्या समझते हैं? व्यवसायों के विभिन्न प्रकारों को वर्गीकृत कीजिए।

उत्तर व्यावसायिक गतिविधियों के अनुसार जनसंख्या के वितरण को व्यावसायिक संरचना (Occupational Structure) कहा जाता है। यह आर्थिक रूप से क्रियाशील जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण सूचक है। प्रत्येक राज्य/देश में विभिन्न व्यवसायों को करने वाले भिन्न-भिन्न लोग होते हैं। आर्थिक गतिविधियों को सामान्यत: तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है

- **प्राथमिक** इसमें कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, वृक्षारोपण व खनन जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।
- **द्वितीयक** इसमें उद्योग, भवन निर्माण जैसे कार्य सम्मिलित होते हैं।
- **तृतीयक** तृतीयक प्रकार के क्रियाकलापों में परिवहन, संचार, वाणिज्य, प्रशासन व अन्य सेवाएँ शामिल हैं।

❑❑❑

1

नागरिक शास्त्र (लोकतान्त्रिक राजनीति-1)

समकालीन विश्व में लोकतन्त्र

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लोकतन्त्र की तीन महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ बताइए।

उत्तर लोकतन्त्र की तीन महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(i) लोकतन्त्र, शासन प्रणाली का एक ऐसा स्वरूप है, जिसमें जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन होता है।

(ii) लोकतन्त्र में स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चुनाव होते हैं।

(iii) लोकतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह अमीर हो या गरीब, एक वोट देने का अधिकार प्राप्त है और इसका मूल्य भी समान होता है।

2. लोकतन्त्र के तीन अवगुण बताइए।

उत्तर लोकतन्त्र के तीन अवगुण इस प्रकार हैं—

(i) नेतृत्व लगातार बदलते रहने के कारण इससे अस्थिरता आती है।

(ii) लोकतन्त्र सिर्फ राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा एवं सत्ता का खेल है, जहाँ राजनीतिक दल जीतने एवं सत्ता पाने के लिए अनैतिक कार्य भी करते हैं, जिससे जातिगत राजनीति, साम्प्रदायिकता आदि को बल मिलता है।

(iii) लोकतन्त्र को मूर्खों का शासन भी कहा जाता है, क्योंकि लोकतन्त्र में चुनाव लड़ने के लिए कोई न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता नहीं है।

3. किस देश का उदाहरण लोकतन्त्र के स्वरूप को समझने की एक नई दिशा प्रदान करता है। स्पष्ट कीजिए।

उतर चीन एवं मैक्सिको का उदाहरण लोकतन्त्र के स्वरूप को समझने की एक नई दिशा प्रदान करता है।

चीन के सन्दर्भ में—चीन की संसद को कवांगुओ रेयमिन दाइवियाओ दाहुई (राष्ट्रीय जन संसद) कहते हैं। चीन की संसद के लिए प्रति पाँच वर्ष बाद नियमित रूप से चुनाव होते हैं। चुनाव लड़ने से पहले प्रत्याशी को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से सहमति की आवश्यकता होती है। चीन में एकदलीय शासन पद्धति है और वहाँ हमेशा साम्यवादी दल अर्थात् कम्युनिस्ट पार्टी का ही शासन रहता है।

मैक्सिको के सन्दर्भ में—वर्ष 1930 में आजाद होने के बाद से मैक्सिको में प्रत्येक 6 वर्ष बाद राष्ट्रपति चुनने के लिए चुनाव कराए जाते हैं। मैक्सिको में कभी भी मिलिट्री शासन या तानाशाही नहीं रही। वर्ष 2000 तक वहाँ सभी चुनाव इन्स्टीट्यूशनल रिवोल्यूशनरी पार्टी ही जीतती रही। विपक्षी दल चुनाव में हिस्सा लेते थे, पर कभी भी उन्हें जीत हासिल नहीं होती थी।

4. मतदान के समान अधिकार से वंचित होने के कारण बताइए।

उत्तर लोकतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को वोट देने का अधिकार प्राप्त है। लोकतन्त्र के लिए होने वाला संघर्ष सार्वभौम वयस्क मताधिकार के साथ जुड़ा था। इस अधिकार को लगभग सभी देशों ने अपना लिया था। यद्यपि मतदान के समान अधिकार से वंचित करने के भी उदाहरण हैं, जो निम्न हैं —

एस्टोनिया ने नागरिकता के नियम कुछ इस प्रकार बनाए हैं कि रूसी अल्पसंख्यक समाज के लोगों को मतदान का अधिकार प्राप्त करने में मुश्किल होती है।

फिजी की चुनाव प्रणाली में वहाँ के मूल निवासियों की वोट का महत्त्व भारतीय मूल के फिजी नागरिक की वोट से अधिक है।

लोकतन्त्र राजनैतिक समानता के बुनियादी सिद्धान्त पर आधारित है। लोकतन्त्र की तीसरी मुख्य विशेषता है कि लोकतन्त्र में प्रत्येक वयस्क नागरिक की एक वोट होनी चाहिए और प्रत्येक वोट का एकसमान मूल्य होना चाहिए।

5. चीन की संसद को क्या कहते हैं? यहाँ सरकार हमेशा किस पार्टी की बनती है?

उत्तर चीन की संसद को कवांगुओ रेयमिन दाइवियाओ दाहुई (राष्ट्रीय जन संसद) कहते हैं। चीन की संसद के लिए प्रति पाँच वर्ष बाद नियमित रूप से चुनाव होते हैं। इस संसद को देश के राष्ट्रपति को नियुक्त करने का अधिकार है। इसमें पूरे चीन से लगभग 3,000 सदस्य चुनकर आते हैं। कुछ सदस्यों का चुनाव सेना भी करती है। चुनाव लड़ने से पूर्व सभी उम्मीदवारों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से अनुमति लेनी होती है। वर्ष 2002-03 में हुए चुनावों में सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी और उससे सम्बद्ध कुछ छोटी पार्टियों के सदस्यों को ही चुनाव लड़ने की अनुमति मिली। इस प्रकार यहाँ हमेशा कम्युनिस्ट पार्टी की ही सरकार बनती है।

6. चीन, एस्टोनिया एवं सऊदी अरब को सच्चा एवं वास्तविक लोकतन्त्र क्यों नहीं माना जाता? कारण बताइए।

उत्तर लोकतन्त्र में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व—स्वतन्त्रता एवं समानता का अधिकार है, जबकि इन तीनों देशों में वास्तविक लोकतन्त्र नहीं है। इसके निम्न कारण हैं—

(i) वर्ष 2011 तक सऊदी अरब में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था।

(ii) एस्टोनिया ने अपने नागरिकों के लिए इस तरह से कानून बना दिए थे कि रूसी मूल के नागरिकों को वोट देने का अधिकार नहीं था।

(iii) चीन में किसी भी व्यक्ति को चुनाव लड़ने से पहले वहाँ की एकमात्र पार्टी 'कम्युनिस्ट पार्टी' से अनुमति लेना आवश्यक होता है अन्यथा वह चुनाव नहीं लड़ सकता।

उपरोक्त कारण ये दर्शाते हैं कि इन देशों में सच्चा एवं वास्तविक लोकतन्त्र नहीं है।

7. कौन-से तीन अधिकार लोकतन्त्र में प्रत्येक नागरिक को प्राप्त होते हैं?

उत्तर लोकतन्त्र में निम्न तीन अधिकार प्रत्येक नागरिक को प्राप्त होते हैं—

(i) प्रत्येक नागरिक को अपने विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदर्शित करने का अधिकार है। उसे संघ बनाने एवं शान्तिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने का भी अधिकार होता है।

(ii) प्रत्येक व्यक्ति, कानून के समक्ष समान होता है।

(iii) ये अधिकार न्यायपालिका द्वारा संरक्षित होते हैं।

8. भारत और मैक्सिको के चुनाव में किस प्रकार की भिन्नता है?

उत्तर भारत और मैक्सिको के चुनाव में निम्न प्रकार की भिन्नता है—

(i) दोनों देशों में बहुदलीय प्रणाली है। भारत के सम्पर्क में प्राय: सत्तारूढ़ दल चुनाव हार भी जाते हैं, जबकि मैक्सिको में पी. आर. आई. 70 से अधिक वर्षों से चुनाव नहीं हारी।

(ii) भारत में चुनाव प्रत्येक पाँच वर्ष के बाद होते हैं, जबकि मैक्सिको में छह वर्ष के बाद होते हैं।

(iii) भारत में सभी सरकारी अधिकारी चुनाव आयोग के अधीन काम करते हैं, जबकि मैक्सिको में ऐसा नहीं है।

9. "चीन में चुनाव लोगों के जनमत का प्रतिनिधित्व नहीं करता है? बताइए।

उत्तर चीन में प्रत्येक पाँच वर्ष बाद चुनाव होते हैं, जिसके सदस्य पीपुल्स कांग्रेस (चीन की संसद) के लिए चुने जाते हैं। यद्यपि चीन में कहने को लोकतन्त्र है, लेकिन वास्तव में चीन लोकतन्त्र के चरित्र को साकार नहीं कर पाता है, चीन में जो भी सदस्य चुनाव लड़ना चाहते हैं, उन्हें चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से बिना सहमति लिए चुनाव लड़ने नहीं दिया जाता है, इसलिए चीन में सिर्फ एक ही पार्टी को वोट दी जाती है और जनता के सामने विकल्प काफी सीमित होते हैं। एक दलीय शासन प्रणाली होने के कारण चीन में हमेशा एक ही पार्टी की सरकार रहती है।

10. बेहतर सरकार और सामाजिक जीवन पर प्रभाव के हिसाब से कौन-से तीन तर्क लोकतन्त्र को काफी मजबूत साबित करते हैं?

उत्तर निम्न तीन तर्क लोकतन्त्र को मजबूत साबित करते हैं—

(i) लोकतन्त्र नागरिकों का सम्मान बढ़ाता है।

(ii) लोकतन्त्र में नागरिकों की जो प्रतिष्ठा होती है, वह किसी और व्यवस्था में नहीं होती।

(iii) लोकतन्त्र राजनीतिक समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। यहाँ सबसे गरीब और अनपढ़ को भी वही दर्जा प्राप्त है, जो अमीर और पढ़े-लिखे लोगों को है। लोग किसी शासक की प्रजा न होकर स्वयं शासक हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पाकिस्तान में जनरल परवेज मुशर्रफ के शासनकाल को लोकतन्त्र क्यों नहीं कहा जा सकता? इनके पक्ष में पाँच तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर पाकिस्तान में जनरल परवेज मुशर्रफ ने अक्टूबर, 1999 में सैनिक शासन स्थापित किया और उसका नेतृत्व किया। उन्होंने लोकतान्त्रिक रूप से चुनी हुई सरकार को निष्काषित कर दिया और स्वयं को देश का मुख्य कार्यकारी घोषित किया। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने स्वयं को राष्ट्रपति घोषित किया और वर्ष 2002 में एक जनमत संग्रह कराकर अपना कार्यकाल पाँच वर्ष के लिए बढ़ा लिया।

22 अगस्त, 2002 में उन्होंने लीगल फ्रेमवर्क ऑर्डर के द्वारा पाकिस्तान के संविधान को बदल दिया। इस ऑर्डर के अनुसार, राष्ट्रपति, राष्ट्रीय और प्रान्तीय असेम्बलियों को भंग कर सकता है। मन्त्रिपरिषद् की कार्यप्रणाली पर राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् अपनी दृष्टि बनाए रखती है तथा इस परिषद् के अधिकतर सदस्य मिलिट्री ऑफिसर हैं। जनरल मुशर्रफ के कार्यकाल में लोगों को राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय असेम्बलियों में प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार था, परन्तु सत्ता की आधिकारिक शक्ति परवेज मुशर्रफ के पास ही थी। चुने हुए प्रतिनिधि वास्तविक शासक नहीं थे।

2. लोकतान्त्रिक सरकार के प्रमुख लक्षणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर लोकतान्त्रिक सरकार के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं—

(i) उत्तरदायी सरकार—लोकतान्त्रिक सरकार उत्तरदायी होती है। सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर निर्वाचित प्रतिनिधि लोगों के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

(ii) राजनीतिक सजगता—लोकतन्त्र का सबसे बड़ा गुण, इसका शैक्षिक मूल्य है। मूल्यों से लोगों में राजनीतिक चेतना का विकास होता है।

(iii) समानता का सिद्धान्त—लोकतन्त्र में कानून की दृष्टि से सभी समान हैं तथा जन्म, जाति, वर्ग, रंग, लिंग, धर्म आदि के आधार पर किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जाता।

(iv) जनता की इच्छा पर आधारित सरकार—लोकतन्त्र जनता की इच्छा पर आधारित होता है। जनता अपनी इच्छानुसार सरकार चुनती है।

(v) स्वतन्त्रता एवं समाजवाद पर आधारित—लोकतन्त्र में लोगों को अपने विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है।

3. गैर-लोकतान्त्रिक देशों के नागरिकों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

उत्तर गैर-लोकतान्त्रिक देशों के नागरिकों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है—

(i) नागरिक के जीवन एवं सुरक्षा की कोई गारण्टी नहीं होती। उदाहरण के लिए; चिली में सेना के द्वारा हजारों लोगों को मार दिया गया।

(ii) लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता नहीं होती। सरकार या शासक के विरुद्ध बोलने पर उन्हें तुरन्त दण्ड दे दिया जाता है।

(iii) नागरिकों को सरकार या प्रधान को चुनने की आजादी नहीं होती। वे अपनी इच्छा से वोट नहीं डाल सकते।

(iv) किसी भी विपक्षी पार्टी की बात नहीं सुनी जाती।

(v) गैर-लोकतान्त्रिक देश में लोगों को सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्वतन्त्रता नहीं होती। उदाहरण के लिए; उत्तर कोरिया, चीन आदि।

4. लोकतन्त्र के मुख्य दोषों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर लोकतन्त्र के मुख्य दोष निम्नलिखित हैं—

(i) **अस्थिरता** लोकतन्त्र में नेता और राजनीतिक दल बदलते रहते हैं। इस कारण राजनीतिक अस्थिरता बनी रहती है।

(ii) **नैतिकता का निम्न स्तर** लोकतन्त्र मुख्यत: राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा तथा शक्ति का खेल है। इसमें नैतिकता के लिए कोई स्थान नहीं है।

(iii) **निर्णय लेने में देरी** लोकतन्त्र में विचार-विमर्श की एक लम्बी प्रक्रिया चलती है, जिससे निर्णय लेने में देरी होती है।

(iv) **भ्रष्टाचार** लोकतन्त्र में भ्रष्टाचार चरम पर होता है। अनेक राजनीतिक दल शासन में आने के लिए ताकत एवं धन का इस्तेमाल करते हैं।

(v) **मूर्खों का शासन** लोकतन्त्र को अशिक्षितों एवं मूर्खों का शासन कहा जाता है, क्योंकि इसमें जन-प्रतिनिधियों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के कोई मानदण्ड तय नहीं किए गए हैं।

5. ''गैर-लोकतान्त्रिक सरकारों की तुलना में लोकतान्त्रिक सरकारें बेहतर न्याय करती हैं।'' वर्णन कीजिए।

उत्तर लोकतन्त्र में गैर-लोकतान्त्रिक सरकारों की तुलना में लोकतान्त्रिक सरकारें बेहतर न्याय करती हैं। इसे निम्न आधार पर समझा जा सकता है

(i) व्यापक चर्चा एवं बहस—लोकतन्त्र का आधार व्यापक चर्चा हैं। लोकतान्त्रिक फैसले में हमेशा ज़्यादा लोग शामिल होते हैं, चर्चा करके फैसले होते हैं तथा बैठकें होती हैं।

(ii) गलतियों की सम्भावना कम—लोकतान्त्रिक सरकार में किसी एक मुद्दे पर अनेक लोगों की सोच लगी रहती है। अत: इसमें गलती की सम्भावना कम-से-कम होती है। इसमें समय ज्यादा अवश्य लगता है, लेकिन फैसले करने के अपने लाभ भी हैं।

(iii) भेदभाव एवं टकराव को सम्भालने का तरीका—लोकतन्त्र भेदभावों और टकरावों को सँभालने का तरीका उपलब्ध कराता है। किसी भी समाज में लोगों के हितों और विचारों में अन्तर होता है। ऐसे में लोकतन्त्र शान्तिपूर्ण ढंग से समस्या का निदान करता है।

(iv) नागरिकों का सम्मान—लोकतन्त्र नागरिकों का सम्मान बढ़ाता है। यह राजनीतिक समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। यहाँ सबसे गरीब एवं अनपढ़ व्यक्तियों को अमीर एवं पढ़े-लिखे व्यक्तियों जैसा दर्ज़ा प्राप्त होता है।

(v) अधिक जवाबदेही स्वरूप—लोकतान्त्रिक शासन पद्धति दूसरों से इस आधार पर भी बेहतर है कि यह शासन का अधिक जवाबदेही स्वरूप है।

उपरोक्त कारणों से गैर-लोकतान्त्रिक सरकारों की तुलना में लोकतान्त्रिक सरकारें बेहतर न्याय करती हैं।

❑❑❑

2

संविधान निर्माण

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ संघर्ष किसने किया? अश्वेतों के साथ वहाँ किस तरह भेदभाव होते थे? बताइए।

उत्तर दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ संघर्ष नेल्सन मण्डेला ने किया। नेल्सन मण्डेला के अश्वेतों के समर्थन में संघर्ष करने के कारण उन्हें 28 वर्षों के लम्बे कारावास की सजा मिली। रंगभेद एक ऐसी व्यवस्था थी, जहाँ त्वचा के रंग के आधार पर अश्वेतों से श्वेतों द्वारा भेदभाव किया जाता था।

अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस ने इस संघर्ष का नेतृत्व प्रदान किया

(i) अश्वेतों को श्वेतों की जगह पर जाने की अनुमति नहीं थी। अश्वेत, श्वेतों की जगह पर तभी जा सकते थे, जब उन्हें इसकी अनुमति होती थी।

(ii) अश्वेत एवं श्वेतों के लिए अलग-अलग स्कूल, कॉलेज, होटल, अस्पताल, ट्रेन, बसों एवं सार्वजनिक शौचालयों की व्यवस्था थी।

(iii) यहाँ तक कि अश्वेतों को उस समय तक चर्च जाने की अनुमति नहीं थी, जब तक श्वेत वहाँ पूजा करते थे।

2. अफ्रीकी कांग्रेस के गठन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर वर्ष 1950 के आरम्भ में अश्वेतों एवं भारतीयों ने रंगभेद नीति के विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने धरना प्रदर्शन के माध्यम से आन्दोलन करना शुरू किया। अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (ANC) ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। इस आन्दोलन में रंगभेद की नीतियों के विरोध में मजदूर संगठन, कम्युनिस्ट पार्टी एवं संवेदनशील लोगों ने ANC को समर्थन दिया।

जब रंगभेद के खिलाफ संघर्ष बढ़ता गया, तो सरकार ने अपनी नीतियों में बदलाव शुरू किया तथा भेदभाव वाले कानून को वापस लिया। 28 वर्ष तक जेल में रहने के बाद नेल्सन मण्डेला को आजाद कर दिया गया। अन्ततः 26 अप्रैल, 1994 की रात्रि को दक्षिण अफ्रीका में गणराज्य का नया झण्डा लहराया, जिससे यह दुनिया का एक नया लोकतान्त्रिक देश बन गया तथा यहाँ रंगभेद वाली शासन व्यवस्था भी समाप्त हो गई।

3. हमारे संविधान में दिए गए मुख्य शब्दों के रूप में सम्प्रभुता, समाजवाद और धर्मनिरपेक्ष शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर हमारे संविधान में दिए गए मुख्य शब्दों के रूप में सम्प्रभुता, समाजवाद और धर्मनिरपेक्ष शब्दों का निम्न अर्थ है

(i) सम्प्रभुता—इससे आशय है कि राज्य आन्तरिक और बाह्य रूप से स्वतन्त्र है तथा वह किसी बाहरी सत्ता का गुलाम नहीं है। वह आन्तरिक और बाहरी विषयों पर स्वयं फैसला ले सकता है।

(ii) समाजवाद—इसका अर्थ ऐसे राज्य से है, जिसमें नागरिकों को सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में पूर्ण समानता हो। अमीर-गरीब का कोई भेदभाव न हो।

(iii) धर्मनिरपेक्ष—इस राज्य में किसी एक धर्म की प्रधानता नहीं होती। सभी धर्मों को एकसमान माना जाता है। धर्म के आधार पर नागरिकों से भेदभाव नहीं किया जाता है अर्थात् आधिकारिक तौर पर राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होगा।

4. संविधान एक लाभदायक दस्तावेज कैसे है?

उत्तर संविधान एक लाभदायक दस्तावेज इसलिए है, क्योंकि यह—

(i) आपसी विश्वास व सहयोग के माध्यम से लोगों में एकता बढ़ाता है तथा सरकार की शक्तियों व कार्यों की व्याख्या करता है।

(ii) जन भावनाओं का ध्यान रखते हुए आदर्शमूलक समाज की स्थापना करता है।

(iii) सरकार के अधिकारों की सीमा तय करता है और बताता है कि नागरिकों के क्या अधिकार हैं।

उपरोक्त सभी कारणों से संविधान एक लाभदायक दस्तावेज है।

5. भारतीय संविधान के निर्माताओं ने उसमें संशोधन का प्रावधान क्यों रखा था?

उत्तर एक संवैधानिक संस्थागत व्यवस्था मूल्य एवं दर्शन का प्रतीक है। भारतीय संविधान के अधिकांश भाग में इन व्यवस्थाओं की चर्चा की गई है। इन चर्चाओं को कानूनी भाषा में संविधान में लिखा गया है।

संविधान निर्माताओं ने सोचा कि संविधान को लोगों की भावनाओं के अनुरूप चलना चाहिए तथा समाज में हो रहे परिवर्तनों से दूर नहीं रहना चाहिए। संविधान निर्माताओं ने इसे पवित्र, स्थायी तथा न बदले जा सकने वाले कानून के रूप में नहीं देखा था, इसलिए उन्होंने संविधान में परिवर्तन का प्रावधान रखा है। इन परिवर्तनों को संविधान संशोधन के नाम से जाना जाता हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद-19 से 22 के अन्तर्गत कौन-सी स्वतन्त्रताएँ आती हैं?

उत्तर भारतीय संविधान के अनुच्छेद-19 से 22 के अन्तर्गत निम्नलिखित स्वतन्त्रताएँ आती हैं—

(i) स्वतन्त्रता के अन्तर्गत भाषण और विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता होती है।

(ii) इसमें सभा आयोजन करने की स्वतन्त्रता होती है, लेकिन सभा शान्तिपूर्वक हो। प्रत्येक व्यक्ति को दल बनाने, समूह अथवा संघ बनाने की स्वतन्त्रता होती है।

(iii) भारत का नागरिक होने के कारण वह देश में स्वतन्त्र रूप से कहीं भी आ-जा सकता है। केवल जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश के किसी भी भाग में घर बनाकर रह सकता है।

(iv) सभी नागरिकों को अपना व्यवसाय चुनने का अधिकार है। सभी नागरिकों को स्वतन्त्र रूप से वोट देने का अधिकार है। इन सभी स्वतन्त्रताओं पर सरकार तभी रोक लगा सकती है, जब कोई व्यक्ति या संघ ऐसा काम कर रहा हो, जिससे देश की एकता और अखण्डता को खतरा हो।

(v) कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण की स्वतन्त्रता का भी अधिकार है।

2. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ चलाए गए आन्दोलन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर रंगभेद नस्ली भेदभाव पर आधारित व्यवस्था का नाम है। विशेष तौर पर यह व्यवस्था दक्षिण अफ्रीका में यूरोपियों द्वारा चलाई गई। 17वीं-18वीं शताब्दी में व्यापार करने आई यूरोपीय कम्पनियों ने दक्षिण अफ्रीका को गुलाम बना लिया। अधिक संख्या में यूरोपीय गोरे लोग वहाँ आकर बस गए तथा अपना शासन स्थापित कर लिया। दक्षिण अफ्रीका के लोगों की चमड़ी काले रंग की होती है, इस कारण उन्हें अश्वेत कहा जाता है।

इनकी आबादी कुल आबादी की लगभग तीन-चौथाई थी। रंगभेद की नीति अश्वेतों के लिए दमनकारी थी। इस नीति के अन्तर्गत अश्वेतों को गोरों की बस्तियों में रहने या बसने की इजाजत नहीं थी। सार्वजनिक सम्पत्ति भी गोरों-कालों के लिए अलग-अलग थी; जैसे—रेलगाड़ी, बस, होटल, स्कूल, सिनेमाघर, नाट्यगृह इत्यादि। सार्वजनिक शौचालय एवं तरणताल में भी गोरों-कालों के लिए अलग-अलग व्यवस्था थी।

अश्वेतों को संगठन बनाने एवं विरोध करने का भी अधिकार नहीं था। वर्ष 1950 के दशक में इस रंगभेद शासन का विरोध करने के लिए अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के झण्डे के नीचे एकजुट होकर आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन में गोरों ने हजारों अश्वेतों की हत्या कर दी तथा दमन की नीति जारी रखी। अन्त में 26 अप्रैल, 1994 को दक्षिण अफ्रीका को इस रंगभेद की नीति से मुक्ति मिली तथा वहाँ लोकतन्त्र की स्थापना हुई। इस पूरे आन्दोलन में अश्वेतों के एक प्रमुख नेता नेल्सन मण्डेला ने प्रमुख भूमिका निभाई।

3. भारतीय संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों की मुख्य विशेषताएँ (लक्षण) बताइए।

उत्तर मौलिक अधिकारों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) व्यापक तथा विस्तृत—भारतीय संविधान में दिए गए मौलिक अधिकार बहुत ही व्यापक तथा विस्तृत हैं। इनका वर्णन संविधान के 24 अनुच्छेदों (अनुच्छेद-12 से 35) में किया गया है।

(ii) मौलिक अधिकार सभी नागरिकों के लिए हैं—ये अधिकार सभी नागरिकों को जाति, धर्म, रंग, लिंग, भाषा आदि के भेदभाव के बिना दिए गए हैं।

(iii) मौलिक अधिकार न्याय योग्य—इसका अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति अथवा सरकार नागरिकों के इन अधिकारों का उल्लंघन करने अथवा इन्हें छीनने का प्रयत्न करता है, तो नागरिक न्यायालय में जाकर उसके विरुद्ध न्याय की माँग कर सकता है।

(iv) अधिकार—मौलिक अधिकारों का प्रयोग नागरिकों द्वारा मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता। यदि कोई नागरिक इनका प्रयोग इस ढंग से करता है कि उससे शान्ति तथा व्यवस्था भंग होती हो अथवा दूसरों की स्वतन्त्रता के प्रयोग के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती हो, तो ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जा सकती है, उसे ऐसा करने से रोका जा सकता है।

(v) मौलिक अधिकारों को स्थगित किया जा सकता है—संकटकालीन स्थिति में मौलिक अधिकारों को निलम्बित किया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि संकटकाल में सरकार द्वारा इन अधिकारों के प्रयोग पर पाबन्दी लगाई जा सकती है।

4. हमें संविधान की आवश्यकता क्यों है? संविधान के तीन मुख्य कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर संविधान उन सिद्धान्तों और नियमों का समूह होता है, जिनके अनुसार शासन चलाया जाता है। संविधान एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है, क्योंकि संविधान ही शक्ति और सत्ता का मुख्य स्रोत है। संविधान ने ही देश में शक्तियों और अधिकारों का वितरण किया है। इसके कारण अलग-अलग सरकारें अपना-अपना कार्य सही तरीके से कर पाती हैं। अगर संविधान न हो, तो सभी एक-दूसरे के कामों में बाधा उत्पन्न करेंगे और देश सही ढंग से कार्य नहीं कर पाएगा तथा देश में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

संविधान के तीन कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) हमारे संविधान में देश चलाने के सभी नियम दिए गए हैं, जो सरकार को सही ढंग से चलाने में सहायता करते हैं।

(ii) हमारा संविधान भिन्न-भिन्न प्रकार की सरकारों पर प्रतिबन्ध लगाकर रखता है और उन्हें निश्चित दायरे में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

(iii) हमारे संविधान ने देश के सभी नागरिकों को कुछ-न-कुछ अधिकार और कर्त्तव्य दिए हैं। यह हमें सुनिश्चित करता है कि किसी भी नागरिक से उसके अधिकार न छीने जाएँ।

❑❑❑

3

चुनावी राजनीति

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में चुनावी प्रतिद्वन्द्विता के कुछ दोष बताइए।

उत्तर भारत में चुनावी प्रतिद्वन्द्विता के कुछ दोष निम्न प्रकार हैं—

(i) यह समाज में अनेकता तथा गुटवाद को बढ़ावा देती है।

(ii) विभिन्न राजनीतिक दल तथा उम्मीदवार चुनाव जीतने के लिए गलत तरीकों का प्रयोग करते हैं; जैसे- मतदान केन्द्रों पर कब्जा, रिश्वत देना इत्यादि।

(iii) चुनाव जीतने की प्रतिस्पर्द्धा दीर्घकालीन योजनाओं के लिए नुकसानदेह सिद्ध होती है।

(iv) अनेक बार चुनावी प्रतिस्पर्द्धा एक ऐसे वातावरण का निर्माण करती है, जिसमें कई अच्छे लोग हिस्सा नहीं लेते हैं।

2. चुनाव प्रचार के लिए आदर्श चुनाव आचार संहिता क्या है?

उत्तर नियमों एवं संहिताओं का एक परिपत्र जो राजनीतिक दलों के प्रत्याशियों को चुनाव के समय पालन करना होता है।

इस आदर्श चुनाव आचार संहिता की निम्न शर्तें हैं—

(i) चुनाव प्रचार के लिए किसी धर्मस्थल का प्रयोग नहीं कर सकता है।

(ii) सरकारी वाहन, विमान या अधिकारियों का उपयोग चुनाव में नहीं कर सकता है।

(iii) चुनाव की उद्घोषणा हो जाने के बाद मन्त्री किसी बड़ी योजना का शिलान्यास, बड़े नीतिगत फैसले या लोगों को सुविधाएँ देने वाले वायदे नहीं कर सकते हैं।

3. संसद के सदस्यों के विशेषाधिकारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संसद के सदस्यों के विशेषाधिकारों का वर्णन निम्न प्रकार है—

(i) संसद के प्रत्येक सदस्य को सदन में किसी भी विचाराधीन विषय पर अपने विचार प्रकट करने और भाषण देने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।

(ii) जब कोई मन्त्री किसी संसद सदस्य के प्रश्नों का सही उत्तर नहीं देता या कोई गलत सूचना देता है, तब सदस्य अध्यक्ष से उस मन्त्री के विरुद्ध कार्यवाही करने को कह सकता है।

(iii) अधिवेशन से चालीस दिन पहले, अधिवेशन के चलते रहने के समय तथा अधिवेशन के समाप्त होने के चालीस दिन तक किसी भी संसद सदस्य को किसी भी मुकदमे के सम्बन्ध में बन्दी नहीं बनाया जा सकता।

4. चुनाव घोषणा-पत्र के प्रमुख लाभ बताइए।

उत्तर चुनाव घोषणा-पत्र के निम्नलिखित लाभ हैं—

(i) इससे विभिन्न राजनैतिक दलों की आन्तरिक तथा बाहरी नीति के बारे में लोगों को जानकारी मिलती है।

(ii) विभिन्न राजनैतिक दलों के चुनाव घोषणा-पत्रों को देखने के पश्चात् मतदाताओं के लिए मत का निर्णय लेना आसान होता है। चुनाव जीतने वाले दल के लिए घोषणा-पत्र पथ-प्रदर्शन का कार्य करता है, क्योंकि उन्हें अपना कार्य उसी के अनुसार करना होता है।

(iii) चुनाव के पश्चात् घोषणा-पत्र के अनुसार कार्य करने के लिए जनता सरकार पर दबाव डाल सकती है। यदि सरकार उन वायदों को पूरा नहीं करती, जो घोषणा-पत्र में दिए गए थे, तो जनता सरकार की आलोचना कर सकती है।

5. भारतीय चुनाव प्रणाली की प्रमुख दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर भारतीय चुनाव प्रणाली की दो मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) वयस्क मताधिकार—भारत में चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर होते हैं। इसका अर्थ यह है कि यहाँ पर जाति, धर्म, वर्ग अथवा लिंग का भेद किए बिना उन सभी नागरिकों को, जिनकी आयु 18 वर्ष या उससे अधिक है, मतदान का अधिकार दिया गया है।

(ii) संयुक्त निर्वाचन—भारत में चुनाव पृथक् निर्वाचन के आधार पर नहीं होते, बल्कि संयुक्त निर्वाचन के आधार पर होते हैं। इसका अर्थ यह है कि एक चुनाव क्षेत्र में रहने वाले सभी मतदाता, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म व सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते हों, अपना एक प्रतिनिधि चुनते हैं।

6. चुनाव आयोग के तीन कार्य बताइए।

उत्तर चुनाव आयोग के निम्न तीन कार्य हैं—

(i) राजनीतिक दलों को चुनाव चिह्न आवण्टित करना।

(ii) चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करने वाले राजनीतिक दलों पर प्रतिबन्ध लगाना।

(iii) शान्तिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न कराना।

7. मतदाता को चुनाव में किस प्रकार के विकल्प प्राप्त होते हैं?

उत्तर चुनाव में मतदाता को कई प्रकार के विकल्प प्राप्त होते हैं—

(i) वे उसे चुनते हैं, जो विकास का कार्य करें।

(ii) वे उसे चुनते हैं, जो सरकार बनाएगा और मुख्य निर्णय लेगा।

(iii) वे उस दल को चुनते हैं, जिसकी नीतियाँ सरकार और कानून बनाने का निर्देश देंगी।

8. चुनावों की आवश्यकता के किन्हीं तीन कारणों को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर प्रतिनिधियों को चुनने के लिए चुनावों का होना आवश्यक है। अधिकांश लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्थाओं में लोग अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करते हैं, चुनाव की आवश्यकता के कारण निम्नलिखित हैं—

(i) यह उन समस्याओं को हल करती है, जिसमें प्रतिनिधियों को शिक्षा, ज्ञान या अनुभव के आधार पर चुना जाता है।

(ii) यह उनका विश्लेषण करने में सहायता करती है कि जनता अपने प्रतिनिधि को पसन्द करती है या नहीं।

(iii) प्रतिनिधि लोगों की इच्छा के अनुरूप शासन करे तथा जो जनता के लिए कार्य न करे, वह उनका प्रतिनिधि न रहे।

9. भारतीय चुनावों के क्या दोष हैं तथा इसके सामने क्या चुनौतियाँ हैं?

उत्तर भारतीय चुनावों के दोष एवं चुनौतियाँ निम्न हैं—

(i) आर्थिक रूप से सम्पन्न उम्मीदवार एवं दल चाहे चुनाव में अपनी विजय के प्रति आश्वस्त न हों, लेकिन छोटे दलों एवं निर्दलीय उम्मीदवारों पर बड़ा तथा अनुचित लाभ पाते हैं।

(ii) देश के कुछ भागों में आपराधिक छवि वाले लोग अन्य लोगों को चुनावी प्रतियोगिता में हराकर के राजनीतिक मुख्य दलों से चुनाव का टिकट पाने में सफल हो जाते हैं।

(iii) अलग-अलग दलों के कुछ राजनीतिक परिवारों से घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिससे उनके रिश्तेदार आसानी से टिकट प्राप्त कर लेते हैं।

(iv) आम आदमी के लिए चुनाव में कोई उचित विकल्प नहीं होता, क्योंकि दोनों पार्टियों की नीतियाँ एवं व्यवहार लगभग एक जैसे ही होते हैं। बड़ी पार्टियों की अपेक्षा छोटे दलों तथा निर्दलीय उम्मीदवारों को कई प्रकार की परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

10. भारत में मतगणना की प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर भारत में मतगणना की प्रक्रियाएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) जब चुनाव सम्पन्न हो जाता है, तो सभी इलैक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन किसी निर्धारित सुरक्षित क्षेत्र पर जमा करा दी जाती हैं।

(ii) निश्चित तिथि को उस निर्वाचित क्षेत्र की इलैक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन खोली जाती हैं और प्रत्येक उम्मीदवार के मत गिने जाते हैं।

(iii) प्रत्येक राजनीतिक दल के प्रतिनिधि मतगणना के समय उपस्थित रहते हैं।

(iv) सर्वाधिक मत प्राप्त करने वाले उम्मीदवार विजयी घोषित किए जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. चुनाव की निर्वाचित प्रक्रिया का स्वरूप कैसा है? इसकी प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर निर्वाचित प्रक्रिया का वर्णन निम्न प्रकार है—

(i) चुनाव तिथि की घोषणा करना—चुनाव प्रक्रिया चुनाव की तिथियों की घोषणा के साथ आरम्भ हो जाती है।

(ii) प्रत्याशियों द्वारा नामांकन-पत्र भरना—चुनाव की तिथियों की घोषणा के बाद प्रत्याशी अपने नामांकन-पत्र भरते हैं।

(iii) नामांकन-पत्रों की जाँच व वापस लेना—नामांकन-पत्रों की जाँच होती है, अधूरे पत्रों को आयोग द्वारा रद्द कर दिया जाता है। प्रत्याशियों को एक निश्चित तिथि तक अपना नाम वापस लेने का भी समय दिया जाता है।

(iv) चुनाव अभियान—विभिन्न राजनीतिक दल अपने प्रत्याशी के लिए चुनाव अभियान आरम्भ कर देते हैं।

(v) मतदान—चुनाव वाले दिन सार्वजनिक अवकाश की घोषणा कर दी जाती है, ताकि सभी मतदाता अपने मतों का प्रयोग कर सकें।

(vi) मतों की गणना एवं परिणामों की घोषणा—मतों की गणना की जाती है। इसके बाद विजयी प्रत्याशी की घोषणा की जाती है।

2. भारतीय चुनाव आयोग शक्तिशाली है, व्याख्या कीजिए।

उत्तर भारतीय चुनाव आयोग शक्तिशाली है। इसकी व्याख्या निम्न प्रकार है—

(i) भारतीय चुनाव आयोग एक संवैधानिक एवं स्वतन्त्र संस्था है। यह भारत में स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष चुनाव करवाने के लिए उत्तरदायी होता है।

(ii) यह भारत में चुनावी प्रक्रिया के संचालन और नियन्त्रण सम्बन्धी सभी पहलुओं पर अपने निर्णय लेता है।

(iii) यह आदर्श चुनाव संहिता लागू करता है, जिसका चुनाव काल में सभी राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को पालन करना अनिवार्य होता है। चुनाव काल में चुनाव आयोग सरकार को कुछ विशिष्ट दिशा-निर्देशों का पालन करने के लिए कह सकता है, ताकि सरकारी शक्ति तथा संसाधनों के दुरुपयोग को रोका जा सके।

(iv) चुनावी ड्यूटी के समय सभी सरकारी कर्मचारी चुनाव आयोग के अधीन कार्य करते हैं।

3. भारत सरकार द्वारा चुनाव प्रणाली में किए गए सुधारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत सरकार द्वारा चुनाव प्रणाली में निम्नलिखित सुधार किए गए हैं—

(i) मताधिकार की उम्र सीमा 18 वर्ष करना—पहले हमारे देश में मताधिकार की उम्र सीमा 21 वर्ष थी, जिसे 18 वर्ष तक करने की अनेक राजनीतिक दल और वर्ग बहुत दिनों से माँग कर रहे थे। सरकार ने संविधान में 61वाँ संशोधन करके मताधिकार की उम्र सीमा को 18 वर्ष कर दिया है।

(ii) चुनाव मशीनरी चुनाव आयोग के अधीन—वर्ष 1951 में जनप्रतिनिधित्व कानून में संशोधन करके चुनाव मशीनरी पर चुनाव आयोग को पूरा अधिकार दे दिया गया।

(iii) इलैक्ट्रॉनिक मशीन का प्रयोग—जनप्रतिनिधित्व कानून में संशोधन कर चुनाव में इलैक्ट्रॉनिक मतदान मशीनों के प्रयोग की व्यवस्था की गई।

(iv) बहु-सदस्यीय चुनाव आयोग का गठन—चुनाव आयोग को बहु-सदस्यीय बनाने के लिए संसद में दिसम्बर, 1993 में एक विधेयक पारित किया गया, जिसके अन्तर्गत यह प्रावधान किया गया कि चुनाव आयोग में मुख्य चुनाव आयुक्त के साथ दो अन्य सदस्य और होंगे।

(v) मतदाता पहचान-पत्र आवश्यक—चुनाव आयोग ने 15 दिसम्बर, 1993 को आदेश जारी किया कि दिसम्बर, 1994 तक जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश के सभी संसदीय क्षेत्रों में निर्वाचित

पहचान-पत्र जारी कर दिए जाएँ। तत्पश्चात् हरियाणा में फरवरी, 2000 में हुए विधानसभा चुनाव में मतदान पहचान-पत्रों के द्वारा ही कराया गया।

4. भारत में स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर भारत में स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं—

(i) चुनाव आयोग की स्थापना—इस बात को निश्चित करने के लिए कि चुनाव स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष हों, संविधान द्वारा चुनाव आयोग की स्थापना की गई है।

(ii) चुनाव से पूर्व मतदाता सूचियों को ठीक करना—चुनावों के कुछ समय पहले राज्य विधानसभा तथा संसद के प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूचियों को दोहराया जाता है और इसमें आवश्यक सुधार किए जाते हैं।

(iii) सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग पर नियन्त्रण—चुनाव आयोग इस बात का ध्यान रखता है कि सत्तारूढ़ दल सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग न करें।

(iv) मतदाताओं के लिए पहचान-पत्र—फर्जी मतदान को रोकने के लिए मतदाताओं को फोटो युक्त पहचान पत्र जारी किए जाते हैं।

(v) चुनावों में धन के प्रयोग पर प्रतिबन्ध—चुनावों में तय सीमा से अधिक धन खर्च करने पर प्रतिबन्ध रहता है।

5. एक लोकतान्त्रिक चुनाव की कम-से-कम पाँच जरूरी न्यूनतम शर्तों का वर्णन कीजिए।

उत्तर एक लोकतान्त्रिक चुनाव की कम-से-कम पाँच जरूरी न्यूनतम शर्तें निम्न प्रकार हैं—

(i) सबको चुनने का अधिकार होना चाहिए। इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक मत होना चाहिए तथा प्रत्येक मत का समान मूल्य होना चाहिए।

(ii) चुनने के लिए विकल्प होने चाहिए। दलों तथा प्रत्याशियों को चुनाव लड़ने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए और मतदाता के लिए विकल्प होना चाहिए।

(iii) चुनाव का अवसर नियमित अन्तराल पर मिलना चाहिए।

(iv) लोगों द्वारा साफ एवं स्वच्छ छवि के प्रत्याशी ही चुने जाने चाहिए।

(v) चुनाव स्वतन्त्र एवं न्यायपूर्ण ढंग से होने चाहिए, जहाँ लोग अपनी इच्छानुसार चुन सकें।

6. चुनाव अभियान के किन्हीं पाँच माध्यमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर चुनाव अभियान के विभिन्न साधन निम्नलिखित हैं—

(i) पोस्टर लगाना—पोस्टर के माध्यम से राजनीतिक दल तथा उम्मीदवार पढ़े-लिखे मतदाताओं को लुभाने का प्रयत्न करते हैं। पोस्टरों द्वारा आकर्षक नारे, प्रभावशाली आक्षेप, कार्टून तथा चुनाव सम्बन्धी विभिन्न सूचनाएँ दी जाती हैं।

(ii) सभाएँ करना व भाषण देना—विभिन्न राजनैतिक दल तथा उम्मीदवार आम सभाएँ करके अपने विचार जन-साधारण तक पहुँचाते हैं, वे अपनी अथवा अपने दल की अच्छाइयों तथा विरोधी दल की बुराइयों से जनता को अवगत कराते रहते हैं।

(iii) जुलूस निकालना—मतदाताओं को प्रभावित करने तथा अपने पक्ष में करने के लिए विभिन्न दल जुलूस निकालते हैं, जिनमें लाउडस्पीकरों से जोर-जोर से नारे लगाए जाते हैं। मतदाताओं से यह अपील की जाती है कि वह उस दल अथवा उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करें।

(iv) प्रेस व समाचार-पत्र—पढ़े-लिखे मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं का भी प्रयोग किया जाता है। विभिन्न नेता उनमें अपने विचार व्यक्त करते हैं तथा जनता को अपने पक्ष में मतदान करने की अपील करते हैं।

(v) घर-घर जाकर मतदाताओं से मिलना—चुनाव के दिनों में प्रत्येक उम्मीदवार अपने कार्यकर्ताओं को साथ लेकर घर-घर जाकर मतदाताओं से वोट माँगता है। मतदाताओं को उम्मीदवार तथा उसके दल के बारे में जानकारी दी जाती है और उनकी शंकाएँ दूर की जाती हैं।

❑❑❑

4

संस्थाओं का कार्यप्रणाली

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उच्चतम न्यायालय को संविधान का संरक्षक क्यों कहा जाता है?

उत्तर सर्वोच्च न्यायालय का एक महत्त्वपूर्ण कार्य संविधान की व्याख्या करना तथा उसकी रक्षा करना है। जब कभी संविधान की व्याख्या के बारे में मतभेद उत्पन्न हो जाए, तो उच्चतम न्यायालय द्वारा उसकी व्याख्या की जाती है और उसका निर्णय अन्तिम होता है। इसके अतिरिक्त यदि सर्वोच्च न्यायालय को यह विश्वास हो जाए कि संसद द्वारा बनाया गया कोई कानून या कार्यपालिका का कोई आदेश संविधान का उल्लंघन करता है, तो उच्चतम न्यायालय उस कानून को असंवैधानिक घोषित करके रद्द कर सकता है।

2. राष्ट्रपति की शक्तियों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर राष्ट्रपति की शक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

- सभी सरकारी कार्य राष्ट्रपति के नाम पर किए जाते हैं। सभी कानून तथा प्रमुख नीतिगत निर्णय राष्ट्रपति के नाम से ही जारी होते हैं।
- प्रमुख नियुक्तियाँ राष्ट्रपति द्वारा की जाती हैं जैसे कि सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीश, राज्यों में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक, महान्यायवादी, राज्यों के राज्यपाल, चुनाव आयुक्त, अन्य देशों में भारत के राजदूत इत्यादि।
- सभी अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियाँ तथा समझौते राष्ट्रपति के नाम पर ही किए जाते हैं। राष्ट्रपति सभी रक्षा सेवाओं का मुख्य अधिकारी होता है तथा इसके पास आपातकालीन शक्तियाँ होती हैं, जैसे कि राष्ट्रपति शासन की घोषणा तथा अध्यादेश का निकाला जाना।

3. सर्वोच्च न्यायालय की तीन न्यायिक शक्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर सर्वोच्च न्यायालय की तीन न्यायिक शक्तियाँ निम्न हैं—

(i) अपीलीय न्यायाधिकार—सर्वोच्च न्यायालय के पास निचले न्यायालयों की अपील सुनने एवं फैसला करने का अधिकार है।

(ii) परामर्शी न्यायाधिकार—सर्वोच्च न्यायालय महत्त्वपूर्ण फैसलों पर राष्ट्रपति को भी परामर्श दे सकता है।

(iii) मूल न्यायाधिकार—सर्वोच्च न्यायालय के पास भारत सरकार एवं राज्यों के मध्य उत्पन्न विवादों एवं एक या एक से अधिक राज्यों के मध्य उत्पन्न विवादों पर फैसला करने का अधिकार है। यह इसका मूल क्षेत्राधिकार है।

4. न्यायपालिका किसे कहते हैं? इसकी स्वतन्त्रता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर न्यायपालिका एक ऐसी संस्था है जो प्रशासनिक कार्य को सशक्त करती है तथा कानूनी समस्याओं के समाधान के लिए ढाँचा प्रदान करती है। देश के विभिन्न स्तरों पर उपलब्ध अदालतों को सामूहिक रूप से न्यायपालिका कहा जाता है।

न्यायपालिका की स्वतन्त्रता—न्यायपालिका, कार्यपालिका तथा विधायिका से स्वतन्त्र है। न्यायाधीश सरकार के या सत्ताधारी दल के नेताओं की इच्छानुसार कार्य नहीं करते हैं। इसी वजह से सभी आधुनिक लोकतन्त्रों में अदालतें विधायिका और कार्यपालिका के अधीन नहीं होतीं। भारत में भी यही व्यवस्था है।

5. गठबन्धन सरकार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर लोकतान्त्रिक व्यवस्था में किसी एक राजनीतिक पार्टी को पर्याप्त बहुमत हासिल न होने की स्थिति में दो या उससे अधिक राजनीतिक पार्टियों के गठबन्धन से बनी सरकार गठबन्धन सरकार कहलाती है। गठबन्धन की सरकार में अलग-अलग क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। गठबन्धन सरकारें अधिक स्थायी नहीं होती हैं, क्योंकि किसी भी विषय पर मतभेद उत्पन्न होने से सहयोगी पार्टियाँ तुरन्त ही गठबन्धन से अलग हो जाती हैं, इससे सरकार अल्पमत में आ जाती है। भारत में सर्वप्रथम वर्ष 1977 में गठबन्धन की सरकार बनी थी, जो महज 18 महीनों में गिर गई थी।

ऐसी सरकारों में प्रधानमन्त्री की भूमिका भी कमजोर हो जाती है। प्रधानमन्त्री को सहयोगी पार्टियों से सलाह लेकर निर्णय लेना होता है, जबकि प्रधानमन्त्री का पद लोकतान्त्रिक सरकार में बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

6. भारतीय न्यायपालिका किस प्रकार एकीकृत है? वर्णन कीजिए।

उत्तर देश के विभिन्न स्तरों के न्यायालय मिलकर न्यायपालिका कहलाते हैं। भारत में सर्वोच्च न्यायालय देश भर के लिए, उच्च न्यायालय राज्य स्तर पर तथा जिला न्यायालय स्थानीय स्तर के न्यायालय होते हैं।

भारत में यह निम्नलिखित रूप में एकीकृत है—

(i) इसका अर्थ है कि देश में न्यायिक प्रशासन को सर्वोच्च न्यायालय नियन्त्रित करता है। इसके निर्णय देश के अन्य सभी न्यायालयों को मानने अनिवार्य होते हैं।

(ii) सामाजिक तथा आपराधिक मामलों में यह सर्वोच्च अपील करने का न्यायालय है। यह उच्च न्यायालयों द्वारा लिए गए फैसलों पर अपील सुनकर फैसले कर सकता है।

(iii) सर्वोच्च तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश प्रधानमन्त्री की सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से की मन्त्रण के बाद राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

7. इन्दिरा साहनी तथा अन्य बनाम भारत सरकार के समुदायों के निर्णय का वर्णन कीजिए।

उत्तर यदि कोई व्यक्ति या संगठन सरकार की नीतियों से सन्तुष्ट नहीं है या आदेश के सम्बन्ध में कोई विवाद है, तो वे सर्वोच्च या उच्च न्यायालय के आदेशों के विरुद्ध मुकदमा कर सकते हैं। उदाहरणस्वरुप कुछ लोगों और संस्थाओं ने सरकार के सरकारी पदों पर जो सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लिए 27% आरक्षण के विरुद्ध उच्च न्यायालय में मुकदमा दर्ज किया गया। इस मुकदमें को 'इन्दिरा साहनी एवं अन्य बनाम भारत सरकार मामला' कहा जाता है।

8. आरक्षण का आदेश पारित होने के पहले की मुख्य घटनाओं को स्पष्ट रूप से समझाइए।

उत्तर आरक्षण का आदेश पारित होने के पहले की मुख्य घटनाएँ निम्न हैं—

- वर्ष 1979 में सरकार द्वारा द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन किया गया। इसकी अध्यक्षता बी. पी. मण्डल ने की थी। यह आयोग **मण्डल आयोग** के नाम से जाना गया।
- आयोग ने वर्ष 1980 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा अनेक सुझाव दिए। इसमें एक सिफारिश थी सरकारी नौकरियों में सामाजिक तथा शैक्षिक रूप से पिछड़े लोगों को 27% आरक्षण दिया जाना चाहिए।
- कई वर्षों तक सांसदों एवं पार्टियों ने आयोग की सिफारिशों को लागू करने की माँग की। वर्ष 1989 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में वादा किया कि सत्ता में आने पर वह मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करेगी। चुनाव के बाद जनता दल की सरकार बनी तथा वी. पी. सिंह प्रधानमन्त्री बने और उन्होंने इस सिफारिश को लागू किया।

9. संसद की आवश्यकता किन कारणों से होती है? स्पष्ट रूप से समझाइए।

उत्तर संसद की आवश्यकता निम्न कारणों से होती है—

- किसी भी नए कानून के निर्माण तथा पुराने कानूनों में परिवर्तन की सर्वोच्च संस्था संसद है।
- भारत में सरकार पर, संसद का प्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रण होता है। संसद की पूर्ण सहमति से ही सरकार फैसले कर सकती है।
- सरकार के सभी खर्चों पर संसद का पूर्ण नियन्त्रण होता है। अधिकांश देशों में संसद की अनुमति के बाद ही सरकार कोई धन खर्च कर सकती है।
- लोकहित के मामलों और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर किसी देश में चर्चा तथा वाद-विवाद की सर्वोच्च संस्था संसद ही होती है। संसद किसी भी मुद्दे पर सूचना प्राप्त कर सकती है।

10. संसद के दो सदन कौन-कौन से हैं? बताइए।

उत्तर आधुनिक लोकतन्त्र में संसद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अधिकांश बड़े देशों ने संसद की भूमिका और अधिकारों को दो भागों में बाँट दिया है। इसे चेंबर या सदन कहते हैं। *भारतीय संसद के दो सदन हैं*

(i) लोकसभा या निम्न सदन (हाउस ऑफ पीपल)—इस सदन के सदस्य सामान्यत: प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा चुने जाते हैं और जनता की तरफ से ही अधिकारों का प्रयोग करते हैं।

(ii) राज्यसभा या **उच्च सदन** (काउंसिल ऑफ स्टेट्स)—इस सदन के सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं और कुछ विशेष कार्य करते हैं। ये संसद के कुछ विशेष कार्य करते हैं। राज्य, क्षेत्र और संघीय इकाइयों के हितों की निगरानी करनी होती है।

भारत का राष्ट्रपति संसद का अंग होता है। वह किसी सदन का सदस्य नहीं होता, लेकिन उसके हस्ताक्षर तथा सहमति के बाद ही कोई कानून पारित तथा लागू होता है।

11. लोकतान्त्रिक देश में कितनी तरह की कार्यपालिका होती है?

उत्तर किसी लोकतान्त्रिक देश में दो तरह की कार्यपालिका होती है। जिनका वर्णन इस प्रकार है—

(i) राजनैतिक कार्यपालिका—जनता द्वारा खास अवधि के लिए निर्वाचित लोगों को राजनैतिक कार्यपालिका कहते हैं। ये राजनैतिक व्यक्ति होते हैं तथा बड़े फैसले लेते हैं।

(ii) स्थायी कार्यपालिका—इन्हें लम्बी अवधि के लिए नियुक्त किया जाता है। इन्हें स्थायी कार्यपालिका या प्रशासनिक सेवक कहा जाता है। सत्ताधारी पार्टियों के हटने के बाद भी ये अपने पद पर बने रहते हैं। ये अधिकारी राजनैतिक कार्यपालिका के अधीन कार्य करते हैं तथा दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में उनकी मदद करते हैं।

12. मन्त्रिपरिषद् में कौन-कौन से पद सम्मिलित होते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मन्त्रिपरिषद् उस संस्था का सरकारी नाम है जिसमें सारे मन्त्री होते है। इसके अन्तर्गत 60 से 80 मन्त्री होते हैं, जो अलग-अलग पदों पर होते है। मन्त्रिपरिषद् में निम्नलिखित पद शामिल होते हैं—

- **कैबिनेट मन्त्री**—सामान्यत: ये उच्च स्तर के मन्त्री होते हैं तथा विभिन्न प्रमुख मन्त्रालयों के प्रमुख होते हैं। कैबिनेट मन्त्री, मन्त्रिपरिषद् से सम्बधित फैसले करने के लिए बैठक करते हैं। इस तरह कैबिनेट मन्त्रिपरिषद् का शीर्ष समूह होता है। इसमें लगभग 20 मन्त्री होते हैं।
- **स्वतन्त्र प्रभार वाले राज्य मन्त्री**—ये सामान्यत: छोटे मन्त्रालयों के प्रभारी होते हैं। ये विशेष रूप से आमन्त्रित किए जाने पर ही कैबिनेट की बैठकों में भाग लेते हैं।
- **राज्य मन्त्री**—यह अपने विभाग के कैबिनेट मन्त्रियों से जुड़े हुए होते हैं और उनकी सहायता करते हैं।

13. राष्ट्रपति के निर्वाचक मण्डल में शामिल सदस्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत का राष्ट्रपति अप्रत्यक्ष रूप से चुना जाता है। वह आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली की एकल हस्तान्तरणीय मतदान प्रक्रिया द्वारा चुना जाता है। राष्ट्रपति के निर्वाचक मण्डल में निम्नलिखित सदस्य शामिल होते हैं—

(i) दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य।

(ii) राज्य विधानसभा के निर्वाचित सदस्य।

(iii) दिल्ली और पुदुचेरी (पांडिचेरी) विधानसभा के निर्वाचित सदस्य।

राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को जीतने के लिए स्पष्ट बहुमत प्राप्त करना आवश्यक है जिससे यह निर्धारित होता है कि राष्ट्रपति सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री की तरह

प्रत्यक्ष जनादेश का दावा नहीं कर सकता। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह नाममात्र के लिए मुख्य कार्यपालक की भूमिका निभाता है।

14. लोकसभा का सदस्य बनने के लिए निश्चित की गई योग्यताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर लोकसभा का सदस्य बनने के लिए निम्नलिखित योग्यताओं का होना आवश्यक है।

(i) वह भारत का नागरिक हो।

(ii) वह 25 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

(iii) वह भारत सरकार अथवा किसी राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर कार्यरत् न हो।

(iv) वह किसी गम्भीर अपराध में दण्डित नहीं किया गया हो।

(v) वह पागल अथवा दिवालिया न हो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. राज्यसभा पर लोकसभा की विशेष शक्तियों को संक्षेप रूप से वर्णन कीजिए।

उत्तर राज्यसभा को उच्च सदन तथा लोकसभा को निम्न सदन कहा जाता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि राज्यसभा अधिक शक्तिशाली है। हमारे संविधान में राज्यसभा को कुछ विशेष अधिकार दिए गए हैं, लेकिन अधिकतर मामलों पर सर्वोच्च अधिकार लोकसभा के पास ही है। ये अधिकार निम्न प्रकार हैं—

- किसी भी सामान्य कानून को पास करने के लिए दोनों सदनों की आवश्यकता होती है, लेकिन दोनों सदनों में मतभेद होने पर अन्तिम फैसला दोनों के संयुक्त अधिवेशन (Joint Session) में लिया जाता है। सदस्यों की संख्या अधिक होने पर लोकसभा के विचार को प्राथमिकता मिलती है।
- लोकसभा वित्त के मामलों में अधिक अधिकारों का प्रयोग करती है। लोकसभा से पारित बजट, वित्त-विधेयक या धन से सम्बन्धित किसी कानून को राज्यसभा निरस्त नहीं कर सकती।
- धन से सम्बान्धित मामलों को राज्यसभा अधिकतम 14 दिनों तक रोक सकती है या उसमें सुझाव दे सकती है, लेकिन यह लोकसभा की इच्छा पर निर्भर है कि वह उसे माने या न माने।
- लोकसभा मन्त्रिपरिषद् पर नियन्त्रण रखती है। केवल वही व्यक्ति प्रधानमन्त्री बन सकता है जिसे लोकसभा में बहुमत हासिल हो। यदि आधे से अधिक मन्त्रिपरिषद् के प्रति अविश्वास व्यक्त करे, तो प्रधानमन्त्री को मन्त्रिपरिषद् सहित अपना पद छोड़ना होगा। राज्यसभा को यह अधिकार प्राप्त नहीं होता।

2. संसद की शक्तियों एवं कार्य को विस्तार से बताइए।

उत्तर संसद लोकतन्त्र का आधार स्तम्भ है। जनता के हित के लिए कानून निर्माण की जिम्मेदारी संसद के पास होती है। संसद की महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ एवं कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) किसी भी देश में कानून बनाने की अन्तिम प्राधिकारी संसद होती है। भारत में संसद संघ सूची, समवर्ती सूची एवं विशेष मामलों में राज्य सूची पर भी कानून बनाती है।

(ii) संसद मन्त्रियों एवं प्रधानमन्त्री के खिलाफ संकल्प पारित कर सकती है, उसके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पास करने का अधिकार भी है।

(iii) सरकार का बजट संसद में ही पास होता है। बजट पर बहस एवं चर्चा सदन में होती है।

(iv) संसद राष्ट्रीय नीतियों के निर्माण एवं जनहित के मुद्दे पर चर्चा में होती है।

(v) संसद के पास राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों आदि को हटाने की शक्ति है।

3. राष्ट्रपति कौन होता है? इनका निर्वाचन कैसे होता है तथा इसकी शक्तियों पर सीमाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर राजनीतिक प्रणाली में राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रमुख होता है। वह केवल नाममात्र के अधिकारों का प्रयोग करता है। भारत का राष्ट्रपति ब्रिटेन की महारानी की तरह होता है, जिसका कार्य अलंकारिक अधिक होता है। राष्ट्रपति देश की सभी राजनैतिक संस्थाओं के काम की निगरानी करता है ताकि वे राज्य के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मिल-जुलकर काम करें।

राष्ट्रपति का निर्वाचन—भारत का राष्ट्रपति अप्रत्यक्ष रूप से चुना जाता है। वह आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली की एकल हस्तान्तरणीय मतदान प्रक्रिया द्वारा चुना जाता है।

राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को जीतने के लिए स्पष्ट बहुमत प्राप्त करना आवश्यक है जिससे यह निर्धारित होता है कि राष्ट्रपति पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री की तरह प्रत्यक्ष जनादेश का दावा नहीं कर सकता। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह नाममात्र के लिए मुख्य कार्यपालक की भूमिका निभाता है।

राष्ट्रपति की शक्तियों पर सीमाएँ—राष्ट्रपति की शक्तियों पर कुछ सीमाएँ भी लगाई गई हैं। वह अपनी सभी शक्तियों का प्रयोग मन्त्रिपरिषद् की सलाह पर ही करता है। राष्ट्रपति मन्त्रिपरिषद् को सलाह पर पुनर्विचार के लिए कह सकता है। लेकिन वही सलाह मन्त्रिपरिषद् द्वारा राष्ट्रपति के पास दोबारा भेजी जाती है, तो राष्ट्रपति उस सलाह को मानने के लिए बाध्य होता है।

4. सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति तथा न्यायाधीशों को हटाए जाने की प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की सलाह पर करता है। व्यावहारिक स्तर पर अब इस व्यवस्था में सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के नये न्यायाधीशों को चुनते हैं। इसमें राजनैतिक कार्यपालिका के हस्तक्षेप करने की संभावना बहुत कम है। सामान्यत: सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश को ही मुख्य न्यायाधीश चुना जाता है।

न्यायाधीशों को हटाए जाने की प्रक्रिया—एक बार यदि कोई व्यक्ति सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के पद को प्राप्त कर लेता है, तो उसे पद से हटाना कठिन होता है। उसे हटाना

भारत के राष्ट्रपति को हटाने जितना ही कठिन कार्य है। किसी भी न्यायाधीश को संसद के दोनों सदनों में अलग-अलग दो-तिहाई बहुमत से **महाभियोग** पारित करके ही हटाया जा सकता है। भारतीय लोकतन्त्र के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ है।

5. प्रधानमन्त्री की नियुक्ति कैसे होती है? इसकी पाँच मुख्य शक्तियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर लोकसभा के आम चुनाव के पश्चात् जिस राजनीतिक दल को लोकसभा में बहुमत प्राप्त होता है, उसी दल के नेता को राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री नियुक्त करता है। यदि किसी राजनीतिक दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त न हो, तो भी राष्ट्रपति को इस बारे में विवेकाधिकार प्राप्त है। ऐसी दशा में उसी व्यक्ति को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया जाता है, जो लोकसभा के बहुमत सदस्यों का सहयोग प्राप्त कर सकता है।

प्रधानमन्त्री को निम्नलिखित शक्तियाँ प्राप्त हैं—

- प्रधानमन्त्री की सलाह पर राष्ट्रपति अन्य मन्त्रियों को नियुक्त करता है। वह कैबिनेट की बैठकों की अध्यक्षता करता है। विभिन्न विभागों के कार्यों का समन्वय करता है। विवादों के मामले में प्रधानमन्त्री का निर्णय अन्तिम होता है।
- वह विभिन्न विभागों की सामान्य निगरानी करता है। सभी मन्त्री प्रधानमन्त्री की निगरानी में ही कार्य करते हैं।
- प्रधानमन्त्री, मन्त्रियों को काम का वितरण तथा पुनर्वितरण करता है तथा प्रधानमन्त्री को किसी भी मन्त्री को पद से हटाने का को अधिकार प्राप्त होता है। जब प्रधानमन्त्री पद छोड़ता है, तो पूरे मन्त्रिमण्डल को त्यागपत्र देना पड़ता है।

6. लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव कैसे होता है? राज्यसभा की शक्तियाँ बताए।

उत्तर लोकसभा के सदस्य आम जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। भारत के वे सभी नागरिक, जिनकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक हो, उन्हें वोट देने का अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को एक मत देने का अधिकार है। वह अपना मत अपनी इच्छानुसार किसी भी दल को दे सकता है। एक निर्वाचन क्षेत्र से एक ही उम्मीदवार को चुना जा सकता है। जिस उम्मीदवार को सबसे अधिक मत प्राप्त होते हैं, उसे विजयी घोषित किया जाता है। वहीं राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा होता है अर्थात् राज्यसभा सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष तौर पर जनता द्वारा होता है। राज्यसभा के सदस्य का कार्यकाल छः वर्ष का होता है।

राज्यसभा की शक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) राज्यसभा धन विधेयक को 14 दिन तक के लिए रोक सकती है। धन विधेयकों को छोड़कर कोई भी साधारण विधेयक पहले राज्यसभा में पेश हो सकता है।

(ii) राज्यसभा के सदस्यों को मन्त्रियों से प्रश्न और पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार है। राज्यसभा, लोकसभा के साथ मिलकर राष्ट्रपति पर महाभियोग लगाकर उसे अपदस्थ कर सकती है।

(iii) राज्यसभा, लोकसभा के साथ मिलकर विशेष न्यायालयों की स्थापना कर सकती है।

(iv) राज्यसभा, राज्य सूची के किसी विषय को राष्ट्रीय महत्त्व का घोषित करके संसद को इस पर कानून बनाने का अधिकार दे सकती है।

(v) राज्यसभा दो-तिहाई बहुमत से प्रस्ताव पास कर नई अखिल भारतीय सेवाओं के सृजन का अधिकार केन्द्रीय सरकार को दे सकती है।

❑❑❑

5

लोकतान्त्रिक अधिकार

↘ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मूल अधिकारों की किन्हीं चार विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर मूल अधिकारों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) मूल अधिकार मानवाधिकारों को प्रोत्साहन एवं बढ़ावा देने वाले होते हैं।

(ii) मूल अधिकार व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। यद्यपि मूल अधिकार असीम या पूर्ण नहीं होते हैं। राज्य सरकार इस पर तर्कसंगत प्रतिबन्ध लगा सकती है।

(iii) मूल अधिकारों के माध्यम से उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायालय किसी व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन होने की दशा में रिट जारी कर सकते हैं।

(iv) संवैधानिक उपचारों का अधिकार मूल अधिकार की सबसे प्रभावी विशेषता है। अत: मूल अधिकार मानव जीवन के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण अधिकार है।

2. शोषण के विरुद्ध अधिकार में निहित प्रावधानों को बताइए।

उत्तर संविधान के अनुच्छेद-23 व 24 के अन्तर्गत शोषण के विरुद्ध मूल अधिकार प्रदान किया गया है। अनुच्छेद-23 मानव-दुर्व्यापार, बालश्रम आदि का प्रतिषेध करता है तथा अनुच्छेद 24 के अन्तर्गत कारखानों आदि में बालकों के नियोजन पर रोक लगाया गया है। मानव-दुर्व्यापार का अर्थ अत्यन्त व्यापक है। *इसमें शामिल हैं*

(i) दास प्रथा

(ii) बेगार

(iii) मनुष्यों का वस्तुओं की भाँति क्रय-विक्रय

(iv) स्त्रियों एवं बच्चों का अनैतिक व्यापार

(v) बन्धुआ-मजदूरी आदि।

3. अधिकारों की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर अधिकारों की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण निम्न हैं—

(i) अधिकार समाज द्वारा स्वीकृत व्यक्ति के उपयुक्त दावे होते हैं।

(ii) अधिकार अन्य अधिकारों के प्रति सम्मान सापेक्ष होते हैं।

(iii) अधिकार लोकतन्त्र की गतिशीलता के लिए अनिवार्य तत्त्व है।

(iv) नागरिकों का जीवन तथा सम्मान मौलिक अधिकारों के बिना अर्थहीन है।

4. भारत में महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा के लिए किन्हीं तीन प्रमुख संवैधानिक प्रावधानों का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा के लिए तीन प्रमुख संवैधानिक प्रावधान निम्न हैं—

(i) समानता का अधिकार—इसके अन्तर्गत महिलाओं तथा बच्चों के लिए राज्य विशेष प्रावधान कर सकता है।

(ii) शोषण के विरुद्ध अधिकार—इसके अन्तर्गत मनुष्यों विशेषकर महिलाओं तथा बच्चों को खरीदना और बेचना कानून के अनुसार, दण्डनीय अपराध होगा।

(iii) स्वतन्त्रता का अधिकार—महिलाओं को भी पुरुषों की तरह स्वतन्त्रता एवं जीवन जीने का अधिकार है, उनके साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता।

5. न्यायपालिका हमारे मौलिक अधिकारों की रक्षा कैसे करती है? इस कथन का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर यह अधिकार अन्य अधिकारों को प्रभावी बनाता है। जब किसी नागरिक के मौलिक अधिकारों का हनन होता है, तो वह सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय में अपील कर इससे निदान पा सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय को मौलिक अधिकारों को लागू कराने के मामले में रिट जारी करने का अधिकार है। रिट पाँच प्रकार की होती है, *जो निम्न प्रकार हैं*—(i) बन्दी प्रत्यक्षीकरण (ii) परमादेश (iii) उत्प्रेषण (iv) अधिकार पृच्छा (v) प्रतिषेध

डॉ. अम्बेडकर ने संवैधानिक उपचारों के अधिकार को संविधान की आत्मा और हृदय कहा है। मौलिक अधिकारों के हनन के मामले में कोई भी पीड़ित व्यक्ति न्याय पाने के लिए अदालत में जा सकता है।

यदि मामला सार्वजनिक या सामाजिक हित का हो, तो ऐसे मामलों में मौलिक अधिकारों के उल्लंघन को लेकर कोई भी व्यक्ति अदालत में जा सकता है। ऐसे मामलों को जनहित याचिका के माध्यम से उठाया जाता है।

6. अधिकार का अर्थ एवं इसकी आवश्यकताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **अधिकार का अर्थ**—अधिकार समाज में मान्यता प्राप्त और कानून द्वारा स्वीकृत होते हैं। समाज के सभी प्रतिष्ठित नागरिक सरकार से कानूनी या नैतिक अधिकारों की माँग कर सकते हैं। जब सरकार या हमारे साथी नागरिक अधिकारों का सम्मान नहीं करते, तब उसे अधिकारों का उल्लंघन कहते हैं। ऐसी स्थिति में नागरिक अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए न्यायालय जा सकते हैं।

अधिकार की आवश्यकता—लोकतन्त्र की स्थापना के लिए अधिकारों का होना आवश्यक है। लोकतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को वोट देने और अपनी पसन्द की सरकार चुनने का अधिकार होना चाहिए। अधिकार बहुसंख्यकों के उत्पीड़न से अल्पसंख्यकों की रक्षा करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बहुसंख्यक किसी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में मनमानी न करें। अधिकार गारण्टियों की तरह हैं, जिनका उपयोग

गलत व्यवहार होने पर किया जा सकता है। अधिकांश लोकतान्त्रिक देशों में नागरिकों के अधिकार संविधान में लिखित होते हैं, जो अधिकारों का घोषणा-पत्र होता है।

7. भारतीय संविधान में कितने मौलिक अधिकार है? किसी एक अधिकार का वर्णन कीजिए।

उत्तर हमारा संविधान छ: मौलिक अधिकार प्रदान करता है, जो निम्न हैं—

(i) समानता का अधिकार
(ii) स्वतन्त्रता का अधिकार
(iii) शोषण के खिलाफ अधिकार
(iv) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार
(v) सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार
(vi) संवैधानिक उपचारों का अधिकार

समानता का अधिकार—संविधान के अनुसार, भारत में सरकार किसी व्यक्ति को कानून के सामने समानता या कानून से संरक्षण के मामले में समानता के अधिकार से वंचित नहीं कर सकती है अर्थात् किसी व्यक्ति का पद जो भी हो कानून का पालन सभी के लिए समान रूप से होगा। इसे कानून का राज भी कहते हैं। समानता का अधिकार किसी भी लोकतन्त्र की नींव है अर्थात् कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है।

सरकार धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकती। किसी व्यक्ति को दुकान, होटल और सिनेमाहॉल जैसे सार्वजनिक भवनों में जाने से रोका नहीं जा सकता।

अन्य पाँच अधिकारों के लिए पृष्ठ संख्या 3 व 4 का अध्ययन करें।

8. भारतीय संविधान निर्माताओं ने कितनी बुराइयों के विषय में बताया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संविधान निर्माताओं ने तीन बुराइयों के विषय में बताया है तथा इसको गैर-कानूनी घोषित किया।

- **पहला**—संविधान मनुष्यों के अवैध व्यापार पर रोक लगाता है। यहाँ व्यापार से तात्पर्य महिलाओं तथा बच्चों की अनैतिक कार्यों के लिए खरीद और बिक्री से है।
- **दूसरा**—हमारा संविधान किसी किस्म के 'बेगार' या किसी से जबरन काम कराने का निषेध करता है। बेगार प्रथा में मजदूरों को अपने मालिक के लिए मुफ्त या बहुत थोड़े से अनाज के लिए जबरन काम करना पड़ता है। यदि यही काम मजदूर को जीवनभर करना पड़ जाता है, तो उसे बन्धुआ मजदूर कहा जाता है।
- **तीसरा**—संविधान बाल मजदूरी पर प्रतिबन्ध लगाता है। कोई भी व्यक्ति किसी 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को खतरनाक काम में नहीं लगा सकता। इसके लिए सरकार ने बीड़ी बनाने, पटाखा बनाने, दियासलाई उद्योग इत्यादि में बाल मजदूरी रोकने के कानून बनाए हैं।

9. भारतीय संविधान में शामिल अधिकारों को मूल अधिकार क्यों कहा जाता है?

उत्तर भारतीय संविधान के तीसरे भाग में अनुच्छेद-12 से 35 में नागरिकों के मूल अधिकारों का वर्णन है। इन अधिकारों को मूल अधिकार इसलिए कहा जाता है, क्योंकि अधिकार मनुष्य की उन्नति तथा विकास के लिए आवश्यक माने जाते हैं। इन अधिकारों के प्रयोग के बिना कोई भी व्यक्ति अपने जीवन की उन्नति नहीं कर सकता।

ये अधिकार देश में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक लोकतन्त्र की स्थापना में सहायता करते हैं। संविधान में इन अधिकारों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, ताकि कोई सरकार नागरिकों के इन अधिकारों से वंचित न कर सकें और देश के सभी नागरिक इन अधिकारों का प्रयोग कर सकें।

10. मौलिक अधिकारों को लिखिए, जो संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किए गए हैं?

उत्तर भारतीय संविधान के भाग-3 में अनुच्छेद-12 से 35 तक मूल अधिकारों का वर्णन है

(i) समानता का अधिकार (अनुच्छेद-14 से 18)
(ii) स्वतन्त्रता का अधिकार (अनुच्छेद-19 से 22)
(iii) शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद-23 से 24)
(iv) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार (अनुच्छेद-25 से 28)
(v) शिक्षा एवं संस्कृति सम्बन्धी अधिकार (अनुच्छेद-29 से 30)
(vi) संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद-32)। सम्पत्ति के अधिकार को 44 वें संविधान संशोधन के तहत मूल अधिकारों की सूची से हटा लिया गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों की मुख्य विशेषताएँ (लक्षण) बताइए।

उत्तर मौलिक अधिकारों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) व्यापक तथा विस्तृत—भारतीय संविधान में दिए गए मौलिक अधिकार बहुत ही व्यापक तथा विस्तृत हैं। इनका वर्णन संविधान के 24 अनुच्छेदों (अनुच्छेद-12 से 35) में किया गया है।

(ii) मौलिक अधिकार सभी नागरिकों के लिए हैं—ये अधिकार सभी नागरिकों को जाति, धर्म, रंग, लिंग, भाषा आदि के भेदभाव के बिना दिए गए हैं।

(iii) मौलिक अधिकार न्याय योग्य—इसका अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति अथवा सरकार नागरिकों के इन अधिकारों का उल्लंघन करने अथवा इन्हें छीनने का प्रयत्न करता है, तो नागरिक न्यायालय में जाकर उसके विरुद्ध न्याय की माँग कर सकता है।

(iv) अधिकार—मौलिक अधिकारों का प्रयोग नागरिकों द्वारा मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता। यदि कोई नागरिक इनका प्रयोग इस ढंग से करता है कि उससे शान्ति तथा व्यवस्था भंग होती हो अथवा दूसरों की स्वतन्त्रता के प्रयोग के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती हो, तो ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। उसे ऐसा करने से रोका जा सकता है।

(v) मौलिक अधिकारों को स्थगित किया जा सकता है—संकटकालीन स्थिति में मौलिक अधिकारों को निलम्बित किया जा

सकता है। इसका अर्थ यह है कि संकट काल में सरकार द्वारा इन अधिकारों के प्रयोग पर पाबन्दी लगाई जा सकती है।

2. स्वतन्त्रता के अधिकार के तहत भारतीय नागरिकों को प्राप्त किसी पाँच अधिकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर संविधान के अनुच्छेद-19 के अन्तर्गत नागरिकों को प्राप्त स्वतन्त्रता के अधिकार निम्न हैं—

स्वतन्त्रता के अधिकार के अन्तर्गत विचारों की अभिव्यक्ति का अधिकार एक महत्त्वपूर्ण अधिकार है। इसके अन्तर्गत अपने विचारों एवं दृष्टिकोण को व्यक्त करने का अधिकार होता है।

भारत के सभी नागरिकों को यह स्वतन्त्रता प्रदान की गई है कि वह शान्तिपूर्ण तथा निरायुध सम्मेलन कर सकते हैं।

नागरिकों को संगठन बनाने की स्वतन्त्रता है। यह एक महत्त्वपूर्ण अधिकार है, क्योंकि यह संसदीय लोकतन्त्र का आधार है।

समस्त भारतीय नागरिकों को भारत में कहीं भी आने-जाने की स्वतन्त्रता है। नागरिकों को भारतीय राज्य क्षेत्र में कहीं भी निवास करने एवं बस जाने की स्वतन्त्रता है।

3. भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त तीन मौलिक अधिकारों के विषय में बताइए।

उत्तर भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिकों के लिए तीन मौलिक अधिकार निम्नलिखित हैं—

(i) समानता का अधिकार—इस अधिकार के अनुसार, भारत के सभी नागरिक एकसमान हैं। सबके लिए एकसमान कानून है। इसमें जाति, धर्म, रंग, लिंग और जन्म स्थान के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता है।

(ii) स्वतन्त्रता का अधिकार—इसके अन्तर्गत सभी नागरिकों को निम्नलिखित छ: स्वतन्त्रताएँ प्रदान की गई हैं—

(a) सभी नागरिकों को सभा करने और अपने विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।

(b) सभी नागरिकों को शान्तिपूर्ण ढंग से बिना हथियारों के जनसभा आयोजित करने का अधिकार है।

(c) भारत के किसी भी क्षेत्र में स्वतन्त्रतापूर्वक आवागमन करने का अधिकार है। सभी नागरिकों को भारत के किसी भी क्षेत्र में बसने का अधिकार प्राप्त है।

(d) सभी नागरिकों को संघ और समुदाय बनाने का अधिकार है।

(e) सभी नागरिकों को किसी भी व्यवसाय या रोजगार को अपनाने का अधिकार प्राप्त है।

(f) प्रत्येक नागरिक को बिना किसी अधिकार-पत्र के कहीं भी आते-जाने का अधिकार प्राप्त है।

(iii) संवैधानिक उपचारों का अधिकार—भारत के नागरिकों को दिए गए मौलिक अधिकारों का हनन होने पर नागरिकों को न्यायालय में जाने का पूर्ण अधिकार है। न्यायालय नागरिकों को उनके अधिकार दिलाता है। इस सम्बन्ध में सर्वोच्च न्यायालय पाँच तरह की रिट या आदेश जारी कर सकता है।

4. 'अस्पृश्यता' या 'छुआछूत' का क्या अर्थ है? देश के विभिन्न भागों में घूमते हुए पी. साईनाथ ने क्या पाया?

उत्तर संविधान सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए सरकार को निर्देश देता है। किसी भी प्रकार के छुआछूत को कानूनी रूप से दण्डनीय माना गया है। छुआछूत का अर्थ किसी खास जाति को छूने से नहीं है, बल्कि यह उन सभी सामाजिक मान्यताओं और आचरणों को भी गलत मानता है, जिनमें किसी विशेष जाति को निम्न स्तर का माना जाता है।

वर्ष 1999 में प्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ ने द हिन्दू अखबार में अपने लेख के माध्यम से दलितों और अनुसूचित जाति के प्रति होने वाले व्यवहार को दर्शाया था। ये देश के अनेक स्थानों पर गए और प्रत्येक जगह दलितों और अनुसूचित जाति के साथ अलग-अलग व्यवहार पाया, जो निम्न प्रकार है—

- चाय की दुकानों पर दो तरह के कप रखे जाते हैं—एक दलितों के लिए तथा दूसरा अन्य लोगों के लिए।
- हजाम दलितों के बाल नहीं काटते, दाढ़ी नहीं बनाते।
- दलित छात्रों को कक्षा में अलग बैठना होता है और अलग रखे घड़े से पानी पीना होता है।
- दलित दूल्हों को बारात में घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिया जाता।
- दलितों को सार्वजनिक हैण्डपम्प से पानी नहीं लेने दिया जाता या उनके पानी भर लेने के बाद हैण्डपम्प को साफ कर दिया जाता है।

❑❑❑

1

अर्थशास्त्र

पालमपुर गाँव की कहानी

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. किन राज्यों ने भारत में सबसे पहले कृषि के आधुनिक ढंग अपनाए थे? इसके कोई तीन सकारात्मक प्रभाव बताइए।

उत्तर भारत में सबसे पहले कृषि के आधुनिक ढंग पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने अपनाए थे। इसके सकारात्मक प्रभाव निम्न हैं—

(i) आधुनिक विधि से कृषि करने से भूमि की उत्पादकता बढ़ी है।

(ii) इसके द्वारा देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा है।

(iii) इसके द्वारा हरित क्रान्ति हुई, जिसके कारण गेहूँ तथा चावल का उत्पादन बढ़ा।

(iv) इसके द्वारा कृषि पर आधारित उद्योगों का विकास हुआ।

2. कृषि के आधुनिक तरीकों के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता क्यों होती है? व्याख्या करें।

उत्तर कृषि के आधुनिक तरीकों के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है, क्योंकि

(i) आधुनिक तरीकों से कृषि करने में एच.वाई. वी बीजों का प्रयोग किया जाता है। इन बीजों को सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है।

(ii) आधुनिक विधि से कृषि करने में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा मशीनों की आवश्यकता होती है, जिसके लिए अधिक नकदी की जरूरत होती है।

(iii) आधुनिक कृषि में प्रयुक्त मशीनें चलाने के लिए कुशल मानव श्रम की आवश्यकता होती है, जिसके कारण निवेश और बढ़ जाता है।

3. उत्पादन के लिए विभिन्न आवश्यकताएँ क्या होती हैं? वर्णन करें।

उत्तर उत्पादन के कारकों का वर्णन निम्नलिखित है—

1. **भूमि**—यह उत्पादन का एक स्थिर साधन है। इसमें प्राकृतिक संसाधन के रूप में जल, वन और खनिज पदार्थ मुख्य रूप से सम्मिलित होते हैं।
2. **श्रम**—यह उत्पादन का मुख्य साधन है। श्रमिक ही उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम प्रदान करता है।
3. **भौतिक**—पूँजी उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कार्य में लाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की आगतों (मदों) को भौतिक पूँजी कहा जाता है। यह दो प्रकार की होती है- स्थायी व कार्यशील पूँजी।
4. **मानव पूँजी**—उत्पादन प्रक्रिया में भूमि, श्रम एवं पूँजी को संयोजित कर जिस कारक द्वारा उसे संगठित किया जाता है, उसे मानव पूँजी कहा जाता है।

4. पालमपुर के किसान कौन-सी फसलों का उत्पादन करते हैं?

उत्तर पालमपुर की समस्त भूमि पर कृषि की जाती है तथा कोई भूमि बेकार नहीं छोड़ी जाती। पालमपुर के सभी किसान कम-से-कम दो मुख्य फसलें उत्पादित करते हैं। वर्षा ऋतु (खरीफ) में ज्वार और बाजरे की खेती करते हैं, इसके पौधों को पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके बाद अक्टूबर और दिसम्बर में आलू की खेती करते हैं। गेहूँ को सर्दी के मौसम (रबी) में उगाया जाता है। उत्पादित गेहूँ में से परिवार के खाने के लिए रखकर शेष गेहूँ किसान रायगंज की मण्डी में बेच देते हैं। पालमपुर के किसान भूमि के एक भाग पर गन्ने की खेती भी करते हैं, जिसकी वर्ष में एक बार कटाई की जाती है। गन्ना कच्चे रूप में या गुड़ के रूप में शाहपुर के व्यापारियों को बेचा जाता है।

5. अधिक उपज के लिए आधुनिक विधियों का प्रयोग करना दूसरा उपाय है। क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर अधिक उपज के लिए खेती में आधुनिक विधियों का प्रयोग करना दूसरा उपाय है। खेती में पारम्परिक बीजों का उपयोग 1960 के दशक के मध्य तक होता था, किन्तु 1960 के दशक के अन्त में हरित क्रान्ति ने भारतीय किसानों को अधिक उपज वाले बीजों के द्वारा गेहूँ और चावल की खेती करने के उपाय सिखाए। इसी के अन्तर्गत पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने खेती के आधुनिक तरीकों का सबसे पहले प्रयोग किया। इस क्रम में किसानों को गेहूँ की अधिक पैदावार प्राप्त हुई।

6. भारतीय कृषि में हरित क्रान्ति की किन्हीं तीन उपलब्धियों को बताइए।

उत्तर भारतीय कृषि में हरित क्रान्ति की उपलब्धियाँ निम्न हैं—

(i) भारत खाद्यान्नों में आत्म-निर्भर हो गया।

(ii) खाद्यान्न उत्पादन कई गुना बढ़ गया।

(iii) किसानों का जीवन-स्तर सुधरा।

(iv) कृषि पर आधारित उद्योग अधिक विकसित हुए।

7. आधुनिक कृषि विधि क्या है? इसकी त्रुटियाँ भी लिखिए।

उत्तर उत्पादन में वृद्धि करने का यह एक वैज्ञानिक उपाय है, जिसमें एच.वाई.वी.बीजों, रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। इसकी अनेक त्रुटियाँ हैं, जो निम्न हैं

(i) केवल सम्पन्न किसानों द्वारा ही इसका उपयोग किया जाता है।

(ii) रासायनिक उर्वरकों के अधिक उपयोग से भूमि की उर्वरता कम हो गई है।

(iii) अधिक सिंचाई के कारण भौम जल स्तर कम हो गया।

8. पालमपुर के किसानों में भूमि वितरण किस प्रकार है? समझाइए।

उत्तर पालमपुर गाँव में 450 परिवारों में से लगभग एक - तिहाई अर्थात् 150 परिवारों के पास खेती करने के लिए भूमि नहीं है, जिनमें अधिकांश संख्या दलितों की है। 240 परिवारों में से कुछ परिवार ऐसे हैं, जिनके पास भूमि है, किन्तु वे 2 हेक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाले भूमि के टुकड़ों पर खेती करते हैं। इसके अतिरिक्त गाँव में आधे से ज्यादा क्षेत्र में बड़े आकार के प्लॉट हैं। पालमपुर गाँव में मझोले और बड़े किसानों के 60 परिवार हैं, जो 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर खेती करते हैं तथा कुछ बड़े किसानों के पास 10 हेक्टेयर या इससे भी अधिक भूमि है।

9. किस पूँजी को आप सबसे अच्छा मानते हैं-भूमि, श्रम, भौतिक पूँजी एवं मानव पूँजी और क्यों?

उत्तर मानव पूँजी ही सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि इसी पूँजी द्वारा दूसरे संसाधन; जैसे—भूमि, श्रम और भौतिक पूँजी आदि सब उपयोगी बनते हैं। मानव पूँजी का निवेश ही अन्य साधनों का सही ढंग से उपयोग करता है। जापान का एक विकसित देश होना मानव पूँजी के निवेश का ही उदाहरण है। वास्तव में, मानव पूँजी कौशल और उसमें निहित उत्पादन के ज्ञान का भण्डार है। अत: हम कह सकते हैं कि मानव पूँजी ही सबसे श्रेष्ठ पूँजी के रूप में विद्यमान है।

10. भूमि के असमान वितरण के कारण पैदा हुई समस्याओं का उल्लेख करें।

उत्तर भूमि के असमान वितरण के कारण निम्न समस्याएँ पैदा होती हैं—

(i) भूमि के असमान वितरण के कारण आर्थिक असमानता उत्पन्न होने लगती है।

(ii) बेरोजगारी को बढ़ावा मिलता है।

(iii) गरीबी और भुखमरी बढ़ती है।

11. भूमि के एक टुकड़े पर एक से अधिक फसलें उगाने का क्या महत्त्व है?

उत्तर भूमि के एक टुकड़े पर एक से अधिक फसलें उगाने का महत्त्व निम्नलिखित है—

(i) भूमि की उर्वरता बनी रहती है।

(ii) भूमि के उसी टुकड़े पर एक से अधिक फसलें उगाने से भूमि का अधिकाधिक उपयोग किया जा सकता है।

(iii) किसानों को अधिक धन प्राप्त होता है, जो इसका प्रयोग अगली उपज के लिए करते हैं तथा पूरे वर्ष रोजगार की प्राप्ति करते हैं।

12. लोग स्थान क्यों बदलते हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर निम्न कारणों से जाते हैं—

(i) अच्छी नौकरी की तलाश में।

(ii) बेहतर जीवन-शैली के लिए।

(iii) अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए।

13. भूमि क्या होती है? भूमि के संजीवन के तीन तरीके बताइए।

उत्तर भूमि उत्पादन सम्बन्धी आवश्यकता को पूरी करने की प्रथम आवश्यकता है। यह उत्पादन का एक स्थिर कारक है।

भूमि के संजीवन के निम्न तरीके हैं—

(i) रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग कम करके जैव खाद का प्रयोग करना चाहिए।

(ii) आधुनिक वैज्ञानिक कृषि विधियों को प्रोत्साहित करके।

(iii) सामुदायिक या सहकारी कृषि को प्रोत्साहन देकर।

14. आर्थिक और गैर-आर्थिक क्रियाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **आर्थिक क्रियाएँ** वे क्रियाएँ, जो जीविका कमाने के लिए और आर्थिक उद्देश्य से की जाती हैं, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। ये क्रियाएँ उत्पादन, विनिमय एवं वस्तुओं और सेवाओं के वितरण से सम्बन्धित होती हैं। लोगों का व्यवसाय, पेशे और रोजगार में होना आर्थिक क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं का मूल्यांकन मुद्रा में किया जाता है।

गैर-आर्थिक क्रियाएँ वे क्रियाएँ, जो भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए की जाती हैं और जिनका कोई अधिक उद्देश्य नहीं होता, गैर-आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। ये क्रियाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं सार्वजनिक हित से सम्बन्धित हो सकती हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. खेतों से उत्पादन बढ़ाने में आने वाली मुख्य कठिनाइयों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर खेतों से उत्पादन बढ़ाने में आने वाली मुख्य कठिनाइयाँ निम्न हैं—

(i) अपर्याप्त निवेश होने के कारण कृषि को बड़ा आघात पहुँचा है।

(ii) अत्यधिक लोगों का कृषि पर निर्भर होना भी उत्पादन बढ़ाने में मुख्य कठिनाई है।

(iii) भूमि की जोतों का आकार छोटा होने के कारण भी उत्पादन बढ़ाने में समस्या आती है।

(iv) भारतीय किसानों द्वारा उत्पादन के लिए पुरानी तकनीक का प्रयोग किया जाता है, जो अधिक उत्पादन के लिए उपयुक्त नहीं है।

(v) सिंचाई व्यवस्था का सही प्रबन्ध न होना भी कम उत्पादन का कारण है।

2. उदाहरणों की सहायता से रबी तथा खरीफ फसलों का वर्णन कीजिए। बहुविध फसलों के लिए दो आवश्यक शर्तें बताइए।

उत्तर **खरीफ की फसलें**—खरीफ की खेती वर्षा ऋतु में की जाती है। ये फसलें जून-जुलाई में बोई जाती हैं तथा अक्टूबर-नवम्बर में काट ली जाती हैं।

- **रबी की फसलें**—ये फसलें सर्दी ऋतु में होती हैं। इन फसलों को अक्टूबर-नवम्बर में बोया जाता है तथा मार्च-अप्रैल में काट लिया जाता है। गेहूँ इस ऋतु में उगाई जाने वाली मुख्य फसल है।
- **बहुविध फसलों के लिए आवश्यक शर्तें**—बहुविध फसलों के लिए दो आवश्यक शर्तें निम्न हैं—

(i) सिंचाई की उत्तम सुविधा होनी चाहिए।

(ii) खेती में निवेश के लिए किसानों के पास पर्याप्त पूँजी हो।

3. पालमपुर गाँव में की जाने वाली किन्हीं तीन गैर-कृषि क्रियाओं का उल्लेख करें।

उत्तर पालमपुर गाँव में की जाने वाली तीन गैर-कृषि क्रियाएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) **डेयरी**—पालमपुर के कई परिवारों में डेयरी एक प्रचलित क्रिया है। लोग अपनी भैंसों को कई तरह की घास और बरसात के मौसम में उगने वाले ज्वार एवं बाजरा खिलाते हैं। दूध निकट के बड़े गाँव रायगंज में बेचा जाता है। शाहपुर शहर के दो व्यापारियों ने रायगंज में दूध संग्रहण एवं शीतलन केन्द्र खोला हुआ है, जहाँ से दूध दूर-दराज के शहरों एवं कस्बों में भेजा जाता है।

(ii) **लघुस्तरीय विनिर्माण**—पालमपुर में 50 से कम लोग विनिर्माण कार्यों में जुटे हैं। शहरों एवं कस्बों में बड़ी फैक्ट्रियों में होने वाले विनिर्माण के विपरीत पालमपुर में विनिर्माण में बहुत सरल उत्पादन विधियों का प्रयोग होता है और उसे छोटे पैमाने पर ही किया जाता है।

(iii) **दुकानदार**—पालमपुर में ज्यादा लोग व्यापार (वस्तु विनिमय) नहीं करते। पालमपुर के व्यापारी वे दुकानदार हैं, जो शहरों के थोक बाजारों से कई प्रकार की वस्तुएँ खरीदते हैं एवं गाँव में लाकर बेचते हैं। गाँव में छोटे जनरल स्टोर हैं, जहाँ चावल, गेहूँ, चाय, तेल, बिस्कुट आदि सामान बिकते हैं।

4. उत्पादन क्या है? उत्पादन के साधन के रूप में श्रम की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर उत्पादन, वस्तुओं एवं सेवाओं को उपलब्ध कराने की प्रक्रिया को कहा जाता है। उत्पादन का उद्देश्य ऐसी वस्तुएँ और सेवाएँ प्रदान करना है, जिनकी मनुष्यों को बेहतर जीवन यापन के लिए आवश्यकता होती है। उत्पादन भूमि, पूँजी, और श्रम को संयोजित करके किया जाता है, इसलिए ये उत्पादन के कारक कहलाते हैं, क्योंकि वर्तमान युग औद्योगिक युग है, इसलिए प्रतिदिन नए-नए निर्माण हो रहे हैं; जैसे- स्टील से कार बनाना इत्यादि। इन वस्तुओं में मूल्य का निर्माण करना ही उत्पादन कहलाता है।

उत्पादन के साधन के रूप में श्रम की निम्न विशेषताएँ हैं

(i) उत्पादन का एक सक्रिय साधन श्रम होता है। श्रम की कुशलता को प्रशिक्षण द्वारा बढ़ाया जाता है।

(ii) श्रमिकों को उनकी मेहनत के बदले मजदूरी देने का प्रावधान है। श्रम विभाजन के माध्यम से कार्य दक्षता बढ़ाई जाती है।

(iii) श्रमिक कम समय में अपना काम सीख जाते हैं। अत: उन्हें जल्दी उत्पादन में लगाया जा सकता है।

5. उत्पादन संगठन में भौतिक पूँजी एवं मानव पूँजी को कितने भागों में वर्गीकृत किया जाता है? संक्षेप में बताइए।

उत्तर उत्पादन संगठन के अन्तर्गत भूमि, श्रम एवं पूँजी को सम्मिलित किया जाता है। पूँजी को दो भागों में बाँटा जाता है

(i) **भौतिक पूँजी**—उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कार्य में लाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की आगतों (मदों) को भौतिक पूँजी कहा जाता है। भौतिक पूँजी दो प्रकार की होती है

(a) **स्थायी पूँजी**—उत्पादन कार्य में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के औजारों, मशीनों एवं भवनों इत्यादि को स्थायी पूँजी के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत किसान के हल से लेकर परिष्कृत मशीनों; जैसे—जनरेटर, टरबाइन, कम्प्यूटर इत्यादि आते हैं। औजारों, मशीनों एवं भवनों को उत्पादन प्रक्रिया में कई वर्षों तक प्रयोग में लाया जाता है, इस कारण इसे स्थायी पूँजी कहा जाता है।

(b) **कार्यशील पूँजी**—उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रयोग में लाए जाने वाले कच्चे माल एवं नकदी के प्रवाह को कार्यशील पूँजी के अन्तर्गत रखा जाता है; जैसे—बुनकरों द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला कच्चा सूत, कुम्हार द्वारा बर्तन बनाने के प्रयोग में लाई जाने वाली मिट्टी, उत्पादन के दौरान जरूरी माल खरीदने के पश्चात् भुगतान की जाने वाली नकदी इत्यादि।

(ii) **मानव पूँजी**—उत्पादन प्रक्रिया में भूमि, श्रम एवं पूँजी को संयोजित कर जिस कारक द्वारा उसे संगठित किया जाता है, उसे मानव पूँजी कहा जाता है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं प्रशिक्षण के माध्यम से एक कुशल मानव पूँजी का विकास किया जा सकता है।

6. गाँव में और अधिक गैर-कृषि कार्य आरम्भ करने के लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर गाँव में लगभग 75% व्यक्ति कृषि पर निर्भर हैं, जिनमें किसान और खेतिहर मज़दूर दोनों सम्मिलित हैं, किन्तु उनकी आर्थिक दशा दयनीय है। उनकी जनसंख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जबकि भूमि स्थिर है और कृषि क्रियाओं में और अधिक मजदूरों को कार्य मिल पाने की सम्भावना बहुत कम है, इसलिए गैर-कृषि कार्यों में वृद्धि करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है, जिससे खेतिहर मजदूरों को उनमें कार्य मिल सके, जैसे कि डेयरी, विनिर्माण, दुकानदारी, परिवहन, शैक्षिक कार्य आदि। ये सभी गैर-कृषि क्रियाएँ हैं। किसान के पास जब खेतों का कुछ भी कार्य न हो, तो वे भी इन क्रियाओं में सम्मिलित हो सकते हैं। यह उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करने में सहायक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषिगत रोजगारों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा भी कदम उठाए जाने चाहिए। ग्रामीणों को सहकारी एवं वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से धन उपलब्ध कराया जाना चाहिए तथा गाँवों में कृषि उत्पादों से सम्बन्धित छोटे उद्यमों को बढ़ावा देना चाहिए; जैसे—खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, हथकरघा उद्योग इत्यादि।

❑❑❑

2

संसाधन के रूप में

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तीन क्षेत्रकों में रोजगार के परिदृश्य की चर्चा कीजिए।

उत्तर तीन क्षेत्रकों में रोजगार के परिदृश्य निम्न हैं—

प्राथमिक क्षेत्र—यह कृषि श्रमिकों का सबसे अधिक अवशोषण करने वाला क्षेत्र है, किन्तु इसे प्रच्छन्न बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा है।

द्वितीयक क्षेत्र—इस क्षेत्र में छोटे पैमाने पर होने वाले विनिर्माण में श्रमिकों का सबसे अधिक अवशोषण होता है।

तृतीयक क्षेत्र—यह क्षेत्र सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, जो बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में सहायक हो सकता है।

2. ''प्राथमिक क्षेत्रक में रोजगार ढाँचा स्व-रोजगार पर आश्रित होने के क्या कारण है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर प्राथमिक क्षेत्रक में रोजगार ढाँचा स्व-रोजगार पर आश्रित होने के कारण निम्न हैं—

(i) प्राथमिक क्षेत्रक में सम्पूर्ण परिवार खेतों में कार्य करता है। अत: वहाँ प्रच्छन्न बेरोजगारी पाई जाती है।

(ii) इसके अन्तर्गत उत्पादित वस्तुओं में सर्म्पूण परिवार का हिस्सा होता है।

(iii) खेतों में काम करने की अवधारणा तथा उत्पादन वृद्धि से बेरोजगारी कम हुई, किन्तु निर्धनता कम नहीं हुई।

3. आर्थिक क्रियाएँ क्या हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर वे क्रियाएँ, जो अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में मूल्यवर्द्धन करती हैं, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं—

(i) बाजार क्रियाएँ—इन क्रियाओं में वेतन या लाभ के उद्देश्य से की गई क्रियाओं के लिए पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है।

(ii) गैर-बाजार क्रियाएँ—इन क्रियाओं से अभिप्राय स्व-उपभोग के लिए उत्पादन से है। इनके अन्तर्गत प्राथमिक उत्पादों का उपभोग तथा अचल सम्पत्तियों का स्व-लेखा उत्पादन शामिल है।

4. मध्याह्न भोजन/आहार का क्या अर्थ है? इसके दो उद्देश्य बताइए।

उत्तर मध्याह्न/आहार योजना विद्यार्थियों को पोषक आहार प्रदान करने के लिए चलाई गई है।

इस योजना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(i) यह योजना विद्यार्थियों की उपस्थिति को उत्साहित करने के लिए चलाई गई।

(ii) इसका उद्देश्य बच्चों का पोषण स्तर बढ़ाना है।

(iii) इस योजना के माध्यम से भारत की जनसंख्या की साक्षरता में वृद्धि करना है।

5. मौसमी बेरोजगारी क्या है? मौसमी बेरोजगारी के लिए उत्तरदायी कारक कौन-से हैं?

उत्तर वर्ष के कुछ महीनों में जब लोगों को रोजगार प्राप्त नहीं होता है, तब मौसमी बेरोजगारी होती है। जो लोग कृषि पर आश्रित होते हैं, उन्हें इस बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ता है।

मौसमी बेरोजगारी के लिए उत्तरदायी कारक निम्न हैं—

(i) ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे पैमाने तथा कुटीर उद्योगों की कमी।

(ii) बहु-फसलों की कमी।

(iii) कृषि में व्यावसायिकता की कमी।

6. बाजार क्रियाओं तथा गैर-बाजार क्रियाओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बाजार क्रियाओं और गैर-बाजार क्रियाओं में निम्नलिखित अन्तर हैं—

बाजार क्रियाएँ	गैर-बाजार क्रियाएँ
इनमें वेतन या लाभ के उद्देश्य से की गई क्रियाओं के लिए पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है।	ये क्रियाएँ स्व-उपभोग के लिए की जाती हैं।
इनके अन्तर्गत सरकारी सेवा सहित वस्तु या सेवाओं का उत्पादन शामिल है।	इनके अन्तर्गत प्राथमिक उत्पादों का उपभोग तथा अचल सम्पत्तियों का स्व-लेखा उत्पादन शामिल है।

7. मानव पूँजी निर्माण से क्या आशय है? इसने भारत की कैसे सहायता की है?

उत्तर जब मानव संसाधन को उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य द्वारा विकसित किया जाता है, तब उसे मानव पूँजी का निर्माण कहा जाता है। इसने भारत में निम्न सहायता की है—

(i) इसके द्वारा भारत में कुशल श्रम शक्ति में वृद्धि हुई है।

(ii) इसके द्वारा देश की उत्पादन शक्ति बढ़ती है।

(iii) यह लोगों की उत्पादकता और कार्यकुशलता का स्तर बढ़ाता है।

8. मानव संसाधन, उत्पादन के अन्य घटकों से अलग कैसे है? कोई तीन कारण दीजिए।

उत्तर मानव संसाधन का उत्पादन के अन्य घटकों से अलग होने के निम्न कारण हैं—

(i) मानव संसाधन उत्पादन का जीवित घटक है।

(ii) मानव संसाधन काम करने के साथ-साथ अन्य घटकों को भी सक्रिय बनाता है।

(iii) यह श्रम, प्रबन्धन तथा उद्यमी के तौर पर काम करता है।

9. किस प्रकार मानव पूँजी में निवेश भौतिक पूँजी में निवेश के समान है? कोई तीन समानताएँ बताइए।

उत्तर मानव पूँजी में निवेश (शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सेवा के द्वारा) भौतिक पूँजी की ही भाँति देश की उत्पादक शक्ति में वृद्धि करता है। शिक्षित लोगों की उच्च उत्पादकता के कारण होने वाली अधिक आय और साथ ही अधिक स्वस्थ लोगों की उच्च उत्पादकता के रूप में इसे देखा जाता है। उच्च आय से केवल शिक्षित लोगों को ही लाभ नहीं होता, बल्कि इसका लाभ समाज को भी अप्रत्यक्ष तरीकों से होता है। अत: मानव पूँजी में निवेश द्वारा इसे उत्पादक परिसम्पत्ति में बदला जा सकता है; जैसे—

(i) सबके लिए शिक्षा और स्वास्थ्य।

(ii) आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग में औद्योगिक और कृषि श्रमिकों को प्रशिक्षण।

(iii) उपयोगी वैज्ञानिक अनुसंधान आदि पर संसाधनों का व्यय।

10. शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा पर भारी निवेश क्यों करते हैं? तीन कारण बताइए।

उत्तर शिक्षित माँ-बाप अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक निवेश करते हैं, क्योंकि—

(i) उन्होंने स्वयं भी शिक्षा के महत्त्व को अनुभव किया होता है।

(ii) शिक्षा द्वारा ही नई आकांक्षाएँ एवं नए जीवन मूल्य विकसित किए जाते हैं।

(iii) अनपढ़ माता-पिता की तुलना में उनकी आय अधिक होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मानव पूँजी निर्माण से आप क्या समझते हैं तथा किस प्रकार मानव पूँजी में निवेश भौतिक पूँजी में निवेश के समान है?

उत्तर जनसंख्या किसी भी देश के लिए दायित्व से अधिक परिसम्पत्ति होती है। जब शिक्षा, प्रशिक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश किया जाता है, तब जनसंख्या मानव पूँजी में परिवर्तित हो जाती है। मानव पूँजी के द्वारा ही भूमि और पूँजी को उपयोगी बनाया जाता है। इसलिए मानव पूँजी अन्य सभी पूँजियों से श्रेष्ठ है। जब मानव संसाधन को उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य द्वारा विकसित किया जाता है, तब उसे मानव पूँजी निर्माण कहते है।

मानव पूँजी में निवेश—मानव पूँजी में निवेश (शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सेवा के द्वारा) भौतिक पूँजी की ही भाँति देश की उत्पादक शक्ति में वृद्धि करता है। शिक्षित लोगों की उच्च उत्पादकता के कारण होने वाली अधिक आय और साथ ही अधिक स्वस्थ लोगों की उच्च उत्पादकता के रूप में इसे देखा जाता है। उच्च आय से केवल शिक्षित लोगों को ही लाभ नहीं होता, बल्कि इसका लाभ समाज को भी अप्रत्यक्ष से होता है।

वास्तविक रूप में मानव पूँजी अन्य संसाधनों; जैसे-भूमि और भौतिक पूँजी से श्रेष्ठ है, क्योंकि मानव संसाधन द्वारा भूमि और पूँजी का उपयोग किया जा सकता है। ये स्वयं उपयोग नहीं हो सकते हैं। भारत जैसे विशाल देश में जनसंख्या को परिसम्पत्ति की अपेक्षा एक दायित्व माना जाता है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि विशाल जनसंख्या देश के लिए दायित्व ही हो। अत: मानव पूँजी में निवेश द्वारा इसे उत्पादक परिसम्पत्ति में बदला जा सकता है; जैसे—

(i) सबके लिए शिक्षा और स्वास्थ्य।

(ii) आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग में औद्योगिक और कृषि श्रमिकों को प्रशिक्षण।

(iii) उपयोगी वैज्ञानिक अनुसन्धान आदि पर संसाधनों का व्यय

2. बेरोजगारी की प्रमुख हानियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर बेरोजगारी के दोष निम्न हैं—

(i) बेरोजगारी से जनशक्ति संसाधन व्यर्थ होते हैं।

(ii) जो लोग अर्थव्यवस्था के लिए परिसम्पत्ति हैं, वे बेरोजगारी के कारण अर्थव्यवस्था पर बोझ बन जाते हैं।

(iii) बेरोजगारी में वृद्धि मन्दीग्रस्त अर्थव्यवस्था का सूचक है। यह संसाधनों की बर्बादी भी करती है। सांख्यिकीय रूप से भारत में बेरोजगारी की दर निम्न है—

(a) बड़ी संख्या में निम्न आय और निम्न उत्पादकता वाले लोगों की गिनती नियोजित लोगों में की जाती है।

(b) वे पूरे वर्ष काम करते प्रतीत होते हैं, लेकिन उनकी क्षमता और आय के हिसाब से यह उनके लिए पर्याप्त नहीं है।

3. आर्थिक क्रियाकलाप किसे कहते हैं? इनको कितने क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर जिन क्रियाकलापों द्वारा राष्ट्रीय आय में मूल्यवर्द्धन होता है।, वे क्रियाएँ आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। आर्थिक क्रियाकलापों को तीन प्रमुख क्षेत्रको में वर्गीकृत किया गया है, जो निम्न प्रकार हैं—

(i) प्राथमिक क्षेत्रक—वे क्रियाएँ, जो पर्यावरण एवं प्रकृति द्वारा प्राप्त संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर होती हैं, उन्हें प्राथमिक क्षेत्रक कहते हैं। इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कृषि, वानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन, मुर्गीपालन तथा खनन एवं उत्खनन शामिल हैं।

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक—प्राथमिक क्षेत्रकों से प्राप्त उत्पादों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण एवं उपयोगी उत्पादों की रचना एवं विनिर्माण की क्रिया को ही द्वितीयक क्षेत्रक कहते हैं। इस क्षेत्रक के अन्तर्गत विर्निर्माण शामिल है।

(iii) तृतीयक क्षेत्रक—इस क्षेत्रक के अन्तर्गत व्यापार, परिवहन, संचार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन सेवाएँ शामिल हैं। इस क्षेत्रक के अन्तर्गत क्रियाकलाप के फलस्वरूप वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है।

आर्थिक क्रियाओं के दो भाग होते हैं—

(i) **बाजार क्रियाएँ** इन क्रियाओं में वेतन या लाभ के उद्देश्य से की गई क्रियाओं के लिए पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। इनके

अन्तर्गत सरकारी सेवा सहित वस्तु या सेवाओं का उत्पादन शामिल है।

(ii) **गैर-बाजार क्रियाएँ**—इन क्रियाओं से अभिप्राय स्व-उपभोग के लिए उत्पादन से है। इनके अन्तर्गत प्राथमिक उत्पादों का उपभोग तथा अचल सम्पत्तियों का स्व-लेखा उत्पादन शामिल है।

4. जनसंख्या की गुणवत्ता ही देश की संवृद्धि दर निर्धारित करती है। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर जनसंख्या की गुणवत्ता साक्षरता दर, जीवन प्रत्याशा से निरूपित व्यक्तियों के स्वास्थ्य और देश के लोगों द्वारा प्राप्त कौशल निर्माण पर निर्भर करती है। जनसंख्या की गुणवत्ता ही देश की संवृद्धि दर निर्धारित करती है। अत: साक्षर और स्वस्थ जनसंख्या परिसम्पत्तियाँ होती हैं। जैसे-

(i) **शिक्षा**—शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण आगत है, जिसके द्वारा नई आकांक्षाएँ एवं जीवन के मूल्य विकसित किए जाते हैं। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीय आय और सांस्कृतिक समृद्धि में वृद्धि सम्भव हुई है।

भारत में प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत गुणवत्ता प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। इसके अन्तर्गत लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। नवोदय विद्यालय जैसे प्रगति निर्धारक विद्यालयों की स्थापना प्रत्येक जिले में की गई है। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता दर 16% अधिक है। इसी क्रम में केरल के कुछ जिलों में साक्षरता दर 96% है, जबकि बिहार में 62% ही है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा से जनसंख्या की गुणवत्ता निश्चित होती है।

(ii) **स्वास्थ्य**—जब किसी देश में व्यक्ति स्वस्थ मुद्दों के प्रति जागरूक रहते हैं एवं सरकार भी स्वास्थ्य कार्यक्रमों का उचित प्रकार से संचालन करती है, तो उस देश का विकास भी स्वस्थ तरीके से होता है, जिससे जनसंख्या की अर्थव्यवस्था में भागीदारी बड़े स्तर पर होती है और अर्थव्यवस्था का सर्वांगीण विकास सम्भव हो पाता है।

❑❑❑

3

निर्धनता : एक चुनौती

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निर्धनता को किस प्रकार दूर किया जा सकता है? कोई दो उपाय बताइए।

उत्तर निर्धनता एक ऐसी स्थिति है, जिसमें किसी मनुष्य को अपना जीवन-यापन करने के लिए मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी करने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसे दूर करने के उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) ग्रामीण क्षेत्रों में लघु और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना तथा बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियन्त्रण करना।

(ii) हरित क्रान्ति के लिए किसानों को प्रोत्साहन देना।

(iii) गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को ठीक तरीके से लागू करना।

2. निर्धनता रेखा का आकलन करने वाली संस्थाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर निर्धनता रेखा का आकलन राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन द्वारा किया जाता है। इसकी स्थापना वर्ष 1950 में सांख्यिकी और भारत सरकार मन्त्रालय के अन्तर्गत की गई। यह भारत का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण करने वाला सबसे बड़ा संगठन है।

प्रतिदर्श सर्वेक्षण के माध्यम से निर्धनता रेखा का आकलन सामान्यत: प्रत्येक पाँच वर्ष में किया जाता है। विकासशील देशों के बीच तुलना करने के लिए विश्व बैंक जैसे अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन निर्धनता रेखा के लिए एकसमान मानक का प्रयोग करते हैं; जैसे—1 डॉलर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन के समतुल्य न्यूनतम उपलब्धता के आधार पर।

3. सामाजिक वैज्ञानिकों की दृष्टि में निर्धनता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा निर्धनता के लिए प्रयोग किए जाने वाले सूचक आय और उपभोग से सम्बन्धित हैं; जैसे—

(i) निर्धनता के कारण निरक्षरता का निम्न स्तर।

(ii) कुपोषण के कारण रोग प्रतिरोधी क्षमता की कमी।

(iii) स्वास्थ्य सेवाओं की कमी।

(iv) रोजगार के अवसरों की कमी।

(v) सुरक्षित एवं स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता तक पहुँच की कमी।

4. गरीबी को दूर करने के लिए सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्यक्रम बताइए।

उत्तर गरीबी को दूर करने के लिए सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

(i) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार आश्वासन अधिनियम

(ii) राष्ट्रीय कार्य के बदले भोजन योजना

(iii) प्रधानमन्त्री रोजगार योजना

(iv) ग्रामीण रोजगार विकास योजना

(v) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना

(vi) प्रधानमन्त्री ग्रामोद्योग योजना

(vii) अन्त्योदय अन्न योजना

5. निर्धनता के असुरक्षित समूह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर भारत में निर्धनता रेखा के नीचे के लोगों का अनुपात सामाजिक समूहों और आर्थिक समूहों में एकसमान नहीं है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के परिवार, सामाजिक समूह निर्धनता के प्रति सर्वाधिक असुरक्षित हैं। यही ग्रामीण कृषि श्रमिक परिवार और अनियमित मजदूर परिवार आर्थिक समूहों में, सर्वाधिक आर्थिक असुरक्षित समूह हैं। 1990 के दशक के दौरान अनुसूचित जनजाति परिवारों को छोड़कर अन्य सभी तीनों समूहों (अनुसूचित जाति, ग्रामीण कृषि श्रमिक और शहरी अनियमित मजदूर परिवार) में निर्धनता में कमी आई है। इन सामाजिक समूहों के अतिरिक्त परिवारों में भी आय की असमानता है।

6. भारत में निर्धनता की भावी चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर यद्यपि भारत में निर्धनता में निश्चित रूप से गिरावट आई है, किन्तु प्रगति के बाद भी निर्धनता उन्मूलन भारत की सबसे बाध्यकारी चुनौती है। ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों और विभिन्न राज्यों में निर्धनता में व्यापक असमानता है।

आशा की जा रही है कि निर्धनता उन्मूलन में अगले दस से पन्द्रह वर्षों में अधिक प्रगति होगी। निर्धनता उन्मूलन एक गतिशील लक्ष्य है। आशा है कि हम अगले दशक के अन्त तक सभी लोगों को, केवल आय के सन्दर्भ में, न्यूनतम आवश्यक आय उपलब्ध करा सकेंगे।

7. सरकार की निर्धनता निरोधी रणनीतियों को बताइए।

उत्तर भारत की विकास रणनीति का एक प्रमुख उद्देश्य निर्धनता उन्मूलन रहा है। सरकार की निर्धनता निरोधी रणनीति दो कारकों पर निर्भर है—

(i) आर्थिक संवृद्धि—यह किसी देश की आर्थिक प्रगति का मात्रात्मक गुण होता है। 1980 के दशक से भारत की आर्थिक वृद्धि दर विश्व में सबसे अधिक रही। भारत में निर्धनता कम करने में विकास की इस उच्च दर ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आर्थिक संवृद्धि मानव विकास में निवेश के आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराती है; जैसे—शिक्षा में अधिक आर्थिक लाभ पाने की उम्मीद में लोगों को अपने बच्चों को लड़कियों सहित स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करती है, लेकिन इस आर्थिक विकास से उत्पन्न अवसरों से निर्धन लोग प्रत्यक्ष लाभ नहीं उठा सकें।

(ii) **लक्षित निर्धनता निरोधी कार्यक्रम**—इस कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 1990 में की गई थी। इस कार्यक्रम की स्थापना निर्धनता पर अंकुश लगाने जैसी परिस्थितियों के लिए की गई थी अर्थात् वैसा कार्यक्रम जो निर्धनता के उन्मूलन में सहायक हो। भारत सरकार ने इस प्रकार के अनेक कार्यक्रमों की स्थापना की है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—प्रधानमन्त्री रोजगार योजना (1993), ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (1995), स्वर्ण जयन्ती ग्रामीण योजना (1999), प्रधानमन्त्री ग्राम उदय योजना (2000), राष्ट्रीय काम के बदले अनाज कार्यक्रम (2004), महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम (2005)।

8. भारत में न्यूनतम मानवीय आवश्यकताओं में किस-किस को शामिल किया गया है? इन आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर मनुष्य पर क्या दुष्प्रभाव पड़ते हैं?

उत्तर न्यूनतम मानवीय आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं को शामिल किया गया है। यह मूलभूत मानवीय आवश्यकता होती है, इसमें व्यक्ति के मौद्रिक व्यय को भी शामिल करके देखा जाता है। इन न्यूनतम मानवीय आवश्यकताओं के पूरा न होने पर निम्न दुष्प्रभाव होते हैं—

(i) स्वास्थ्य तथा कार्यकुशलता में कमी आती है।

(ii) उत्पादन में वृद्धि करना तथा भविष्य में निर्धनता से छुटकारा पाना कठिन हो जाता है।

9. क्या आप समझते हैं कि निर्धनता आकलन का गुणात्मक तरीका सही है?

उत्तर भारतवर्ष में निर्धनता आकलन का गुणात्मक तरीका सही दिखाई नहीं देता। यह सिर्फ मात्रात्मक आकलन है। इसमें निर्धनता मापन के गुणात्मक पक्षों को शामिल नहीं किया जाता । यह जीवन के न्यूनतम निर्वाह स्तर की व्याख्या करता है, न कि उचित निर्वाह स्तर की।

कुछ अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि मानव निर्धनता आकलन के क्षेत्र को बढ़ा देना चाहिए। निर्धनता निर्धारण के समय शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी, आत्मविश्वास, समानता आदि को भी ध्यान में रखना चाहिए।

10. किन्हीं दो कारकों का उल्लेख कीजिए। जिन पर सरकार की वर्तमान निर्धनता रणनीति आधारित है।

उत्तर सरकार की वर्तमान निर्धनता-विरोधी रणनीति दो कारकों पर आधारित है—

(i) आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहन

(ii) लक्षित निर्धनता-विरोधी कार्यक्रम

भारत में अधिकतर भागों में निर्धनता-विरोधी कार्यक्रम सफल नहीं हुए, क्योंकि

(i) उचित कार्यान्वयन और सही लक्ष्य निश्चित करने की कमी।

(ii) कुछ योजनाएँ परस्पर-व्यापी हैं।

(iii) अच्छे व्यवहार के पश्चात् इन योजनाओं का लाभ उनके पात्र, निर्धनों को पूरी तरह नहीं मिल पाया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में गरीबी के मुख्य कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर ग्रामीण गरीबी के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(i) **भूमिहीनता**—ग्रामीण गरीबों के पास अपनी भूमि नहीं होती। यदि कोई भूमि का हिस्सा होता है, तो यह बहुत छोटा हिस्सा होता है, जो उसके परिवार की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं कर सकता।

(ii) **कृषि श्रमिक**—अपर्याप्त एवं भूमि के हिस्से का नहीं होना, ग्रामीण व्यक्ति को कार्य से वंचित रखता है। इस प्रकार उन्हें कृषि श्रमिक के रूप में साहूकारों के पास कार्य करना पड़ता है और वे स्वयं को शोषण के लिए उन्हें समर्पित कर देते हैं। अधिकांश कार्य मौसमी एवं अस्थायी होते हैं एवं परेशानियाँ जारी रहती हैं।

(iii) **कच्चा घर**—ग्रामीण मजदूरों का घर कच्चा होता है, जहाँ दीवारें मिट्टी की एवं छत सामान्य तौर पर घास-फूस एवं लकड़ियों से बनी होती हैं। ये घर तेज हवा, वर्षा एवं ठण्ड का सामना करने में असमर्थ होते हैं।

(iv) **गम्भीर ऋणग्रस्तता**—एक ग्रामीण गरीब के पास सीमित साधन होते हैं। उसकी आय उसके परिवार की आधारभूत आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने में अपर्याप्त होती है। इस प्रकार वह ऊँची ब्याज दर पर ऋण प्राप्त करने के लिए विवश होता है।

(v) **बाल श्रम**—बच्चों को अपने माता-पिता की कम आय में सहायता करने की आवश्यकता होती है, इसलिए उन्हें ग्रामीण फैक्ट्रियों या ढाबों में श्रमिक के रूप में कार्य करना पड़ता है।

2. भारत में शहरी गरीबी के मुख्य कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर भारत में शहरी गरीबी के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(i) **झुग्गी-झोपड़ी के निवासी**—शहरी गरीब आवासीय क्षेत्रों में घर का प्रबन्ध नहीं कर सकते, इसलिए वे अपने घर शहर के किनारे एवं झुग्गी-झोपड़ी के क्षेत्रों में बनाते हैं, जो गन्दे, अस्वच्छ कीचड़ एवं कूड़ा-करकट वाले होते हैं और मानवीय निवास के लिए अनुपयुक्त होते हैं।

(ii) **निरक्षरत**—गरीबी एवं निरक्षरता दोनों एक -दूसरे पर निर्भर हैं। गरीबी, निरक्षरता को बढ़ाती है और निरक्षरता गरीबी को बढ़ाती है।

सामान्य तौर पर गरीब बच्चों को अपने माता- पिता की कम आय में सहायता के लिए कार्य करना पड़ता है। स्कूल जाने के लिए उनके पास समय एवं पैसा नहीं होता।

(iii) **अनिरन्तर रोजगार**—शहरी गरीबों के पास सामान्य तौर पर निरन्तर कार्य नहीं होता। कुछ समय वे कार्यरत् होते हैं और वर्ष के कई महीने वे बेरोजगार होते हैं। वे मौसमी एवं वार्षिक बेरोजगारी के शिकार होते हैं, जो उनके जीवन को कठिन बनाती है।

(iv) **बुरा स्वास्थ्य**—गरीबी, भुखमरी, ऋणग्रस्तता एवं मानसिक परेशानी को पैदा करती है, जो बुरे स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है और जो कार्य की हानि करके गरीबी में दोबारा योगदान देती है।

(v) **अस्वच्छता एवं बिजली की अनुपलब्धता**—सफाई सुविधाओं का झुग्गी-झोपड़ी के क्षेत्रों में अभाव रहता। सामान्य तौर पर

बिजली उपलब्ध नहीं होती है। अस्वच्छता गम्भीर बीमारियों एवं बुरे स्वास्थ्य का कारण होती है।

3. आर्थिक विकास की दर में वृद्धि के क्या उपाय हैं?

उत्तर आर्थिक विकास की दर में वृद्धि गरीबी को दूर करने के लिए सबसे प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं—

(i) गरीब लोगों के लिए पूर्ण एवं अधिक उत्पादित रोजगार।

(ii) गरीबों को न्यूनतम एवं उपयुक्त मजदूरी।

(iii) समाज के गरीब वर्गों के लिए स्वयं अवसरों में वृद्धि करना।

(iv) गरीब श्रमिकों की श्रम उत्पादकता में वृद्धि के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य की व्यवस्था करना।

(v) देश के पिछड़े हुए क्षेत्रों में कुटीर एवं लघु उद्योगों का निर्माण करना।

(vi) देश के प्राकृतिक, मानवीय एवं पूँजी संसाधनों का कुशलतम उपयोग करना।

(vii) सार्वजनिक अनुत्पादित व्यय के स्थान पर सार्वजनिक उत्पादिक व्यय को प्राथमिकता देना।

4. क्या स्त्रियों को अच्छी शिक्षा देकर जनसंख्या की वृद्धि दर को कम किया जा सकता है? यह कैसे सम्भव है?

उत्तर हाँ, विकसित देशों में निरक्षरता को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। इससे न केवल स्त्री-पुरुष के अनुपात में सन्तुलन पैदा हुआ, अपितु इन देशों में जनसंख्या वृद्धि दर एक प्रतिशत से भी कम है। स्त्रियों को अच्छी शिक्षा प्रदान कर जनसंख्या की वृद्धि को आसानी से रोका जा सकता है—

(i) अच्छी शिक्षा पाने के लिए एक लम्बी अवधि की आवश्यकता पड़ती है। अत: शिक्षित लड़कियों की अधिक उम्र में शादी होती है। तब तक परिवार-दायित्व का ज्ञान आसानी से हो जाता है।

(ii) शिक्षित स्त्रियों को रोजगार मिल जाता है। रोजगार प्राप्त महिलाएँ बच्चे की अधिक अच्छी देख-रेख करने में अपने को असमर्थ पाती हैं।

(iii) गर्भधारण से लेकर प्रजनन प्रक्रिया से जुड़ी अनेकानेक समस्याओं का ज्ञान होने के कारण शिक्षित महिलाओं की जीवन प्रत्याशा अधिक होती है। वे अपने और अपने बच्चे के स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग होती हैं।

❑❑❑

4

भारत में खाद्य सुरक्षा

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. खाद्य सुरक्षा के कितने आयाम होते है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर खाद्य सुरक्षा के तीन आयाम हैं—

(i) खाद्य उपलब्धता—इसका तात्पर्य देश में खाद्य उत्पादन, खाद्य आयात और सरकारी अनाज भंडारों में पूर्व वर्षों के स्टॉक से है।

(ii) खाद्य की पहुँच—इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को खाद्य उपलब्ध हो।

(iii) खाद्य की सामर्थ्य—इसका तात्पर्य है कि लोगों के पास पौष्टिक भोजन प्राप्त करने के लिए धन उपलब्ध हो।

उपरोक्त आयामों ने निष्कर्ष निकाला है कि यदि किसी देश में खाद्य सुनिश्चित किया जाता है, तो

- सभी लोगों के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध हो।
- सभी व्यक्तियों के पास स्वीकार्य गुणवत्ता के खाद्य पदार्थ खरीदने की क्षमता हो।
- खाद्य की उपलब्धता में कोई बाधा न हो।

2. खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रत्येक समय भोजन सुनिश्चित करने के लिए देश में खाद्य सुरक्षा की जरूरत है।

खाद्य सुरक्षा पर प्राकृतिक आपदा का प्रभाव

- समाज का अधिक गरीब वर्ग तो प्रत्येक समय खाद्य असुरक्षा से ग्रस्त हो सकता है, परंतु जब देश भूकंप, सूखा, बाढ़, सुनामी एवं फसलों के खराब होने से उत्पन्न हुए अकाल आदि राष्ट्रीय आपदाओं से गुजर रहा हो, तो निर्धन रेखा से ऊपर के लोग भी खाद्य असुरक्षा से ग्रस्त हो सकते हैं।
- यदि यह आपदा अधिक विस्तृत क्षेत्र में आती है या अधिक लंबे समय तक बनी रहती है, तो भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। व्यापक भुखमरी से अकाल की स्थिति बन सकती है।

3. खाद्य सुरक्षा के लिए भारत में हुए महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1970 के दशक के मध्य में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन ने गरीबी के स्तर की उच्च घटनाओं की सूचना दी। इस वजह से तीन महत्त्वपूर्ण खाद्य हस्तक्षेप कार्यक्रम पेश किए गए, जो निम्न हैं—

(i) खाद्यान्नों के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली
(ii) एकीकृत बाल विकास सेवाएँ
(iii) फूड-फॉर वर्क प्रोग्राम

4. सार्वजनिक वितरण प्रणाली को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सरकार द्वारा नियंत्रित राशन की दुकानों के माध्यम से भारतीय खाद्य निगम द्वारा खरीदा गया भोजन समाज के गरीब वर्गों में वितरित किया जाता है। इसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली कहा जाता है। राशन की दुकानें अब गाँवों, कस्बों और शहरों सभी जगह मौजूद हैं। पूरे देश में लगभग 5.5 लाख राशन की दुकानें हैं। राशन की दुकानों को उचित मूल्य की दुकानों के रूप में भी जाना जाता है।

वे खाना पकाने के लिए अनाज, चीनी, केरोसीन तेल का भंडार रखते हैं। ये सभी सामान बाजार मूल्य से कम कीमत पर लोगों को दिए जाते हैं। राशन कार्डधारी कोई भी परिवार पास की राशन की दुकान से प्रत्येक महीने इन वस्तुओं (जैसे—35 किग्रा अनाज, 5 ली केरोसिन, 5 किग्रा चीनी आदि) को खरीद सकता है, राशन कार्ड तीन प्रकार के होते हैं

(i) गरीबों में भी गरीबों के लिए अंत्योदय कार्ड
(ii) गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों के लिए बी पी एल कार्ड
(iii) अन्य सभी के लिए ए पी एल कार्ड

5. खाद्य सुरक्षा में सहकारिता की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत की खाद्य सुरक्षा में सहकारी समितियों की भूमिका विशेष रूप से देश के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों में महत्त्वपूर्ण है। गरीब लोगों को कम कीमत पर खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए सहकारी समितियों ने उचित मूल्य की दुकानें स्थापित की हैं।

उदाहरण के लिए; तमिलनाडु की लगभग 94% उचित मूल्य की दुकानों को सहकारी समितियों द्वारा चलाया जा रहा है। भारत की खाद्य सुरक्षा में सहकारी समितियों का योगदान के कुछ निम्नलिखित हैं दिल्ली में, मदर डेयरी दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित दर पर उपभोक्ताओं को दूध और सब्जियों का वितरण कर रही है। अमूल गुजरात में दूध और दूध उत्पादों में सहकारी समितियों की एक और सफलता की कहानी है। अमूल ने देश में श्वेत क्रांति ला दी है।

6. 'खाद्य सुरक्षा मात्र दो जून की रोटी पाना नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक है' कथन के अनुसार खाद्य सुरक्षा के आयामों की चर्चा कीजिए।

उत्तर 'खाद्य सुरक्षा मात्र दो जून की रोटी पाना नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक है।' कथन के प्ररिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित आयाम हैं

(i) खाद्य उपलब्धता का तात्पर्य देश में खाद्य उत्पादन, खाद्य आयात और सरकारी अनाज भंडारों में संचित पिछले वर्षों के स्टॉक से है।
(ii) पहुँच का अर्थ है कि खाद्य प्रत्येक व्यक्ति को मिलता रहे।
(iii) सामर्थ्य का अर्थ है कि लोगों के पास अपनी भोजन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त और पौष्टिक भोजन खरीदने के लिए धन उपलब्ध है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. खाद्य सुरक्षा का महत्त्वपूर्ण पहलू कौन-सा है? इसके कितने आयाम होते है संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर खाद्य असुरक्षा भी भूख का महत्त्वपूर्ण पहलू है। खाद्य की दृष्टि से सुरक्षित होने से वर्तमान में भुखमरी समाप्त हो जाती है और भविष्य में

भुखमरी का खतरा कम हो जाता है। भुखमरी के दो आयाम दीर्घकालिक और मौसमी हैं।

दीर्घकालिक

- दीर्घकालिक भुखमरी मात्रा या गुणवत्ता के आधार पर अपर्याप्त आहार ग्रहण करने के कारण होती है। गरीब लोग अपनी अत्यंत निम्न आय और जीवित रहने के लिए खाद्य पदार्थ खरीदने में अक्षमता के कारण दीर्घकालिक भुखमरी से ग्रस्त होते हैं।
- वर्ष 1999-2000 में ग्रामीण क्षेत्रों में 2.3% घरो में गंभीर भूख कम हो गई है। शहरी क्षेत्रों में इसी अवधि में यह 0.8% से 0.3% कम हो गयी ।

मौसमी

- मौसमी भुखमरी फसल उपजाने और काटने के चक्र से संबद्ध है। यह ग्रामीण क्षेत्रों की कृषि क्रियाओं की मौसमी प्रकृति के कारण तथा नगरीय क्षेत्रों में अनियमित श्रम के कारण होती है; जैसे—बरसात के मौसम में अनियत निर्माण श्रमिक को कम काम रहता है। इस तरह की भुखमरी तब होती है, जब कोई व्यक्ति पूरे वर्ष काम पाने में अक्षम रहता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में मौसमी भुखमरी का सामना करने वाले परिवारों का अनुपात वर्ष 1983 में 16.2% से घटकर वर्ष 1999-2000 में 2.6% हो गया। संदर्भ अवधि के दौरान शहरी क्षेत्रों में वर्ष 1983 में 5.6% से घटकर वर्ष 1999-2000 में 0.6% हो गया है।

2. बफर स्टॉक एवं राशन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **बफर स्टॉक**—यह सरकार द्वारा खरीदे गए अनाज (गेहूँ और चावल) का भंडार है। भारत के खाद्य निगम के माध्यम से सरकार उन राज्यों के किसानों से गेहूँ और चावल की खरीद करती है, जिनमें अधिशेष उत्पादन होता है। किसानों को उनकी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य का भुगतान किया जाता है।

इन फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से बुआई के मौसम से पहले सरकार MSP की घोषणा करती है। खरीदा हुआ खाद्यान्न भंडारगृह में बफर स्टॉक के रूप में रखा जाता है। इस स्टॉक का देश के उन क्षेत्रों में वितरण किया जाता है, जहाँ उत्पादन कम होता है तथा यह सब्सिडी वाले दामों पर समाज के गरीब वर्गों को प्रदान किया जाता है अर्थात् बाजार मूल्य से कम कीमत पर वितरित किया जाता है। बफर स्टॉक एक आपदा या प्रतिकूल मौसम की स्थिति में भोजन की कमी की समस्या को हल करने में मदद करता है

राशन यह संसाधनों और दुर्लभ वस्तुओं या सेवाओं के सरकारी नियंत्रित वितरण को दिया गया एक शब्द है यह प्रतिबंधित है कि कितने लोगों को किसी विशेष अवधि के दौरान किसी विशेष समय में खरीदने या उपभोग करने की अनुमति है।

1940 के दशक में बंगाल अकाल की पृष्ठभूमि के खिलाफ भारत में राशन की शुरुआत की गई थी। बाद में यह हरित क्रांति से पहले 1960 के दशक के दौरान तीव्र भोजन की कमी को ध्यान में रखते हुए पुनर्जीवित किया गया था।

3. खाद्य असुरक्षा से सर्वाधिक प्रभावी वर्ग कौन-से हैं? खाद्य असुरक्षा को इंगित करने वाले प्रमुख पहलू कौन-से हैं?

उत्तर भारत में लोगों का एक बड़ा वर्ग खाद्य एवं पोषण की दृष्टि से असुरक्षित है, परंतु इससे सर्वाधिक प्रभावित वर्गों में निम्नलिखित शामिल हैं भूमिहीन, पारंपरिक दस्तकार, पांरपरिक सेवाएँ प्रदान करने वाले लोग, अपना छोटा-मोटा काम करने वाले कामगार और निराश्रित तथा भिखारी । शहरी क्षेत्रों में खाद्य की दृष्टि से असुरक्षित वे परिवार हैं जिनके कामकाजी सदस्य प्राय: कम वेतन वाले व्यवसायों और अनियत श्रम बाजारों में काम करते हैं।

खाद्य असुरक्षा को इंगित करने वाले प्रमुख पहलू में अहम हैं

(i) खाद्य पदार्थ खरीदने में असमर्थता—खाद्य पदार्थ खरीदने में असमर्थता को सामाजिक संरचना अत्यधिक प्रभावित करती है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जातियों के कुछ वर्गों की या तो भूमि की उत्पादकता बहुत कम होती है, वे खाद्य की दृष्टि से शीघ्र असुरक्षित हो जाते हैं। वे लोग भी खाद्य की दृष्टि से सर्वाधिक असुरक्षित हो जाते हैं, जो प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित है और जिन्हें काम की तलाश में दूसरी जगह जाना पड़ता है। अत: यह खाद्य पदार्थ खरीदने में पूर्णत: कभी समर्थ नहीं होते हैं।

(ii) महिलाओं की कुपोषण स्थिति—खाद्य असुरक्षा में कुपोषित महिलाएँ भी योगदान देती है। एक तो वह स्वयं कुपोषित होती हैं और कुपोषित महिलाओं से जन्में बच्चे भी कुपोषित ही पैदा होते हैं। परिणामस्वरूप मृत्यु दर में वृद्धि होती है। इसका सबसे बड़ा कारण गरीबी है।

(iii) भुखमरी—भुखमरी खाद्य की दृष्टि से असुरक्षा को इंगित करने वाला प्रमुख पहलू है। भुखमरी गरीबी की एक अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, यह गरीबी लाती है, परंतु खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से सुरक्षा बनी रहती है, तो भुखमरी समाप्त हो जाती है। गरीब लोग अपनी अत्यंत निम्न आय और जीवित रहने के लिए खाद्य पदार्थ खरीदने में अक्षमता के कारण दीर्घकालिक भुखमरी से ग्रस्त होते हैं।

4. सरकार बफर स्टॉक क्यों बनाती है? बफर स्टॉक में किन दो फसलों का भंडारण किया जाता है?

उत्तर सरकार बफर स्टॉक के जरिए अनाजों का भंडारण करती है। बफर स्टॉक में गेहूँ एवं चावल का मुख्य रूप से भंडारण किया जाता है। सरकार किसानों से न्यूनतम समर्थित कीमत पर अनाज खरीदती है। इन फसलों के उत्पादक को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से बुआई के मौसम से पूर्व ही सरकार न्यूनतम समर्थित कीमत की घोषणा करती है। इन खरीदे हुए अनाज को भंडारों में रख दिया जाता है।

सूखे या अकाल की स्थिति में अनाज की कमी की समस्या हल करने में बफर स्टॉक काफी मदद करता है। सरकार द्वारा प्रारंभ की गई विभिन्न योजनाओं के अधीन खाद्यान्नों के वितरण के द्वारा स्थिति में सुधार हुआ। भारत में बफर स्टॉक की जिम्मेदारी भारतीय खाद्य निगम को प्रदान की गई है। बफर स्टॉक में रखे अनाजों का उपयोग सिर्फ प्रतिकूल परिस्थितियों में किया जाता है, बल्कि पी डी एस डीलरों को जो अनाज दिया जाता है, उसे भी बफर स्टॉक में रखे अनाजों से ही दिया जाता है।

चूँकि बफर स्टॉक में रखे अनाज का उपयोग भविष्य के लिए होता है, इसलिए इनका संरक्षण उपयुक्त तरीके से होना आवश्यक है। भारत के कई राज्यों में बफर स्टॉक का पूर्णत: अभाव है, क्योंकि वहाँ समुचित व्यवस्था नहीं है, इसलिए करोड़ों टन गेहूँ और चावल प्रतिवर्ष नष्ट हो जाते हैं। बारिश के दिनों में लाखों टन अनाज सड़ जाते हैं। खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से बफर स्टॉक की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

❑❑❑